FAIZAN E MADINA

माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

- ऊपर नहीं नीचे देखो 6
- रौशन तालीमात लाने वाले रसूले मुकर्रम 14
- ग़ौसे आज़म और तफ़्सीरे क़ुरआने करीम 38
- बच्चों को दीन की जानिब कैसे माइल करें ? 49
- बेटियों को सालिहात की सीरत पढ़ाएं 53

दाइमी बीमारी का रूहानी इलाज

یَامُعِیْدُ

दाइमी मरीज़ हर वक़्त पढ़ता रहे, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त सेहत इनायत फ़रमाएगा।

(बीमार आबिद, स. 39)

इज़्ज़त और सर फ़राज़ी पाने का वज़ीफ़ा

یَااَحَدُ

जो कोई 9 बार पढ़ कर हाकिम (या अफ़्सर) के आगे जाएगा, اِنْ شَآءَاللّٰہ اَلْکَرِیْم इज़्ज़त व सर फ़राज़ी पाएगा। (मदनी पंजसूरह, स. 255)

इयादत करते वक़्त येह दुआ पढ़ें

जब कोई मुसलमान किसी मुसलमान की इयादत को जाए तो 7 बार येह दुआ पढ़े :

اَسْاَلُ اللّٰہَ الْعَظِیْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ اَنْ یَّشْفِیَكَ

(तर्जमा : मैं अ़ज़मत वाले, अ़र्शे अ़ज़ीम के मालिक अल्लाह पाक से तेरे लिए शिफ़ा का सुवाल करता हूं) अगर मौत नहीं आई है तो उसे शिफ़ा हो जाएगी।

(ابوداؤد، 3/251، حدیث:3106)

सर दर्द का रूहानी इलाज

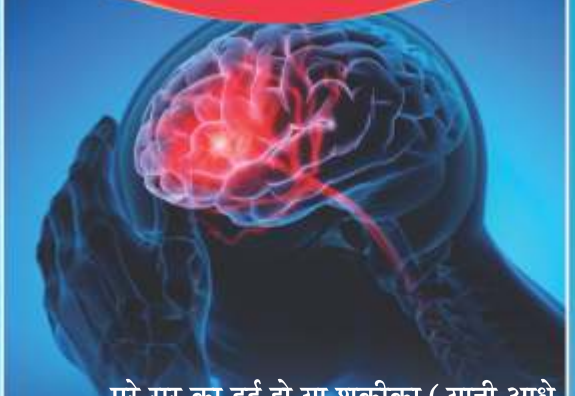

पूरे सर का दर्द हो या शक़ीक़ा (यानी आधे सर का दर्द) बाद नमाज़े अ़सर सूरतुत्तकासुर एक बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कीजिए, اِنْ شَآءَاللّٰہ اَلْکَرِیْم दर्द में इफ़ाक़ा होगा।

(मदनी पंजसूरह, स. 383)

माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

Monthly Magazine

FAIZANE MADINA (HINDI)

ब फ़ैज़ाने नज़र

सिराजुल उम्मह, काशिफ़ुल ग़ुम्मह, इमामे आज़म फ़क़ीहे अफ़ख़म हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

ब फ़ैज़ाने करम

आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर
या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर

(अज़ : अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ)

PRINTER, PUBLISHER, EDITOR AND OWNER

HAMJANI SHABBIRBHAI RAJAKBHAI
BUTVALA'S CHAWL,
NR. CENTRAL WARE HOUSE,
DANILIMDA, AHMEDABAD-380028.
(GUJARAT)

PLACE OF PRINTING

MODERN ART PRINTERS
OPP : PATEL TEA STALL,
DABGARWAD NAKA,
DARIYAPUR, AHMEDABAD-380001.

bookmahnama@gmail.com

क़ुरआनो ह़दीस

- क़ुरआन और दिल 3
- ऊपर नहीं नीचे देखो 6

फ़ैज़ाने सीरत

- आख़िरी नबी صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم का अन्दाज़े अमानतदारी 8

फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत

- फ़ौत शुदगान की रूहों का अपने घरों पर आना मअ़ दीगर सुवालात 10

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

- नमाज़े जनाज़ा में दीवार से देख कर दुआ़ पढ़ना कैसा ? मअ़ दीगर सुवालात 12

मज़ामीन

- रौशन तालीमात लाने वाले रसूले मुकर्रम 14
- काम की बातें 16
- ग़ौसे पाक की नसीह़तें 18
- मेयार 20
- तरबियते औलाद 22
- इस्लाम और अ़द्ल 24
- अफ़्ज़ल सदक़ा 27

ताजिरों के लिए

- अह़कामे तिजारत 30

बुज़ुर्गाने दीन की सीरत

- ह़ज़रते इमरान बिन ह़सीन رضی اللہ تعالٰی عنہما 33
- रसूले करीम से घुट्टी का शरफ़ पाने वाले 35
- ग़ौसे आज़म और तफ़्सीरे क़ुरआने करीम 38
- अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए 40

सेह़त व तन्दुरुस्ती

- रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم की ग़िज़ाएं (ज़ैतून) 42

क़ारिईन के सफ़ह़ात

- नए लिखारी 44

बच्चों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"

- झगड़ालू / ह़ुरूफ़ मिलाइए 47
- ख़ाली मश्कीज़ा दोबारा भर गया 48
- बच्चों को दीन की जानिब कैसे माइल करें ? 49
- दरिया के पार 51

इस्लामी बहनों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"

- बेटियों को सालिह़ात की सीरत पढ़ाएं 53
- इस्लामी बहनों के शरई मसाइल 55

क़ुरआन और दिल

दिल इन्सानी जिस्म का इन्तिहाई अहम हिस्सा है। क़ुरआने करीम में दिल की अहमिय्यत और सिफ़ात व अक़्साम को कई मक़ामात पर ज़िक्र किया गया है। अच्छे औसाफ़ पर दिल की तहसीन और बुरे औसाफ़ पर मज़म्मत की गई है। दिल का अच्छे या बुरे औसाफ़ से मुत्तसिफ़ होना इस लिए भी अहमिय्यत का हामिल है कि बरोज़े क़ियामत दिल के बारे में भी पूछ गछ की जाएगी, चुनान्चे सूरए बनी इसराईल में है :

﴿اِنَّ السَّمْعَ وَ الْبَصَرَ وَ الْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓىِٕكَ كَانَ عَنْهُ مَسْـُٔوْلًا(۳۶)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक कान और आंख और दिल इन सब से सुवाल होना है।[1]

क़ुरआने करीम में 70 से ज़ाइद मक़ामात पर दिल का ज़िक्र आया है, इन आयात की रौशनी में दिल की तीन अक़्साम बनती हैं : 1 क़ल्बे सलीम 2 क़ल्बे मय्यित 3 और क़ल्बे मरीज़।

क़ल्बे सलीम : सलीम के एक माना सलामत के हैं यानी वोह दिल जिस का मालिक शुब्हात व शहवात का शिकार होने से बचा हुवा हो और अह़कामे इलाहिय्या पर इस्तिक़ामत से क़ाइम हो, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक सुन्नतों पर आ़मिल और अस्लाफ़े किराम की पैरवी करने वाला हो। सूरतुश्शुअ़रा में फ़रमाया :

﴿يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّ لَا بَنُوْنَ(۸۸) اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ(۸۹) وَ اُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ(۹۰)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन न माल काम आएगा न बेटे मगर वोह जो अल्लाह के हुज़ूर हाज़िर हुवा सलामत दिल ले कर और क़रीब लाई जाएगी जन्नत परहेज़गारों के लिए।[2]

अ़ज़ीम मुफ़स्सिर मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه लिखते हैं : सलामतिए दिल से मुराद दिल का बद अ़क़ीदगियों से पाक होना, सूफ़िया के नज़दीक क़ल्बे सलीम वोह है जिसे मह़ब्बत व इ़श्क़े इलाही के सांप ने डस लिया हो अ़रबी में सलीम सांप डसे हुए को कहते हैं।[3]

क़ल्बे मय्यित : मय्यित मुर्दे को कहते हैं। क़ल्बे मय्यित उस दिल को कहते हैं जो अपने रब, ख़ालिक़ो मालिक, राज़िक़ व माबूद को न पहचानता हो, जो न तो ख़ालिक़ो मालिक की इबादत करे, न ही उस के हुक्म पर अ़मल करे और न ही उस के ममनूआ़त से बाज़ आए। नफ़्सानी ख़्वाहिशात के पीछे चले और अपने ख़ालिक़ को छोड़ कर ग़ैर की इबादत करे।

क़ल्बे मरीज़ : वोह दिल जो ज़िन्दा तो हो यानी अपने ख़ालिक़ो मालिक अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की पहचान

और उस पर ईमान तो रखता है लेकिन शहवत, हिर्स, ह़सद, तकब्बुर, ख़ुद पसन्दी और रियाकारी जैसी बीमारियों में मुब्तला है।

क़ल्बे सलीम के कुरआनी औसाफ़[4]

क़ल्बे सलीम जो कि अह़कामे इलाहिय्या पर कारबन्द और मासिय्यत व गुनाह से दूर रहने वाला होता है, इसे कुरआने करीम में कई सिफ़ात से मौसूम किया गया है।

01 क़ल्बे मुत़मइन : यादे इलाही से चैन पाने वाला दिल क़ल्बे मुत़मइन कहलाता है जैसा कि सूरतुर्रअ़द में है : ﴿اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ تَطْمَىٕنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَىٕنُّ الْقُلُوْبُ(۲۸)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो ईमान लाए और उन के दिल अल्लाह की याद से चैन पाते हैं सुन लो अल्लाह की याद ही में दिलों का चैन है।[5]

02 क़ल्बे मुनीब : अल्लाह करीम से डरने और ख़शिय्यत रखने वाला दिल क़ल्बे मुनीब है जैसा कि सूरए क़॓ में है :

﴿مَنْ خَشِیَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَیْبِ وَ جَآءَ بِقَلْبٍ مُّنِیْبِ(۳۳)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जो रह़मान से बे देखे डरता है और रुजूअ़ करता हुवा दिल लाया।[6]

तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान में है कि जिस डर में हैबत और ताज़ीम हो उसे ख़शिय्यत कहा जाता है ख़शिय्यत अल्लाह पाक की बड़ी नेमत है बे देखे डरने के माना येह हैं अम्बियाए किराम से सुन कर रब की हैबत रखे। यानी ऐसा दिल साथ लाया जो मुसीबत में साबिर आराम में शाकिर हर ह़ाल में रब का ज़ाकिर था। सूफ़िया फ़रमाते हैं कि क़ल्बे मुनीब अल्लाह की बड़ी नेमत है जो ख़ुश नसीब को मिलती है।[7]

क़ल्बे मुनीब लाने वाले का इन्आ़म भी इरशाद फ़रमाया गया है : ﴿اُدْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ ؕ ذٰلِكَ یَوْمُ الْخُلُوْدِ(۳۴) لَهُمْ مَّا یَشَآءُوْنَ فِیْهَا وَ لَدَیْنَا مَزِیْدٌ(۳۵)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उन से फ़रमाया जाएगा जन्नत में जाओ सलामती के साथ, येह हमेशगी का दिन है उन के लिए है इस में जो चाहें और हमारे पास इस से भी ज़ियादा है।[8]

03 क़ल्बे वजिल : सलामती वाले दिल की एक क़िस्म क़ल्बे वजिल यानी डरने वाला दिल भी है, अहले ईमान की ख़ास अ़लामात में से एक अ़लामत यादे इलाही के वक़्त दिल का डर जाना भी इरशाद फ़रमाई गई है जैसा कि सूरतुल अन्फ़ाल में है :

﴿اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِیْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ईमान वाले वोही हैं कि जब अल्लाह याद किया जाए उन के दिल डर जाएं।[9]

तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान में है कि ज़ातो सिफ़ात की आयात से तो हैबते इलाही पैदा हो और आयाते अ़ज़ाब से ख़ौफ़, आयाते रह़मत से शौक़ व ज़ोक़ पैदा हो, आंखों से आंसू जारी हों, इस से मालूम हुवा कि जिस के दिल में इ़श्क़ की जल्वागरी न हो, वोह कामिल मोमिन नहीं। येह भी मालूम हुवा कि कुरआन ख़ुज़ूअ़ व ख़ुशूअ़ और हुज़ूरे क़ल्बी से पढ़ना चाहिए। येह भी मालूम हुवा कि मोमिन का इस जहान में रब से डरना आइन्दा बे ख़ौफ़ी का ज़रीआ़ है। रब फ़रमाता है ﴿لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَ لَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ(۴۸)﴾[10]

सूरतुल ह़ज में डरने वाला दिल रखने वालों को ख़ुश ख़बरी सुनाई गई है :

﴿وَ بَشِّرِ الْمُخْبِتِیْنَ(۳۴) الَّذِیْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ मह़बूब ख़ुशी सुना दो उन तवज़ोअ़ वालों को कि जब अल्लाह का ज़िक्र होता है उन के दिल डरने लगते हैं।[11]

इसी त़रह़ वोह लोग जिन के दिल राहे ख़ुदा में ख़र्च करते वक़्त अल्लाह पाक की हैबत व जलाल से डरते हैं उन का भी सूरतुल मोमिनून में बयान है :

﴿وَ الَّذِیْنَ یُؤْتُوْنَ مَاۤ اٰتَوْا وَّ قُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ(۶۰) اُولٰٓىٕكَ یُسٰرِعُوْنَ فِی الْخَیْرٰتِ وَ هُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ(۶۱)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो देते हैं जो कुछ दें और उन के दिल डर रहे हैं यूं कि उन को अपने रब की त़रफ़ फिरना है। येह लोग भलाइयों में जल्दी करते हैं और येही सब से पहले उन्हें पहुंचे।[12]

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मालूम हुवा कि नेकी करना और डरना कमाले ईमान की अ़लामत है, गुनाह कर के डरना कमाल नहीं,

शैतान ने भी कहा था कि ﴿اِنِّیْۤ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِیْنَ﴾ फिर गुनाह पर ही क़ाइम रहा, हां गुनाह कर के डरना कि गुनाह छोड़ दे कमाल है और गुनाह कर के न डरना सख़्त जुर्म है।[13]

04 क़ल्बे लीन : लीन के माना नर्मी के हैं, क़ुरआने करीम में ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वालों के दिलों के नर्म होने का इरशाद फ़रमाया गया है, चुनान्चे सूरतुज़्ज़ुमर में है : ﴿اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِیْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِیَ ۖ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِیْنَ یَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِیْنُ جُلُوْدُهُمْ وَ قُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ یَهْدِیْ بِهٖ مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَ مَنْ یُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह ने उतारी सब से अच्छी किताब कि अव्वल से आख़िर तक एक सी है दोहरे बयान वाली इस से बाल खड़े होते हैं उन के बदन पर जो अपने रब से डरते हैं फिर उन की खालें और दिल नर्म पड़ते हैं यादे ख़ुदा की त़रफ़ रग़बत में येह अल्लाह की हिदायत है राह दिखाए उसे जिसे चाहे और जिसे अल्लाह गुमराह करे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं।[14]

05 क़ल्बे ख़ाशेअ़ : यादे इलाही से ख़शिय्यत पाने वाले दिल को क़ल्बे ख़ाशेअ़ कहते हैं, इस के बारे में सूरतुल ह़दीद में फ़रमाया : ﴿اَلَمْ یَاْنِ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَ مَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ ۙ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या ईमान वालों को अभी वोह वक़्त न आया कि उन के दिल झुक जाएं अल्लाह की याद और उस ह़क़ के लिए जो उतरा।[15]

06 क़ल्बे सकीना : अल्लाह करीम ने जिन अहले ईमान के दिलों पर सकीना नाज़िल फ़रमाया : उन्हें क़ल्बे सकीना से ताबीर कर सकते हैं, जिन के दिलों पर सकीना नाज़िल फ़रमाया गया उन्हें ईमान व यक़ीन के बढ़ने और रिज़ाए इलाही की नवेद भी सुनाई गई, सूरतुल फ़त्ह में है : ﴿هُوَ الَّذِیْۤ اَنْزَلَ السَّكِیْنَةَ فِیْ قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِیْنَ لِیَزْدَادُوْۤا اِیْمَانًا مَّعَ اِیْمَانِهِمْ ؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोही है जिस ने ईमान वालों के दिलों में इत़मीनान उतारा ताकि उन्हें यक़ीन पर यक़ीन बढ़े।[16]

﴿لَقَدْ رَضِیَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِیْنَ اِذْ یُبَایِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِیْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِیْنَةَ عَلَیْهِمْ وَ اَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِیْبًا﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह राज़ी हुवा ईमान वालों से जब वोह उस पेड़ के नीचे तुम्हारी बैअ़त करते थे तो अल्लाह ने जाना जो उन के दिलों में है तो उन पर इत़मीनान उतारा और उन्हें जल्द आने वाली फ़त्ह का इन्आ़म दिया।[17]

07 क़ल्बे मरबूत़ : रब्बे करीम की सना व तौसीफ़ करने और सिर्फ़ उसी को माबूद मानने वालों के दिलों को मज़बूत़ किए जाने की क़ुरआनी नवेद है, चुनान्चे सूरतुल कहफ़ में है :

﴿وَ رَبَطْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَاْ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَاۤ اِذًا شَطَطًا﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने उन के दिलों की ढारस बन्धाई जब खड़े हो कर बोले कि हमारा रब वोह है जो आस्मान और ज़मीन का रब है हम उस के सिवा किसी माबूद को न पूजेंगे ऐसा हो तो हम ने ज़रूर ह़द से गुज़री हुई बात कही।[18]

08 क़ल्बे मुख़्बित : मुख़्बित कहते हैं झुकने वाले को, क़ुरआने करीम में **"दिलों का झुक जाना"** ईमान का तक़ाज़ा बयान किया गया है, चुनान्चे सूरतुल ह़ज में है : ﴿لِیَعْلَمَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَیُؤْمِنُوْا بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : (अल्लाह अपनी आयतें पक्की कर देता है) इस लिए कि जान लें वोह जिन को इल्म मिला है कि वोह तुम्हारे रब के पास से ह़क़ है तो उस पर ईमान लाएं तो झुक जाएं उस के लिए उन के दिल और बेशक अल्लाह ईमान वालों को सीधी राह चलाने वाला है।[19]

---

(1) پ15، بنی اسرآءیل:36 (2) پ19، الشعرآء:88، 89، 90 (3) نورالعرفان، سورۃ الشعرآء، تحت الآیۃ:88 تا 90، ص591 (4) क़ल्बे मय्यित और क़ल्बे मरीज़ के औसाफ़ अलग मज़मून की सूरत में अगले माह के शुमारे में शाएअ़ किए जाएंगे। (5) پ13، الرعد:28 (6) پ26، قٓ:33 (7) تفسیر نور العرفان، ص830، قٓ، تحت الآیۃ:33 (8) پ26، قٓ:34، 35 (9) پ9، الانفال:2 (10) تفسیر نورالعرفان، ص281، الانفال، تحت الآیۃ:2 (11) پ17، الحج:34 تا 35 (12) پ18، المؤمنون: 60 تا 61 (13) تفسیر نورالعرفان، ص551، المومنون، تحت الآیۃ:60 (14) پ23، الزمر:23 (15) پ27، الحدید:16 (16) پ26، الفتح:4 (17) پ26، الفتح:18 (18) پ15، الکہف:14 (19) پ17، الحج:54۔

लो मदीने का फूल लाया हूं मैं ह़दीसे रसूल लाया हूं

(अज़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

शर्हे ह़दीसे रसूल

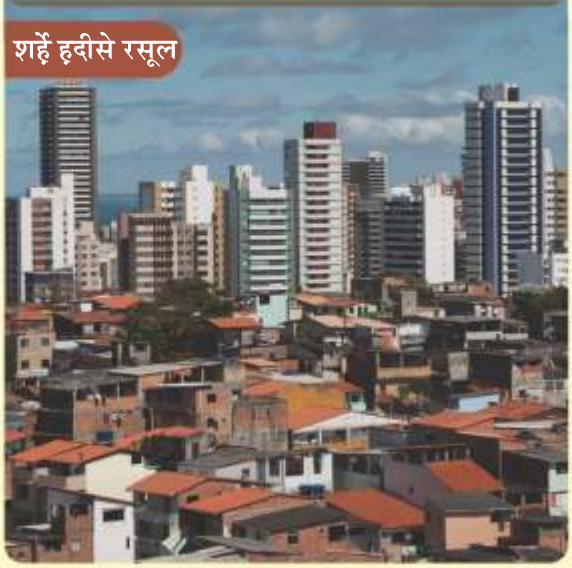

ऊपर नहीं नीचे देखो

ख़ातमुन्नबिय्यीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِذَا نَظَرَ اَحَدُكُمْ اِلٰى مَنْ فُضِّلَ عَلَيْهِ فِي الْمَالِ وَالْخَلْقِ، فَلْيَنْظُرْ اِلٰى مَنْ هُوَ اَسْفَلَ مِنْهُ

तर्जमा : जब तुम में से कोई ऐसे शख़्स को देखे जिसे माल व ख़ल्क़ में तुम पर बरतरी (Superiority) दी गई है तो उसे चाहिए कि वोह अपने से नीचे वाले को देखे।[1]

शर्हे ह़दीस इस ह़दीसे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में اَلْخَلْقِ से मुराद सूरत है, औलाद, पैरोकार और ज़ीनते दुन्या को भी मुराद लिया जा सकता है, जब कि مَنْ هُوَ اَسْفَلَ مِنْهُ से मुराद है जो दुन्यवी मुआ़मलात में उस से नीचे हो ।[2]

अब इस ह़दीसे पाक का माना येह हुवा कि जब तुम ऐसे शख़्स को देखो जो माल, ह़ुस्नो जमाल, औलाद, पैरोकार और दुन्यावी ज़ेबो ज़ीनत वग़ैरा में तुम से बढ़ कर हो तो ऐसे शख़्स को देख लो जो उन चीज़ों में तुम से कम हो।

नीचे देखने के फ़वाइद 1 नीचे इस लिए देखे कि उसे अपनी कमी बरदाश्त करना आसान हो और वोह अपने ऊपर होने वाले इन्आ़माते इलाही पर ख़ुश हो और उन पर शुक्र करे । इस का तअ़ल्लुक़ दुन्यावी मुआ़मलात के साथ है, रहे दीनी व उख़रवी उमूर तो अपने से ऊपर वाले को देखे ताकि फ़ज़ाइल ह़ासिल करने की रग़बत बढ़े।[3]

2 उ़लमाए किराम ने फ़रमाया कि इस फ़रमाने रसूल में (बात़िनी) बीमारी का इ़लाज है क्यूंकि जब कोई शख़्स अपने से ऊपर वाले को देखेगा तो वोह ह़सद के असर से मह़फ़ूज़ नहीं रहेगा और ह़सद की दवा येह है कि वोह अपने से नीचे वाले को देखे ताकि वोह शुक्रे इलाही की त़रफ़ मुतवज्जेह हो।[4]

3 अगर इन्सान अपने से नीचे त़ब्क़े वालों की त़रफ़ देखे तो उसे इस बात का एह़सास होगा कि वोह बहुत अच्छी ह़ालत में है। अगर बिलफ़र्ज़ कोई ऐसा इन्सान है जिसे तमाम लोगों में अपने ऊपर कोई दिखाई नहीं देता तो उसे चाहिए कि वोह अपने से नीचे वालों की त़रफ़ न देखे कि इस सूरत में येह गुरूर व तकब्बुर, ख़ुद पसन्दी और फ़ख़्र करने के फ़ेले बद में मुब्तला हो सकता है लिहाज़ा इस पर लाज़िम है कि येह हमेशा इन नेमतों पर अल्लाह पाक का शुक्र अदा करे और बिलफ़र्ज़ अगर कोई शख़्स येह गुमान करे कि वोह लोगों में सब से ज़ियादा फ़क़्रो तंगदस्ती का शिकार है तो उसे चाहिए कि वोह अल्लाह करीम का शुक्र अदा करे कि अल्लाह ने उसे कसरते माल के ज़रीए दुन्या के फ़ितने में मुब्तला नहीं फ़रमाया।[5]

शुरूह़ात का ख़ुलासा अगर कोई ऐसे शख़्स को देखे जो दुन्यावी नाज़ो नेमत में इस से बुलन्द पाया है तो उसे ऐसे शख़्स को देख लेना चाहिए जिस से येह बुलन्द पाया है ताकि बुलन्द पाया को देख कर अल्लाह की नेमत का कुफ़्रान (ना शुक्री) न करे बल्कि अपने पर अल्लाह की नेमते दुन्यावी मालो मताअ़, ख़ूब सूरती और औलाद वग़ैरा को देखे ताकि अल्लाह की नेमतों का शुक्र बजा लाए और ख़ुश हो, लेकिन जिस का तअ़ल्लुक़ आख़िरत से है वहां उस को देखे जो इस से दीन दारी में बुलन्द पाया है ताकि फ़ज़ाइल ह़ासिल करने में राग़िब हो।[6]

मिरआतुल मनाजीह़ में है : इस ह़दीसे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मत़लब येह हुवा कि अगर तुम कभी ऐसे शख़्स को जो सेह़त या दौलत में तुम से ज़ियादा हो और तुम को इस पर रंज हो तो फ़ौरन ऐसे (शख़्स) को भी देखो जो सेह़त दौलत में तुम से कम है और ख़ुदा का शुक्र करो। दुन्यावी चीज़ों में अपने से नीचे को देखो ताकि तुम शुक्र करो और दीन

की चीज़ों में अपने से ऊपर को देखो ताकि तुम अपनी इबादात पर तकब्बुर न करो, अगर तुम पंजगाना नमाज़ पढ़ते हो तो उन्हें देखो जो तहज्जुद और इशराक़ भी पढ़ते हैं।[7]

अमल की फ़ज़ीलत हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूर पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने दीन के मुआ़मले में अपने से ऊपर वाले और दुन्या के मुआ़मले में अपने से नीचे वाले को पेशे नज़र रखा तो अल्लाह पाक उसे साबिर और शाकिर लिख देता है और जिस ने दीन के मुआ़मले में अपने से नीचे वाले और दुन्या के मुआ़मले में अपने से ऊपर वाले को पेशे नज़र रखा तो अल्लाह पाक उसे साबिर और शाकिर नहीं लिखता।[8]

ग़ौरो फ़िक्र की तक्मील इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं : इस ग़ौरो फ़िक्र की तक्मील इस त़रह़ होगी वोह दुन्यावी मुआ़मलात में हमेशा अपने से नीचे वालों को देखे ऊपर वालों की त़रफ़ नज़र न करे क्यूंकि शैत़ान हमेशा उस की नज़र को दुन्यावी मुआ़मलात में ऊपर वालों की त़रफ़ फिराता है और येह कहता है कि त़लबे माल में कोताही क्यूं करते हो मालदारों को देखो कि उन्हें कैसे अच्छे खाने और उ़म्दा लिबास ह़ासिल हैं और दीनी मुआ़मलात में शैत़ान उस की निगाह उस से नीचे वालों की त़रफ़ फिराता है और कहता है कि अपने नफ़्स को क्यूं मशक़्क़त और तक्लीफ़ में डालते हो और क्यूं अल्लाह पाक से इस क़दर डरते हो फ़ुलां शख़्स को देखो वोह तुम से ज़ियादा इ़ल्म रखने के बा वुजूद अल्लाह से नहीं डरता, तमाम लोग तो ऐ़शो इ़शरत में मशग़ूल हैं जब कि तुम लोगों से मुमताज़ होना चाहते हो।[9]

ह़ासिले मुत़ालआ़ इस ह़दीसे रसूल और इस की शुरूह़ात के मुत़ालए़ से दर्जे ज़ैल पोइन्टस ह़ासिल हुए :

1 एह़सासे कमतरी और बरतरी का इ़लाज मालूम हुवा। मज़ीद मुस्तदरक में फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : माल दारों के पास कम जाया करो येह इस बात के ज़ियादा लाइ़क़ है कि तुम अल्लाह पाक की नेमत को कम न समझो।[10]

ह़ज़रते शिबली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जब किसी दुन्यादार को देखते तो दुआ़ करते :

"اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ الْعَفْوَ وَالْعَافِیَۃَ فِی الدُّنْیَا وَالْعُقْبٰی

यानी ऐ अल्लाह ! मैं तुझ से दुन्या और आख़िरत में दरगुज़र और आ़फ़िय्यत का सुवाल करता हूं।"[11]

2 हर इन्सान माल, हुस्नो जमाल, औलाद और सलाह़िय्यतों वग़ैरा में बराबर नहीं होता बल्कि कोई इन चीज़ों में आप से बरतर होगा और किसी के पास येह नेमतें आप से कम होंगी। इस लिए अपनी कमी पर परेशान और मायूस न हों और अपनी बरतरी पर ग़ुरूरो तकब्बुर में मुब्तला न हों।

सुखी रहने के नुस्ख़े 1 दो चीज़ों की गिनती छोड़ दें : (1) अपने दुख और (2) दूसरे के सुख। वरना आप के दुखों में इज़ाफ़ा हो जाएगा 2 अपने आराम व आसाइश का दूसरों के ज़ियादा आराम व आसाइश से मुक़ाबला न करें, इस से भी आप दुखी हो सकते हैं 3 जब आप दुखी हों तो अपने से बढ़ कर दुख्यारों की ह़ालत पर ग़ौर करने से आप के दुख की शिद्दत कम हो जाएगी और उसे बरदाश्त करना क़द्रे आसान हो जाएगा।

मेरे पांव तो सलामत हैं एक बुज़ुर्ग इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के लिए दूर दराज़ शहर की त़रफ़ पैदल रवाना हुए। चलते चलते उन के जूते टूट गए और चलना मुश्किल हो गया तो उन्हों ने जूते उतार दिए और नंगे पांव चलना शुरूअ़ कर दिया। नंगे पांव चलने की वजह से उन के पांव में छाले पड़ गए, लेकिन जब तक्लीफ़ बहुत ज़ियादा बढ़ गई तो वोह बुज़ुर्ग थक हार कर बैठ गए। उस वक़्त उन के दिल में येह ख़याल आया कि अगर मेरे पास भी दौलत होती तो मैं भी किसी सुवारी पर सफ़र करता और मेरी येह तक्लीफ़ देह ह़ालत न होती। अचानक उस बुज़ुर्ग की एक माज़ूर शख़्स पर नज़र पड़ी जिस के पांव ही नहीं थे और वोह ज़मीन पर घिसट घिसट कर आगे बढ़ रहा था। उस बुज़ुर्ग ने जब येह मन्ज़र देखा तो अल्लाह पाक की बारगाह में अपने उस ख़याल की मुआ़फ़ी मांगने लगे और अल्लाह पाक का शुक्र अदा किया कि सुवारी न होने की वजह से पांव ज़ख़्मी हो गए हैं तो क्या हुवा मेरे पांव तो सलामत हैं कि खड़ा भी हो सकता हूं और चल भी सकता हूं।[12]

अल्लाह पाक हमें इस्लामी तालीमात पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

(1) بخاری، 4/244، حدیث:6490 (2) فتح الباری، 12/275، تحت الحدیث:6490 (3) عمدۃ القاری، 15/562، تحت الحدیث6490 (4) فتح الباری، 12/275، تحت الحدیث:6490 (5) دیکھئے: مرقاۃ المفاتیح، 9/95، تحت الحدیث:5242 (6) تفہیم البخاری، 9/780 (7) دیکھئے: مراٰۃ المناجیح، 7/66، 67 (8) شعب الایمان، 4/137، حدیث:4575 (9) احیاء العلوم، 3/300 (10) مستدرک، 5/444، حدیث:7939 (11) دیکھئے: مرقاۃ المفاتیح، 9/95، تحت الحدیث:5242 (12) گلستان سعدی، ص95۔

अन्दाज़ मेरे हुज़ूर के

आख़िरी नबी ﷺ का अन्दाज़े अमानतदारी

रब्बे करीम ने अपने ह़बीब को जहां मुअ़ल्लिमे काइनात बनाया वहीं आप के अन्दाज़ व किरदार को भी हमारे लिए कामिल नमूना क़रार दिया है, आप की मुबारक सीरत का एक बहुत ही शानदार पहलू अमानत व दियानत भी है। हुज़ूर ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने अमानत व दियानत शुरूअ़ से मशहूर थी, एलाने नबुव्वत से पहले भी आप इस ख़ूबी से जाने जाते थे।[1] और कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन इस का इज़हार व एतिराफ़ किया करते थे।[2] जब आप की मुबारक उ़म्र 25 साल हुई तो मक्का में आप को "**अमीन (अमानतदार)**" के लक़ब से जाना जाने लगा।[3]

आइए ! आप की शाने अमानतदारी की कुछ झल्कियां पढ़िए :

एलाने नुबुव्वत से क़ब्ल अन्दाज़े अमानतदारी

ऐलाने नुबुव्वत से पहले मक्का की मुअ़ज़्ज़ज़, मालदार और निहायत अ़क़्लमन्द ख़ातून ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا अपना सामाने तिजारत मुल्के शाम भेजना चाहती थीं और एक अमानतदार आदमी की तलाश में थीं। बीबी ख़दीजा रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सच्चाई व हुस्ने अख़्लाक़ के साथ साथ सिफ़ते अमानतदारी से भी ख़ूब आगाह थीं, चुनान्चे आप ने रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को यूं पैग़ाम भेजा : मेरी जानिब से आप को (सामाने तिजारत के साथ शाम) भेजने की पेशकश का सबब वोह बात है जो मुझे आप की (सच्ची) गुफ़्तगू, अमानतदारी और आला अख़्लाक़ के बारे में पहुंची है, (अगर येह पेशकश क़बूल फ़रमा लें तो) मैं आप को दीगर के मुक़ाबले में दुगना मुआ़वज़ा दूंगी। रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसे क़बूल फ़रमाया और पहले से कई गुना ज़ियादा नफ़्अ़ हुवा।[4] ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने दीगर औसाफ़े नबवी के साथ अमानतदारी की ख़ूबी मुलाह़ज़ा फ़रमाई तो रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को निकाह़ का पैग़ाम भेजा और सफ़रे शाम से वापसी के दो महीने 25 दिन बाद आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से निकाह़ फ़रमाया।[5]

एलाने नुबुव्वत के बाद अन्दाज़े अमानतदारी

ऐलाने नुबुव्वत के बाद कुफ़्फ़ारे मक्का रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बदतरीन दुश्मन हो गए थे मगर इस के बा वुजूद येह लोग आप की दियानतदारी पर भरपूर एतिमाद करते हुए आप के पास अपनी क़ीमती चीज़ें बत़ौरे अमानत रखवाया करते थे। जब कुफ़्फ़ारे मक्का को आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रात में मदीना हिजरत कर जाने का इ़ल्म हुवा तो उन्हों ने आप को शहीद करने के इरादे से आप के घर

का मुहासरा कर लिया, ऐसा दुश्मन जो जान लेने पर तुला है मगर रहमते आलम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस वक्त भी इन अमानतों को लौटाने की फ़िक्र फ़रमा रहे हैं चुनान्चे आप ने हज़रते अलिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अमानतें सिपुर्द कीं और तमाम अमानतें लौटाने के बाद मदीना आने का हुक्म दिया।[6]

दीने इस्लाम को उम्मत तक पहुंचाना भी अमानत दारी में शामिल है रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने 23 साल के अर्से में ज़िन्दगी के हर शोबे से मुतअल्लिक़ अमानते इस्लाम को पूरी तरह पहुंचा दिया, चुनान्चे हिज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर लोगों से पूछा :

ऐ लोगो ! मैं तुम्हारे दरमियान ऐसी चीज़ छोड़े जा रहा हूं कि अगर तुम उसे मज़बूती से पकड़े रहो तो कभी गुमराह नहीं होगे और वोह अल्लाह पाक की किताब है।

तुम से (क़ियामत के दिन) मेरे बारे में सुवाल होगा तो तुम क्या जवाब दोगे ? सब ने अ़र्ज़ की : हम गवाही देंगे कि आप ने अल्लाह पाक का पैग़ाम पहुंचाया और रिसालत का हक़ अदा किया और उम्मत की भलाई चाही।

येह सुन कर आप ने आस्मान की तरफ़ इशारा कर के येह अल्फ़ाज़ तीन मरतबा दोहराए : ऐ अल्लाह ! गवाह रहना।[7]

1 रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने अन्दाज़ के साथ अल्फ़ाज़ के ज़रीए भी हमें अमानत व दियानत की तरबियत दी है, इस सिलसिले में चन्द अहादीसे मुबारका मुलाहज़ा कीजिए :

2 जब अमानत ज़ाएअ़ की जाए तो क़ियामत का इन्तिज़ार कर।[8]

3 मुनाफ़िक़ की तीन अ़लामतें हैं : (1) जब बात करे तो झूट बोले। (2) जब वादा करे तो पूरा न करे और (3) जब उस के पास अमानत रखी जाए तो उस में ख़ियानत करे, अगर्चे वोह नमाज़ पढ़ता हो, रोज़े रखता हो और अपने आप को मुसलमान समझता हो।[9]

4 अ़नक़रीब तुम पर मशरिक़ो मग़रिब की ज़मीनों के दरवाज़े खुल जाएंगे लेकिन उन के उ़म्माल (यानी हुक्मरान) जहन्नमी होंगे सिवाए उस के जो अल्लाह पाक से डरे और अमानत अदा करे।[10]

5 गुफ़्तगू तुम्हारे दरमियान अमानत है।[11]

6 जिस में अमानत नहीं उस का दीन कामिल नहीं।[12]

तीन चीज़ें ऐसी हैं जिन में किसी को कोई रुख़्सत नहीं : (1) वालिदैन के साथ अच्छा बरताव करना ख़्वाह वोह मुसलमान हों या काफ़िर (2) वादा पूरा करना ख़्वाह मुसलमान से किया हो या काफ़िर से (3) अमानत की अदाएगी ख़्वाह मुसलमान की हो या काफ़िर की।[13]

7 सच्चा और अमानत दार ताजिर, अम्बिया, सिद्दीक़ीन और शुहदा के साथ होगा।[14]

अल्लाह करीम हमें अमानतदारी की सुन्नत पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

(1)السیرۃ النبویۃ لابن ہشام، ص75(2)السیرۃ النبویۃ لابن ہشام، ص79(3)دلائل النبوۃ للاصفہانی، ص99(4)دلائل النبوۃ للاصفہانی، ص99-110، دلائل النبوۃ للبیہقی،2/66(5)مواہب لدنیہ،1/101(6)شرح الزرقانی علی المواہب،2/95-96 (7)مسلم، ص490، حدیث:2950(8)بخاری، 1/37، حدیث:59(9)مسلم، ص53، حدیث:212-213(10)مسند احمد،9/44، حدیث:23170(11)موسوعۃ لابن ابی الدنیا،7/244(12)شعب الایمان،4/320، حدیث: 5254 (13) شعب الایمان، 4/82، حدیث:4363(14)ترمذی،3/5، حدیث: 1213۔

रबीउ़ल आख़िर की मुनासिबत से अहम मौज़ूआत पर मुश्तमिल बयानात का ख़ूब सूरत गुलदस्ता हासिल करने के लिए दावते इस्लामी की वेब साइट विज़िट कीजिए।

मदनी मुज़ाकरे के सुवाल जवाब

1 तहज्जुद के वक़्त में पहले तहज्जुद की नमाज़ अदा करें या इशा की बक़िय्या ?

सुवाल : अगर कोई शख़्स इशा की नमाज़ के सिर्फ़ फ़र्ज़ अदा करे और बक़िय्या नमाज़ तहज्जुद में अदा करे तो तहज्जुद के वक़्त वोह पहले तहज्जुद की नमाज़ अदा करे या इशा की बक़िय्या नमाज़ अदा करे ?

जवाब : इशा के फ़र्ज़ों के बाद की सुन्नतें अदा कर ली जाएं येह तर्क न की जाएं, इसी त़रह़ अगर कोई जागने पर क़ुदरत रखता है तो फिर उस के लिए बेहतर येही है कि वोह जब सो कर उठे तो तहज्जुद के वक़्त में वित्र पढ़े, नीज़ तहज्जुद के वक़्त पहले तहज्जुद की नमाज़ पढ़े फिर इस के बाद वित्र की नमाज़ अदा करेंगे।

2 ग़ौसे पाक की वालिदा का नाम

सुवाल : ग़ौसे पाक की वालिदा का नाम क्या है ?

जवाब : ग़ौसे पाक की अम्मीजान का नाम "**फ़ातिमा**" और कुन्यत "**उम्मुल ख़ैर**" है यानी उम्मुल ख़ैर फ़ातिमा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا । (مرآۃ الزمان فی تواریخ الاعیان، 80/21)

3 किसी भी दिन ग्यारहवीं शरीफ़ करना कैसा ?

सुवाल : अगर किसी ने 11 रबीउ़ल आख़िर शरीफ़ को ग्यारहवीं शरीफ़ की नियाज़ नहीं की हो तो क्या वोह पूरे महीने में किसी और दिन कर सकता है ?

जवाब : जी हां कर सकते हैं बल्कि पूरे साल में कर सकते हैं, 11 रबीउ़ल आख़िर शरीफ़ ही को करना ज़रूरी नहीं है, लेकिन बुज़ुर्गों और मुसलमानों में मख़्सूस तारीख़ को ईसाले सवाब करना राइज है कि उस दिन की ख़ास बरकत है, उस दिन करना ज़ियादा मुनासिब है, लेकिन कोई उस दिन नहीं कर सका तो बाद में जब चाहे कर सकता है। इस के लिए देगें पकाना भी ज़रूरी नहीं है बल्कि जो घर में पकाया है उसी पर ईसाले सवाब कर दीजिए। اِنْ شَآءَ اللهُ الْكَرِيْم बरकतें मिलेंगी।

4 फ़ौत शुदगान की रूहों का अपने घरों पर आना

सुवाल : क्या मौत के बाद इन्तिक़ाल करने वालों की रूहें अपने घरों पर आती हैं ?

जवाब : जी हां ! मुसलमान की रूह मख़्सूस औक़ात में जैसे शबे जुमुआ और शबे बराअत वग़ैरा में आती है और अपने घर वालों से ईसाले सवाब का मुत़ालबा करती है। (देखिए : फ़तावा रज़विय्या, 9/653) ग़ैर मुस्लिम की रूह क़ैद में होती है वोह बाहर नहीं निकल सकती (देखिए : बहारे शरीअ़त, 1/103) बाज़ बाबाजी कहते हैं कि इस की रूह सता रही है या उस की रूह सता रही है, येह सब बेकार बातें हैं, ग़ैर मुस्लिम की रूह तो क़ैद में है वोह सताने आ ही नहीं सकती और मुसलमान की रूह अगर जन्नत के मज़े ले कर ऐ़श में है, उस की क़ब्र जन्नत का बाग़ बनी हुई है तो उस ने भी आ कर सताना

नहीं है, इसी त़रह़ कोई मुसलमान مَعَاذَاللہ अ़ज़ाब में है तो उस की रूह़ भी आ कर नहीं सताएगी।

5 सदक़ा व ख़ैरात की क़बूलिय्यत का मेयार

सुवाल : सदक़ा व ख़ैरात की क़बूलिय्यत का मेयार क्या है ?

जवाब : इख़्लास। अल्लाह पाक की राह में जब भी सदक़ा व ख़ैरात करें इख़्लास के साथ करें कि इख़्लास क़बूलिय्यत की कुन्जी (Key) है, रियाकारी और दिखावे के लिए करेंगे तो गुनाहगार होंगे ?

6 बत़ख़ के अन्डे खाना कैसा ?

सुवाल : क्या बत़ख़ के अन्डे खाए जा सकते हैं ?

जवाब : बत़ख़ ह़लाल परिन्दा है, उस का गोश्त भी खा सकते हैं और उस के अन्डे भी खा सकते हैं।

7 गुनाहगार का नेकी की दावत देना कैसा ?

सुवाल : जो ख़ुद अच्छे काम नहीं करता वोह दूसरों को अच्छे काम करने का कह सकता है या नहीं ?

जवाब : अगर कोई ख़ुद नेकी न करे लेकिन दूसरे को नेकी की दावत दे तो येह जाइ़ज़ है, बल्कि बाज़ सूरतों में दूसरे को नेकी की दावत देना वाजिब हो जाएगा, जैसे कोई ख़ुद गुनाह से नहीं बच रहा लेकिन कोई दूसरा शख़्स गुनाह कर रहा है और इस को ज़न्ने ग़ालिब है कि मैं उस को समझाऊंगा तो वोह गुनाह छोड़ देगा तो अब उस को समझाना और बुराई से रोकना इस पर वाजिब हो जाएगा। (देखिए : बहारे शरीअ़त, 3/615) अगर येह उस को नहीं समझाएगा तो बुराई से न रोकने का गुनाह भी इस के सर आएगा, यूं इस के सर दो गुनाह हो जाएंगे एक ख़ुद बुराई में मुब्तला होने का और दूसरा बुराई से न रोकने का। (ता हम) जिस त़रह़ दूसरे को गुनाहों से बचाना ज़रूरी है उसी त़रह़ अपने आप को भी गुनाहों से दूर रखना ज़रूरी है।)

8 फ़र्ज़ ग़ुस्ल से पहले नाख़ुन काटना कैसा ?

सुवाल : फ़र्ज़ ग़ुस्ल से पहले नाख़ुन काट सकते हैं या नहीं ?

जवाब : फ़र्ज़ ग़ुस्ल से पहले नाख़ुन काटना मकरूह है, (बहारे शरीअ़त, 3/585) फ़र्ज़ ग़ुस्ल के बाद नाख़ुन काटने चाहिएं।

9 इमाम साह़िब का "رَبَّنَا لَكَ الْحَمْد" कहना कैसा।

सुवाल : जब इमाम साह़िब रुकूअ़ से खड़े होते हैं तो "سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنْ حَمِدَہ" कहते हैं, क्या इस के बाद इमाम साह़िब رَبَّنَا لَكَ الْحَمْد पढ़ेंगे या ख़ामोश रहेंगे या یا رَبَّنَا لَكَ الْحَمْد मुक़्तदी पढ़ेंगे, इस का जवाब अ़त़ा फ़रमा दीजिए।

जवाब : رَبَّنَا لَكَ الْحَمْد मुक़्तदी कहेंगे, इमाम साह़िब नहीं कहेंगे, अगर इमाम साह़िब ने कह भी दिया तो उस पर सज्दए सह्व वाजिब नहीं होगा, नमाज़ हो जाएगी। अलबत्ता अगर कोई अकेला नमाज़ पढ़ रहा हो तो फिर वोह दोनों कहेगा।

(बहारे शरीअ़त, 1/527)

10 निकाह़ फ़ॉर्म में महर के ख़ाने में क्या लिखवाया जाए ?

सुवाल : जब निकाह़ होता है तो उस वक़्त निकाह़ फ़ॉर्म भी भरा जा रहा होता है, निकाह़ फ़ॉर्म में महर के ख़ाने में बाज़ औक़ात लड़की वाले सोना चान्दी लिखवाते हैं, तो क्या उस फ़ॉर्म में महर के त़ौर पर सोना चान्दी लिखवा सकते हैं या महर के त़ौर पर रक़म ही लिखवाना ज़रूरी है, नीज़ सोना चान्दी लिखवाई जाए तो कितना सोना चान्दी लिखवाया जाए ?

जवाब : शरई महर कम अज़ कम दो तोले साढ़े सात माशे चान्दी है और येह वाजिब है। निकाह़ फ़ॉर्म में सिर्फ़ रक़म ही लिखवाना ज़रूरी नहीं है बल्कि सोना चान्दी, पैसे, प्लोट, सूट और ग़ल्ला वग़ैरा भी लिखवा सकते हैं लेकिन इस की मालिय्यत दो तोले साढ़े सात माशे चान्दी से कम न हो ज़ियादा की कोई (Limit) (यानी ह़द) नहीं है।

(देखिए : फ़तावा रज़विय्या, 12/165-बहारे शरीअ़त, 2/64)

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

1 केरम बोर्ड वग़ैरा खेलों में हारने वाले का सब की फ़ीस अदा करना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि केरम बोर्ड और ब्लेर्ड क्लब वग़ैरा में बाज़ लोग यूं जा कर खेलते हैं कि तमाम की फ़ीस हारने वाला अदा करेगा ? पूछना येह है कि क्या येह सूरत जुवा में दाख़िल है या नहीं ?

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡجَوَابُ بِعَوۡنِ الۡمَلِکِ الۡوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الۡحَقِّ وَالصَّوَابِ

ऐसा अ़क़्द जिस में दो त़र्फ़ा शर्त़ हो, और हारने की सूरत में अपनी रक़म के डूबने का ख़त़रा हो और जीतने की सूरत में दूसरे का माल मिलने की उम्मीद हो, उसे जुवा कहते हैं। इस के मुत़ाबिक़ सुवाल में पूछी गई सूरत का जाइज़ा लें तो इस में ब ज़ाहिर अगर्चे सिर्फ़ एक की रक़म जाने का अन्देशा है और बक़िय्या के पास रक़म की सूरत में कुछ नहीं आना, मगर दर ह़क़ीक़त येह भी जुवा ही है क्यूंकि अगर्चे रक़म नहीं मिलेगी, मगर गेम खेलने की वजह से जो रक़म ज़िम्मे में लाज़िम हुई, वोह हारने वाले ने उस की त़रफ़ से अदा कर दी, यूं येह भी अपने पास दूसरे की रक़म आना कहलाएगा, लिहाज़ा येह सूरत भी जुवा में दाख़िल है और जुवा सख़्त नाजाइज़ो ह़राम और गुनाहे कबीरा है, इस से बचना ज़रूरी है।

नीज़ इस में अगर जुवा की सूरत न भी हो यानी हर एक अपनी फ़ीस ख़ुद अदा करे, तब भी केरम बोर्ड और ब्लेर्ड वग़ैरा तमाम ऐसे खेल जिन में कोई दीनी या दुन्यावी फ़ाएदा न हो, मह़ज़ लहवो लअ़ब के त़ौर पर खेले जाते हों, ममनूअ़ व बात़िल हैं, अह़ादीसे करीमा में इस त़रह़ के खेलों से मुमानअ़त फ़रमाई गई है।

तम्बीह : याद रहे हर ऐसा काम जिस की शरीअ़त की नज़र में कोई मक़्सूद मन्फ़अ़त न हो, उस का इजारा जाइज़ नहीं होता और ऊपर वाज़ेह़ हो चुका कि केरम बोर्ड और ब्लेर्ड वग़ैरा का कोई जाइज़ दुन्यवी या दीनी मक़्सद नहीं, बल्कि येह मह़ज़ लहवो लअ़ब के त़ौर पर खेले जाते हैं, लिहाज़ा खेलने की मुमानअ़त के साथ इस त़रह़ के कामों का क्लब खोलना और इस त़रह़ के लहवो लअ़ब के कामों पर इजारा करना भी नाजाइज़ व ह़राम है, इस से बचना भी ज़रूरी है।

وَاللّٰہُ اَعۡلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوۡلُہٗ اَعۡلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 नमाज़े जनाज़ा में दीवार से देख कर दुआ़ पढ़ ली तो ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि अगर कोई शख़्स नमाज़े जनाज़ा में सामने दीवार पर लिखी हुई जनाज़े की दुआ़ देख कर पढ़ ले, तो क्या हुक्म है ?

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡجَوَابُ بِعَوۡنِ الۡمَلِکِ الۡوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الۡحَقِّ وَالصَّوَابِ

क़वानीने शरइ़य्या के मुत़ाबिक़ नमाज़ में औ़रत किसी मर्द के बराबर खड़ी हो तो नमाज़े जनाज़ा के इ़लावा नमाज़ें चन्द शराइ़त पाए जाने की सूरत में फ़ासिद हो जाती हैं, जब कि नमाज़े जानाज़ा फ़ासिद नहीं होती, इस एक चीज़ के इ़लावा बक़िय्या जितनी चीज़ों से आ़म नमाज़ें फ़ासिद होती हैं उन से नमाज़े जनाज़ा भी फ़ासिद हो जाती है, चूंकि देख कर दुआ़ पढ़ना **तअ़ल्लुम मिनल ग़ैर** यानी ग़ैर से सीखने के ज़ुमरे में आता है और इस से आ़म नमाज़ें फ़ासिद हो जाती हैं,

लिहाज़ा नमाज़े जनाज़ा भी इस से फ़ासिद हो जाएगी।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 इमाम के सज्दए सह्व करने के बाद कोई जमाअ़त में शामिल हुवा तो वोह सज्दए सह्व करेगा या नहीं ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि इमाम सज्दए सह्व के बाद तशह्हुद में बैठा था, उस वक़्त कोई शख़्स जमाअ़त में शामिल हुवा, तो उस पर सज्दए सह्व लाज़िम है या नहीं, जब कि छूटी हुई रक्अ़तें अदा करते हुए ख़ुद उस से सह्व वाक़ेअ़ नहीं हुवा ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में सज्दए सह्व के बाद तशह्हुद में बैठे हुए इमाम की जिस शख़्स ने इक़्तिदा की, तो इमाम के सह्व की वजह से उस पर सज्दए सह्व करना लाज़िम नहीं होगा। वजह येह है कि ख़ुद उस मुक़्तदी से तो कोई भूल वाक़ेअ़ नहीं हुई और इमाम की पैरवी की रू से भी सज्दए सह्व लाज़िम नहीं हुवा कि उस ने इमाम को दोनों सज्दों में नहीं पाया और इमाम की पैरवी उसी चीज़ में लाज़िम होती है जिस में उसे पा लिया जाए, येही वजह है कि इमाम के सह्व का दूसरा सज्दा करते वक़्त जो शख़्स इक़्तिदा में शामिल हो, उस के लिए हुक्म येह है कि वोह दूसरा सज्दा तो अदा करेगा मगर पहले सज्दे की क़ज़ा उस के ज़िम्मे लाज़िम नहीं है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

4 वत़ने इक़ामत को छोड़ कर मुद्दते सफ़र से कम पर वाक़ेअ़ शहर में चले जाने से मुक़ीम शुमार होगा या मुसाफ़िर ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि मैं अपने आबाई अ़लाक़े से तक़रीबन 200 किलो मीटर दूर एक शहर में पन्दरह दिन ठहरने की निय्यत से मुक़ीम था। अभी चार दिन ही गुज़रे थे कि किसी काम के सिलसिले में मुझे दो दिन के लिए क़रीबी शहर, जो मुद्दते सफ़र से कम पर वाक़ेअ़ है, में जाना पड़ गया, तो ऐसी सूरत में इन दो दिनों में और वापस आने के बाद मैं पूरी नमाज़ पढ़ूंगा या क़सर करूंगा ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

मुसाफ़िरे शरई जब किसी शहर या गांव में पन्दरह दिन ठहरने की निय्यत कर ले, तो वोह जगह उस के लिए वत़ने इक़ामत बन जाती है। इस के बाद जब तक वोह वत़ने अस्ली में न चला जाए या किसी और जगह को वत़ने इक़ामत न बना ले अगर्चे वोह मुद्दते सफ़र से कम हो या सफ़रे शरई के लिए रवाना न हो जाए, उस वक़्त तक मुक़ीम ही रहेगा और पूरी नमाज़ पढ़ेगा।

पूछी गई सूरत में जब आप ने उस शहर में पन्दरह दिन रहने की निय्यत कर ली, तो वोह आप का वत़ने इक़ामत बन गया, इस के बाद चूंकि आप का अपने वत़ने इक़ामत से दूसरे शहर का सफ़र, सफ़रे शरई नहीं है और वहां पर क़ियाम भी फ़क़त़ दो दिन के लिए है पन्दरह दिनों के लिए नहीं है, तो आप का वत़ने इक़ामत बात़िल न हुवा, लिहाज़ा आप मुक़ीम ही रहेंगे, इन दो दिनों में और वापस आने के बाद पूरी नमाज़ पढ़ेंगे।

तम्बीह : याद रहे मज़्कूरा सूरत में पूरी नमाज़ पढ़ने का हुक्म उसी वक़्त है जब कि वाक़ेई आप की एक जगह पूरे पन्दरह दिन रहने की निय्यत हो और बाद में इत्तिफ़ाक़न कहीं जाना पड़ जाए। अगर पहले ही से मालूम है कि चार दिन के बाद दूसरे शहर में काम के लिए जाना होगा और वहां कम अज़ कम एक रात गुज़ारनी होगी, तो इस सूरत में येह जगह आप के लिए वत़ने इक़ामत नहीं बनेगी और दोनों जगहों में क़सर नमाज़ पढ़नी होगी, क्यूंकि फ़ुक़हाए किराम की तसरीह़ात के मुत़ाबिक़ वत़ने इक़ामत बनने के लिए किसी एक जगह पर पूरे पन्दरह दिन गुज़ारने की निय्यत करना ज़रूरी है और यहां पर पन्दरह दिन की निय्यत से मुराद पन्दरह रातें बसर करने की निय्यत है कि इक़ामत में मोतबरात बसर करना है अगर्चे दिन में किसी दूसरे मक़ाम पर जाने की निय्यत हो उस से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, जब कि दूसरा मक़ाम मुद्दते सफ़र से कम पर हो और अगर एक रात भी किसी और मक़ाम पर गुज़ारने की निय्यत हो अगर्चे वोह मुद्दते सफ़र से कम हो, तो वत़ने इक़ामत नहीं बनेगा और नमाज़ में क़सर करना ज़रूरी होगा।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

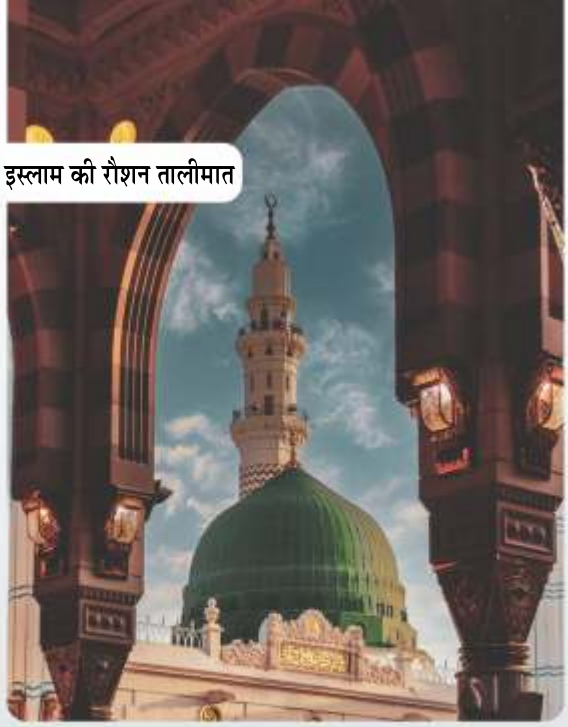

रौशन तालीमात लाने वाले

रसूले मुकर्रम صَلَّى اللهُ عليه وآلهٖ وسلَّم

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की बिअ्सत का बुन्यादी मक़्सद अल्लाह की मख़्लूक़ को कुफ़्र के अन्धेरों से हिदायत और ईमान की रौशनी की त़रफ़ लाना है।

हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को रसूल बना कर भेजने के मक़ासिद पर ग़ौर किया जाए तो चन्द चीज़ें बहुत वाज़ेह़ हैं जैसा कि अल्लाह करीम ने ख़ुद फ़रमाया : ﴿وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ(۱۰۷)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने तुम्हें न भेजा मगर रह़मत सारे जहान के लिए।[1] दूसरी आयते करीमा में है :

﴿كَمَآ اَرْسَلْنَا فِیْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ یَتْلُوْا عَلَیْكُمْ اٰیٰتِنَا وَ یُزَكِّیْكُمْ وَ یُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ وَ یُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ(۱۵۱)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जैसे हम ने तुम में भेजा एक रसूल तुम में से कि तुम पर हमारी आयतें तिलावत फ़रमाता है और तुम्हें पाक करता और किताब और पुख़्ता इल्म सिखाता है और तुम्हें वोह तालीम फ़रमाता है जिस का तुम्हें इल्म न था।[2]

क़ुरआने मजीद की ऐसी कई आयात हैं कि जो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बिअ्सत का मक़्सद बयान करती हैं। इसी त़रह़ अह़ादीसे मुबारका के मजमूए़ की त़रफ़ सरसरी नज़र की जाए तो मालूम होता है कि हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुद ब नफ़्से नफ़ीस कई रिवायात में अपनी मुबारक बिअ्सत के मक़्सद को बयान फ़रमाया है। मक़ासिदे बिअ्सत पर मुश्तमिल उन ही अह़ादीस में से चन्द यहां ज़िक्र की जाती हैं :

एक बार जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की गई : आप मुशरिकीन के ख़िलाफ़ दुआ़ क्यूं नहीं करते तो फ़रमाया : إنّما بُعِثْتُ رَحْمَةً وَلَمْ اُبْعَثْ عَذاباً यानी मुझे तो रह़मत ही बना कर भेजा गया है और मुझे अ़ज़ाब के लिए नहीं भेजा।[3]

एक और मौक़अ़ पर फ़रमाया :

اِنِّی لَمْ اُبْعَثْ لَعَّانًا، وَاِنَّمَا بُعِثْتُ رَحْمَةً

यानी बेशक मैं लानत करने वाला बना कर नहीं भेजा गया मैं तो सिर्फ़ रह़मत बना कर भेजा गया हूं।[4]

इन दोनों रिवायात से साफ़ ज़ाहिर है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बिअ्सत का मक़्सद लानत या अ़ज़ाब नहीं बल्कि रह़मत ही रह़मत है। मुसलमानों पर आप की ख़ास रह़मत है और रह़मते आ़म्मा काफ़िरों पर भी है यूं कि ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकत से दुन्या में कुफ़्फ़ार पर अ़ज़ाब आना बन्द हुवा। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमेशा कुफ़्फ़ार को इस्लाम की दावत दे कर रह़मते एज़्दी से क़रीब करने की कोशिश फ़रमाई। जो रह़मत से क़रीब करने के लिए भेजा गया हो वोह रह़मत से दूर कैसे कर सकता है। इस लिए आप ने फ़रमाया : اِنِّی لَمْ اُبْعَثْ لَعَّانًا तर्जमा : मैं लअ़्न (यानी लानत करने वाला) बना कर नहीं भेजा गया।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक और ह़दीसे पाक में अपनी बिअ्सत का मक़्सद यूं बयान फ़रमाया : اِنَّمَا بَعَثَنِی اللّٰهُ مُبَلِّغًا وَلَمْ يَبْعَثْنِی مُتَعَنِّتًا यानी अल्लाह करीम ने मुझे मुबल्लिग़ बना कर भेजा है, मुझे मुतशद्दिद बना कर नहीं भेजा।[5]

इस रिवायत में हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी बिअ्सत का मक़्सद तब्लीग़ को क़रार दिया कि जिन चीज़ों को ह़लाल क़रार दिया गया है वोह भी बता दूं और जिन्हें ह़राम क़रार दे कर उन से रोक दिया गया है उन्हें भी बयान कर दूं।

एक रिवायत में यूं बयान फ़रमाया है : وَاِنَّمَا بُعِثْتُ مُعَلِّمًا यानी मैं तो मुअ़ल्लिम ही बना कर भेजा गया हूं।[6]

इस रिवायत में हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने तशरीफ़ लाने का मक़्सद येह बताया कि मुझे मुअ़ल्लिम, उस्ताद और सिखाने वाला बना कर भेजा गया है। ख़याल रहे कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर्चे सब से बड़े इबादत गुज़ार भी हैं लेकिन हुज़ूर की इ़बादत अ़मली तालीम है। लिहाज़ा आप नमाज़ पढ़ते हुए भी मुअ़ल्लिम हैं। यूं आप का इबादात करना रिज़ाए इलाही के लिए भी है और उम्मत को सिखाने के लिए भी। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी का अस्ल मक़्सद तालीम है रब फ़रमाता है : ﴿وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ﴾ तर्जमए कन्जुल इरफ़ान : और (तुम्हें) किताब और पुख़्ता इल्म सिखाता है।[7]

एक रिवायत में मक़्सदे बिअ़सत यूं बयान फ़रमाया : اِنَّ اللهَ بَعَثَنِيْ بِتَمَامِ مَكَارِمِ الْاَخْلَاقِ وَكَمَالِ مَحَاسِنِ الْاَفْعَالِ यानी अल्लाह करीम ने मुझे तमाम मकारिमे अख़्लाक़ और महासिने अफ़्आल की उम्दगी से नवाज़ कर भेजा है।[8] एक और रिवायत में है : بُعِثْتُ لِاُتَمِّمَ مَكَارِمَ الْاَخْلَاقِ यानी मैं महासिने अख़्लाक़ की तक्मील के लिए ही भेजा गया हूं।[9] हज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इन अल्फ़ाज़ से रिवायत ज़िक्र करते हैं : بُعِثْتُ لِاُتَمِّمَ حُسْنَ الْاَخْلَاقِ यानी मैं हुस्ने अख़्लाक़ की अक़्दार को मुकम्मल करने के लिए भेजा गया हूं।[10]

इमाम बुख़ारी व मुस्लिम के उस्ताद साहिब ने एक रिवायत इन अल्फ़ाज़ से नक़्ल की है : اِنَّمَا بُعِثْتُ لِاُتَمِّمَ صَلَاحَ الْاَخْلَاقِ यानी मैं तो अच्छे अख़्लाक़ को मुकम्मल करने के लिए ही भेजा गया हूं।[11]

हज़रते इमाम अहमद बिन हम्बल ने इन अल्फ़ाज़ से रिवायत ज़िक्र की है : اِنَّمَا بُعِثْتُ لِاُتَمِّمَ صَالِحَ الْاَخْلَاقِ यानी मैं तो उ़म्दा अख़्लाक़ को मुकम्मल करने के लिए ही भेजा गया हूं।[12]

हज़रते इमाम तहावी हनफ़ी लिखते हैं : हमारे नज़दीक इस का माना येह है कि अल्लाह पाक ने हुज़ूरे पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस लिए मबऊ़स फ़रमाया है ताकि आप लोगों के लिए उन के दीन की तक्मील फ़रमा दें, और अल्लाह पाक का येह फ़रमान ﴿اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ﴾ तर्जमए कन्जुल ईमान : आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल कर दिया[13] इसी माना व मफ़्हूम की वोह आयत है जो अल्लाह पाक ने हुज़ूरे अकरम पर नाज़िल फ़रमाई है, लिहाज़ा अल्लाह पाक का हुज़ूर को दुन्या में भेजना इस लिए था कि आप लोगों के लिए उस दीन की तक्मील फ़रमाएं कि जिस पर आप से पहले अम्बियाए किराम अ़मल पैरा रहे हैं, फिर अल्लाह पाक ने इस आयत ﴿اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ﴾ को नाज़िल फ़रमा कर इस दीन के मुकम्मल होने की ख़बर दी। इक्माल से मुराद इतमाम है। और येही माना हुज़ूर के फ़रमान : "بُعِثْتُ لِاُتَمِّمَ صَالِحَ الْاَخْلَاقِ" में भी मज़्कूर है और "صَالِحَ الْاَخْلَاقِ" का माना "صَالِحَ الْاَدْيَانِ" यानी तमाम अदयान की इस्लाह़ है और वोह दीने इस्लाम से हुई है।[14]

हज़रते अ़ल्लामा इब्ने अ़ब्दुल बर मालिकी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस रिवायत के तहत लिखते हैं : "صَالِحَ الْاَخْلَاقِ" में तमाम तर सलाह़ व ख़ैर, दीन, फ़ज़ाइल, मुरव्वत, भलाई और अ़दलो इन्साफ़ सब कुछ शामिल है, इसी वजह से तो हुज़ूर को इन सिफ़ात की तक्मील के लिए भेजा गया है। उ़लमाए इस्लाम ने फ़रमाया : अल्लाह पाक ने अपने इस फ़रमान : ﴿اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآئِ ذِی الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ (۹۰)﴾ तर्जमए कन्जुल ईमान : बेशक अल्लाह हुक्म फ़रमाता है इन्साफ़ और नेकी और रिश्तेदारों के देने का और मन्अ़ फ़रमाता है बे हयाई और बुरी बात और सरकशी से तुम्हें नसीहत फ़रमाता है कि तुम ध्यान करो[15] में तमाम नेक आमाल, फ़ज़ीलत और उ़म्दा अख़्लाक़ी सिफ़ात को जम्अ़ फ़रमा दिया है।[16]

---

(1)پ17،الانبیاء:107 (2)پ2، البقرۃ:151 (3)شعب الایمان،2/144، حدیث: 1403 (4) مسلم،ص1074،حدیث:6613 (5)ترمذی، 5/211، حدیث: 3329 (6)ابن ماجہ،1/150،حدیث:229 (7)پ2، البقرۃ: 151 (8) معجم الاوسط،5/153، حدیث:6895(9)نوادر الاصول،1/1107، حدیث: 1425 (10)موطأ للامام مالک، 2/404، حدیث:1723 (11)مصنف ابن ابی شیبہ،16/498،حدیث: 32433 (12)مسند احمد، 14/512، حدیث:8952 (13)پ6،المائدۃ:3(14)شرح مشکل الآثار،11/262، تحت الحدیث:4432 (15)پ14،النحل:90(16)التمہید،10/527۔

काम की बातें

1 किसी बात का अच्छे अन्दाज़ से जवाब देने में आप का मुत़ालआ़, आप का मुशाहदा और आप का तजरिबा बहुत कार आमद होता है।

2 जिस इन्सान में पढ़ने का शौक़ हो, सीखने का जज़्बा हो और समझने की सलाहि़य्यत हो और साथ में अल्लाह पाक की रह़मत शामिल हो तो फिर शख़्सिय्यत में निखार पैदा होता है।

3 जिस शख़्स में आगे बढ़ने का शौक़ होता है वोह सीखने से कभी पीछे नहीं हटता बल्कि हमेशा लर्निंग मोड (Learning Mode) में होता है ऐसा शख़्स आहिस्ता आहिस्ता तरक़्क़ी करता चला जाता है।

4 सीखने का एक फ़ाएदा येह भी होता है कि जब हमें कोई नई बात मालूम होती है तो वोह हमारी जहालत को ख़त्म करती है।

5 अगर आप सीखने पर तय्यार हैं और सिखाने पर ह़रीस हैं तो येह दोनों चीज़ें आप के इ़ल्म के कुंवें को भर देती हैं।

6 इ़ल्म और दौलत में एक फ़र्क़ येह भी है कि इ़ल्म बांटने से बढ़ता है जब कि दौलत बांटने से कम होती है।

7 मुआ़शरे के बिगड़े हुए ह़ालात को सुधारने के लिए हम में से हर एक की ज़िम्मेदारी बनती है كُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهٖ तुम में हर एक से उस की रिआ़या के बारे में सुवाल किया जाएगा, इस्लाम की एक ख़ुसूसिय्यत येह भी है कि उस ने अपने कलिमा पढ़ने वाले को ग़ैर ज़िम्मेदार नहीं छोड़ा।

8 जब कोई काम मश्वरे से किया जाए और बाद में कोई नुक़्सान हो जाए तो फिर किसी एक बन्दे को शर्मिन्दगी नहीं होती बल्कि नुक़्सान इज्तिमाई त़ौर पर बरदाश्त करने का ज़ेहन बनता है।

9 क़बूलिय्यते ह़क़ का जज़्बा होना चाहिए, बात करने वाला चाहे छोटा हो या बड़ा सीनियर हो या जूनियर।

फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मदीनए मुनव्वरा के नौजवानों से मश्वरा करते थे क्यूंकि उन में यंग ब्लड होता है चढ़ता ख़ून होता है।

10 आप लोगों के लिए तिन्का बनें फांस न बनें क्यूंकि तिन्का किसी काम में आ जाता है जब कि फांस चुभती है, अगर आप में फांस वाली त़बीअ़त है तो आप को कोई क़बूल नहीं करेगा।

11 इन्सान की आ़दात बड़ी अहमिय्यत रखती हैं अगर आप का चेहरा और जिस्म ख़ूबसूरत है मगर आ़दतें बुरी हैं और लोगों को तक्लीफ़ देती हैं तो अ़वाम ऐसे शख़्स को क़बूल नहीं करती।

12 मीडिया को चाहिए कि अ़वाम को सच और ह़क़ बताए और वोह बात बताए जो शरीअ़त के मुत़ाबिक़ हो और कल बरोज़े क़ियामत अल्लाह के सामने शर्मिन्दगी न हो।

13 मुआ़शरे के ओ़हदे दार और साहि़बे इक़्तिदार लोगों की येह ज़िम्मेदारी है कि जो मूवीज़ इस्लाम की तालीमात के ख़िलाफ़ और मुआ़शरे की अख़्लाक़ी अक़्दार को तबाह करती हैं उन पर पाबन्दी आ़इद करने के लिए अपना किरदार अदा करें।

14 मीडिया पर आने वाले अफ़राद की छान बीन होनी चाहिए, हम एयरपोर्ट पर देखते हैं कि एक बन्दा वॉक थ्रू गेट से गुज़रता है फिर मशीनों के ज़रीए़ उस की चेकिंग होती है फिर सी सी टी वी कैमेरों के ज़रीए़ भी बन्दों को देखा जा रहा होता है तो जब जान की हि़फ़ाज़त के लिए इतना एहतिमाम किया जाता है तो ईमान की हि़फ़ाज़त के लिए भी मीडिया पर आने वाले की चेकिंग होनी चाहिए।

15 लोगों का रुजहा़न नेकियों की त़रफ़ कम होता है और गुनाहों की त़रफ़ ज़ियादा होता है इस की वजह येह है कि जन्नत को तकालीफ़ और परेशानियों में घेरा हुवा है और जहन्नम को आसाइशों और ख़्वाहिशों की पैरवी में घेर दिया गया है, तो इस वजह से जहन्नम की त़रफ़ बढ़ने वालों की तादाद हमें ज़ियादा नज़र आती है।

16 नेकियों की आ़दत और गुनाहों से छुटकारे के लिए माहौ़ल की तब्दीली ज़रूरी है, अगर आप नेकियों भरे माहौ़ल में रहेंगे तो नेकियां आप की आ़दत का हि़स्सा बन जाएंगी इसी त़रह़ गुनाह भरे माहौ़ल में रहने से गुनाह भी आ़दत का हि़स्सा बन जाते हैं।

17 ईमान और एतिक़ाद की बुन्याद पर आमाल की इ़मारत खड़ी होती है, ग़ैर मुस्लिम ब ज़ाहिर अच्छे नज़र आने वाले आमाल करता है मगर उस को सवाब नहीं मिलता क्यूंकि उस का ईमान नहीं है।

18 अगर किसी चीज़ के बारे में फ़ैसला करना हो तो पहले तह़म्मुल से सोचिए, किसी से मुशावरत करनी हो तो कीजिए फ़ौरन किसी बात का फ़ैसला करने के बाद बाज़ औक़ात अफ़्सोस होता है।

19 अगर कोई ज़ाहिरी त़ौर पर मज़हबी हुल्ये में हो और वोह बद अख़्लाक़ हो तो लोग उस की बुराई करते हैं और जो मज़हबी हुल्ये में न हो लेकिन अच्छे अख़्लाक़ का मालिक हो तो लोग उस की तारीफ़ करते हैं।

20 सिर्फ़ मुस्कुरा कर या ख़न्दा पेशानी से मुलाक़ात करना येह अख़्लाक़ नहीं है बल्कि अख़्लाक़ में सब्र भी है, इस्तिक़ामत भी है, लोगों के हुक़ूक़ की अदाएगी भी है, अख़्लाक़ में मुआ़फ़ करना भी है।

21 तब्लीग़ का बुन्यादी फ़ाएदा येह है कि लोग उस का असर क़बूल करें, असर बन्दा उसी का क़बूल करता है जिस से मुतअस्सिर है।

22 तालीम मुकम्मल होने पर सर्टीफ़िकेट और डिग्री मिलने के बाद बन्दे के अन्दाज़ में कुछ तब्दीली आ जाती है, अगर येह तब्दीली मुस्बत है तो आप को और आप के साथ वालों को फ़ाएदा पहुंचाती है और अगर मन्फ़ी तब्दीली है तो आप को और आप के साथ वालों को नुक़्सान होता है।

23 डिग्री मिलने के बाद इन्सान को तवाज़ोअ़ इख़्तियार करना चाहिए, तकब्बुर से बचना चाहिए, अपनी बात को फ़ौक़िय्यत देने वाले अन्दाज़ से बचना चाहिए क्यूंकि येह ऐसी बुरी आ़दात हैं कि जिस क़ाबिल तरीन आदमी के अन्दर होंगी तो लोगों को उस से दूर कर देती हैं।

24 जिस के मुंह से बदबू आती हो तो लोग उस के भी दोस्त बन जाते हैं मगर जिस के किरदार से बदबू आए तो लोग उस के दोस्त नहीं बनते।

25 मजलिस की जो बातें सिर्फ़ शुरकाए मजलिस ही के लिए हों तो वोह बातें अमानत होती हैं जो बाहर किसी से नहीं करनी होतीं अगर कोई करता है तो ख़ियानत करता है।

26 अगर किसी का सुवाल चुभता हुवा हो तो उस का जवाब चुभता हुवा नहीं होना चाहिए क्यूंकि आग पानी से बुझती है, आग से नहीं बुझती।

ग़ौसे पाक رحمۃ اللہ علیہ की नसीहतें

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे पाक ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عزوجل बहुत ही प्यारा महीना रबीउ़ल आख़िर तशरीफ़ ला चुका है, इस मुबारक महीने को पीराने पीर, पीरे दस्तगीर, रौशन ज़मीर, सरकारे ग़ौसे आज़म, ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से ख़ास निस्बत है । इस माह में बड़ी ग्यारहवीं शरीफ़ ख़ूब धूम धाम से मनाई जाती है। आइए ! हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की सबक़ आमोज़ नसीह़तें मुलाह़ज़ा करते हैं :

हर मुसलमान पर 3 बातें लाज़िम हैं

हुज़ूर ग़ौसे पाक, शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हर मुसलमान पर हर ह़ाल में 3 बातें लाज़िम हैं : 1 शरीअ़त के हुक्म पर अ़मल करे 2 शरीअ़त की मन्अ़ की हुई बातों से बचता रहे 3 तक़्दीर पर हमेशा राज़ी रहे।

हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मज़ीद फ़रमाते हैं :

- मुसलमान की अदना ह़ालत येह है कि वोह किसी वक़्त भी इन तीन बातों में से किसी एक से भी ख़ाली न हो
- उस का दिल इन तीन बातों का पुख़्ता इरादा करता रहे
- बन्दा अपने आप से येह तीन बातें बयान करता रहे
- और अपने आज़ा को हर वक़्त इन में मसरूफ़ रखे ।[1]

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे पाक ! ग़ौर फ़रमाइए ! कितनी मुख़्तसर और कैसी ज़बरदस्त नसीह़त है । शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस मुख़्तसर नसीह़त में पूरे दीन का ख़ुलासा बयान फ़रमा दिया है ।[2]

अल्लाह पाक का प्यारा बनाने वाला अ़मल

हुज़ूर ग़ौसे आज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : ऐ मालदारो ! अगर दुन्या व आख़िरत की भलाई चाहते हो तो अपने माल के ज़रीए़ ग़रीबों से हमदर्दी करो ![3]

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे पाक ! हुज़ूरे ग़ौसे पाक, शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के इस मुबारक बयान से मालूम हुवा लोगों की मदद करना, ग़रीबों, मिस्कीनों, यतीमों से हमदर्दी करना, उन्हें फ़ाएदा पहुंचाना चाहिए । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عزوجل ! हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ख़ुद भी बहुत हमदर्दी करने वाले, बहुत शफ़ीक़ और मेहरबान थे ।

दीन को नुक़्सान पहुंचाने वाली चार बातें

हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने मद्रसे में बयान करते हुए फ़रमाया : तुम्हारे दीन का नुक़्सान चार बातों में है : 1 तुम अपने इ़ल्म पर अ़मल नहीं करते 2 जो नहीं जानते वोह करते हो 3 जो तुम नहीं जानते, उसे सीखने की कोशिश नहीं करते, लिहाज़ा बे इ़ल्म रह जाते हो 4 लोगों के लिए इ़ल्मे दीन के रास्ते में रुकावट बनते हो ।[4]

ज़िन्दगी को ग़नीमत जानो...!

हुज़ूर ग़ौसे पाक, शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : ऐ लोगो...! लपक पड़ो...! जब तक ज़िन्दगी का दरवाज़ा खुला हुवा है, अपनी सांसों को ग़नीमत जानो, अ़न क़रीब येह दरवाज़ा बन्द कर दिया जाएगा। जब तक तुम में त़ाक़त व हिम्मत है, नेक आमाल को ग़नीमत जानो ! जब तक तौबा का दरवाज़ा खुला हुवा है, इसे ग़नीमत जानो ! दुआ़ का दरवाज़ा खुला हुवा है, दुआ़ मांगने को ग़नीमत जानो ! नेक लोगों की सोहबत में बैठने का दरवाज़ा खुला है, इसे ग़नीमत जानो !

मज़ीद फ़रमाया : (लोगो !) जब तुम्हें मौत आएगी, तुम ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हो जाओगे मगर उस वक़्त बेदार होने का कोई फ़ाएदा नहीं है।[5]

मौत की याद, सब्र और तवक्कुल को अपने पर लाज़िम करो !

ऐ लोगो ! तुम पर लाज़िम है कि ❶ मौत को याद करो ! ❷ मुसीबत पर सब्र करो ! ❸ और हर ह़ाल में अल्लाह पाक पर भरोसा रखो...! जब येह तीनों औसाफ़ तुम्हारे अन्दर पूरी त़रह़ पैदा हो जाएंगे तो तुम्हें मौत इस ह़ालत में आएगी कि मौत को याद करने के सबब तुम ज़ाहिद बन चुके होगे, सब्र के ज़रीए़ तुम अल्लाह पाक की बारगाह से मन मानते इन्आ़म पाओगे तो तवक्कुल के ज़रीए़ अल्लाह पाक के साथ तुम्हारा तअ़ल्लुक़ मज़बूत़ हो जाएगा।[6]

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे पाक ! ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! देखिए ! हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की कैसी आला, ह़िक्मत भरी और ग़फ़्लत से बेदार कर देने वाली नसीह़तें हैं, हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه हमारे पीर हैं, पीराने पीर हैं, काश ! हम आप की इन नसीह़तों पर अ़मल करने वाले बन जाएं।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) فتوح الغیب، ص17 (2) شرح فتوح الغیب، ص10 ماخوذاً (3) فتح الرحمٰن، ص127 (4) الفتح الربانی، المجلس الخامس، ص37-38 ملتقطاً (5) الفتح الربانی، المجلس الرابع، ص31 تا 33 ملتقطاً (6) الفتح الربانی، المجلس الرابع، ص33 ملتقطاً۔

मेयार (standard)

एक एक्सपो सेन्टर (Expo centre) में इस्लामी किताबों की नुमाइश लगी हुई थी, चन्द दोस्त इकठ्ठे वहां पहुंचे, सैंकड़ों किताबों के दर्जनों स्टॉल्ज़ का विज़िट किया, किसी ने महज़ ख़ूब सूरत टाइटल्ज़ वाली किताबें, किसी ने सिर्फ़ नए नए मौज़ूआत वाली किताबें तो किसी ने इन चीज़ों के साथ साथ आसान और आ़म फ़हम मुस्तनद मवाद पर मुश्तमिल मालूमाती किताबें ख़रीदीं।

फ़र्क़ क्यूं ?

क़ारेईन ! इतनी सारी किताबों में से हर दोस्त ने अलग किताब सिलेक्ट की। सिलेक्शन में इस फ़र्क़ की कई वुजूहात मुम्किन हैं उन में से एक अहम और नुमायां सबब है मेयार (Standard) ! मेयार वोह पैमाना (Scale) है जिस की बुन्याद पर किसी भी शै की पर्फ़ोर्मन्स और रिज़ल्ट को जांचा जा सकता है।

मेयार का इस्लामी तसव्वुर

मेयार का तसव्वुर (Concept) इस्लामी तालीमात में भी मौजूद है, जैसा कि ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाले का मेयार तक़्वे को क़रार दिया गया है, क़ुरआने करीम में है :

﴿اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह के यहां तुम में ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोह जो तुम में ज़ियादा परहेज़गार है। (پ۲۶،الحجرات:۱۳)

इसी त़रह़ मुतअ़द्दद फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में भी कामिल मोमिन, अच्छे पड़ोसी, अच्छे शौहर और अच्छी बीवी जैसी कई चीज़ों के मेयार बयान किए गए हैं, मसलन एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : "मुझे येह कैसे मालूम हो कि मैं ने अच्छा काम किया या बुरा ?" तो प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुम अपने पड़ोसी को येह कहते सुनो कि तुम ने अच्छा किया तो वाक़ेई तुम ने अच्छा काम किया और जब येह कहते सुनो कि तुम ने बुरा किया तो वाक़ेई तुम ने बुरा काम किया।"

(ابن ماجہ،۴/۴۷۸،۴۲۲۲،حدیث:۴۲۲۳)

रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : बेशक सब से अच्छी कमाई उन ताजिरों की है जो बात करें तो झूट न बोलें, अमीन बनाए जाएं तो ख़ियानत न करें, वादा करें तो ख़िलाफ़ वर्ज़ी न करें, कोई चीज़ ख़रीदें तो उस की मज़म्मत न करें, जब फ़रोख़्त करें तो उस की बेजा तारीफ़ न करें और जब उन पर क़र्ज़ हो तो टाल मटोल न करें और उन का किसी पर क़र्ज़ हो तो उस पर तंगी न करें।

(شعب الایمان،۴/۲۲۱،حدیث:۴۸۵۴)

इन्तिख़ाब में मेयार का ख़याल

इस का मुशाहदा और तजरिबा आप को भी होगा कि

1 बच्चों की तालीम के लिए कई त़रह़ के इस्लामिक स्कूल्ज़, मदारिस और जामिआ़त खुले हैं लेकिन लोग अपने अपने मेयार के मुत़ाबिक़ उन में से किसी एक को चुनते हैं।

2 सफ़र के लिए कई बस कम्पनियां, ट्रेनें और ऐयर लाइन्ज़ दस्तियाब होती हैं लेकिन लोग सहूलतों और टाइम की पाबन्दी वग़ैरा को मेयार ठहराते हुए किसी ख़ास बस या ट्रेन या फ़्लाइट का इन्तिख़ाब करते हैं।

3 होटलों की लाइन लगी होती है लेकिन गाहकों की लाइन एक या दो होटलों पर ज़ियादा होती है, लोग दूर दूर से वहां खाना खाने आते हैं।

4 दर्ज़ी, मोची, पलम्बर, इलेक्ट्रीशियन, मिकेनिक और इसी त़रह़ के दीगर सैकड़ों कारीगर अपनी महारत के मुत़ाबिक़ काम करने के लिए मौजूद होते हैं लेकिन गाहक उसी से काम करवाते हैं जिस से मुत़मइन हो जाते हैं।

5 दीनी ख़िदमत करने वाले कई इदारे और तन्ज़ीमें मैदाने अ़मल में होती हैं लेकिन ज़ियादा तर मुसलमान उसी तन्ज़ीम से वाबस्ता होते हैं जिस की कारकर्दगी शानदार और मुआ़मलात खुली किताब की त़रह़ होते हैं जैसा कि दीनी तन्ज़ीम दावते इस्लामी।

6 सोशल मीडिया और मीडिया पर एक से बढ़ कर एक दीनी कान्टेन्ट मौजूद होता है लेकिन कुछ के फ़ॉलोवर्ज़ लाखों में और दूसरे के चन्द सौ होते हैं।

मेयार को तरजीह़

बहर ह़ाल येह एक ह़क़ीक़त है कि लोग मेयार को तरजीह़ देते हैं, लिहाज़ा अगर आप कारोबार करते हैं, डॉक्टर या ट्रान्सपोर्टर हैं, इस्लामी तालीमी इदारा चलाते हैं, मुफ़्तिए इस्लाम, आ़लिमे दीन, मुबल्लिग़, इमाम, ख़त़ीब, उस्ताज़, राइटर, ट्रान्सलेटर, सोशल मीडिया एक्टिविस्ट वग़ैरा के त़ौर पर दीनी ख़िदमात अन्जाम देते हैं तो कामयाबी के लिए मेयार का भी ख़याल रखना बहुत ज़रूरी है वरना सोचने की बात है कोई शख़्स आप के पास क्यूं आएगा ? आप को क्यूं सिलेक्ट करेगा ?

मेयार के ह़वाले से टिप्स

1 अपने मेयार को मुनासिब से बेहतर और बेहतर से बेहतरीन कैसे बनाना है ? इस ह़वाले से अपने शोबे के माहिरीन से मुशावरत करें और इन से राहनुमाई लें। मिसाल के त़ौर पर अगर आप दरज़ी हैं तो सारे शहर में आप से बेहतर सिलाई करने वाला कोई न हो।

2 आप का मेयार ह़क़ीक़ी हो न कि बनावटी, इस फ़र्क़ को यूं समझिए कि आप ने पंजों के बल खड़े हो कर अपना क़द बड़ा साबित कर दिया लेकिन जब पांव की एड़ियां ज़मीन पर लगवाई गईं तो आप के लम्बे क़द का पोल खुल गया।

3 मश्हूर है : First Impression is the Last Impression इस लिए जिस से पहली मरतबा डीलिंग करें उस पर अच्छा तअस्सुर छोड़ें, अ़मली और क़ौली त़ौर पर कोई ग़ैर अख़्लाक़ी ह़रकत न करें, मैं ने एक बाबाजी को देखा जिन्हों ने फ़्रूट की रेढ़ी लगा रखी थी, वोह किसी न किसी वजह से गाहक से लड़ना शुरूअ़ कर देते थे, किसी ने रेट कम करने का कहा या मर्ज़ी के फल चुनना चाहे तो वोह उस पर चढ़ाई कर देते थे। जिस का नतीजा येह निकला कि ज़ियादा तर लोगों ने उन से फल ख़रीदने छोड़ दिए।

4 मक़्सद पाने के बाद मेयार को नज़र अन्दाज़ न करें, जैसे किसी त़ालिबे इ़ल्म ने ख़ूब मेह़नत कर के इम्तिह़ान में पोज़ीशन ले ली लेकिन बाद में सुस्त पड़ गया तो एक दिन आएगा कि वोह कमज़ोर त़लबा में शुमार होने लगेगा।

5 दीनी ख़िदमात पर मामूर ख़ुत़बा, वाइ़ज़ीन, मुबल्लिग़ीन, मस्जिद और जामिआ़ बनाने वाले अफ़राद को भी ग़ौर करना चाहिए कि लोगों को दीन की त़रफ़ राग़िब करने के लिए ख़ुश अख़्लाक़ होना, बा वक़ार लिबास ज़ेबे तन करना, मुस्कुरा कर मिलना, वादे की पाबन्दी करना, लोगों को ख़ुशियों पर मुबारक बाद देना और रंजो ग़म में ढारस बन्धाना कितना ज़रूरी है ! इस लिए उन्हें भी अपनी पर्सनालिटी को एक मेयार तक पहुंचाना ज़रूरी है।

आख़िरी और ज़रूरी बात

आला मेयार को पाने की जिद्दो जहद में शरीअ़त के अह़काम को पेशे नज़र रखना बहुत बहुत बहुत ज़रूरी है।

अल्लाह पाक हमें इस्लामी तालीमात पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तरबियते औलाद

शैख़ुल हदीस, शारेहे बुख़ारी हज़रते अल्लामा सय्यिद महमूद अहमद रज़वी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه उलूमे अक़्लिय्या व नक़्लिय्या के माहिर, मज़बूत क़लम के मालिक और दीनो सुन्निय्यत का दर्द रखने वाले जहांदीदा (Experienced) आलिमे दीन थे। आप की विलादत 1924 ईसवी में हिन्द के शहर आगरा में हुई। आप हज़रते अल्लामा अबुल बरकात सय्यिद अहमद क़ादिरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के बेटे और इमामुल मुहद्दिसीन अल्लामा अबू मुहम्मद सय्यिद दीदार अली शाह साहिब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पोते हैं। आप अपने दादाजान सय्यिद दीदार अली शाह साहिब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के क़ाइम कर्दा दारुल उलूम हिज़्बुल अहनाफ़ के फ़ाज़िल और फिर इसी अज़ीम दर्सगाह के शैखुल हदीस रहे हैं। आप ने दर्सो तदरीस के साथ साथ कई तसानीफ़ के ज़रीए भी दीन की ख़िदमत में हिस्सा लिया। बुख़ारी शरीफ़ की ज़ख़ीम शर्ह बनाम "**फ़ुयूज़ुल बारी**" लिखी। आप ने मुख़्तलिफ़ रसाइल व जराइद में इल्मी व तहक़ीक़ी मज़ामीन लिखे नीज़ आप की ज़ेरे इदारत माहनामा "**रिज़वान**" भी जारी होता रहा। फ़िक्रे अहले सुन्नत के येह अज़ीम अलम बरदार 14 अक्तूबर 1999 ईसवी को अपने ख़ालिक़े हक़ीक़ी से जा मिले, मज़ारे पुर अन्वार दारुल उलूम हिज़्बुल अहनाफ़ में है।

आप के मज़ामीन दीनो सुन्निय्यत की फ़िक्र व दर्द से भरपूर और अवाम व ख़वासे अहले सुन्नत के लिए फ़िक्र अंगेज़ होते। इसी अहमिय्यत के पेशे नज़र "**माहनामा फ़ैज़ाने मदीना**" के इस शुमारे में आप का एक मज़मून "**तरबियते औलाद**" क़ारेईन क लिए पेश किया जा रहा है:

किसी तहज़ीब की तामीर में जो हाथ तरबियते औलाद का होता है वोह शायद ही किसी और इज्तिमाई फ़ेल को हासिल हो। येही वोह बुन्यादी पथ्थर है जो आइन्दा नस्ल की कजी या उस्तुवारी[1] का ज़िम्मेदार होता है। एक ज़िन्दा दीन की हैसिय्यत से इस्लाम ने औलाद की तरबियते और उस की नश्वो नुमा की जानिब ख़ास तवज्जोह दी है और इस के मुतअल्लिक़ वाज़ेह हिदायात रखी हैं बल्कि अगर येह कहें तो बेजा न होगा कि उस ने सब से ज़ियादा ज़ोर इस बात पर दिया कि अपने बाद अपनी औलाद की इस्लाह अव्वलीन फ़र्ज़ है। इस आयत में इसी जानिब इशारा है

﴿وَاَنْذِرْ عَشِیْرَتَكَ الْاَقْرَبِیْنَ(۲۱۴)﴾ और[3] ﴿قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِیْكُمْ نَارًا﴾[2]

ख़ानदान और अहलो अयाल की इस्लाह व तरबियते वोह अहम फ़र्ज़ है जिस से ग़फ़लत न सिर्फ़ इन्फ़िरादी मुज़रत[4] का बाइस है बल्कि इस से तमाम मुआशरे को ना क़ाबिले तलाफ़ी नुक़्सान पहुंचता है। किसी एक फ़र्द का बिग़ैर इस्लाह व तरबियते के निकल जाना कई ख़ानदानों के महरूमे इस्लाह रह जाने के बराबर है। क्यूंकि ऐसे शख़्स की

नस्ल भी इसी की मसील व नज़ीर होगी और नहीं कहा जा सकता कि वोह कई पुश्तों बाद भी अपनी इस्लाह़ की त़रफ़ तवज्जोह करे या न करे।

ख़ानदान मुआ़शरे की एक ऐसी मुख़्तसर तरीन इकाई है कि इस की तालीमो तरबियत इस के सरपरसत के लिए कोई मुश्किल मस्अला नहीं। रोज़ मर्रा की मसरूफ़िय्यात और ज़िन्दगी के मशाग़िल के साथ साथ वोह इस फ़र्ज़ को बड़ी ख़ुश उस्लूबी और निहायत आसानी से अन्जाम दे सकता है और इस के ख़ुसूसी इख़्तियार व इक़्तिदार के पेशे नज़र नीज़ इन सहूलतों के बाइ़स जो उसे ह़ासिल हैं। येह ज़िम्मेदारी भी उस के सिपुर्द की गई है और ज़ाहिर है कि वोह अपने ख़ानदान के अफ़राद और अहलो अ़याल की उफ़्तादे त़ब्अ़[5] उ़यूब व मह़ासिन और आ़दातो अत़वार से जिस त़ौर पर आगाह हो सकता है किसी दूसरे के लिए इन का इह़ात़ा ना मुम्किन है। लिहाज़ा इस की तल्क़ीन व नसीह़त बा मौक़अ़, बर मह़ल और मुअस्सिर होगी। नीज़ उस का ज़ाती किरदार और अ़मली रफ़्तार भी इस सिलसिले में बहुत असर अन्दाज़ होती है। इसी लिए हुज़ूर عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया है : كُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهٖ तुम में से हर शख़्स चरवाहा यानी ज़िम्मेदार है और तुम में से हर शख़्स से उस की रइय्यत और मा तह़तों के बारे में बाज़ पुर्स होगी।[6]

आज कल जो बे चैनी व इज़्तिराब और ग़ैर मुत़मइन ह़ालात देखने में आ रहे। इन का बड़ा सबब इसी मुआ़शरती पहलू से ग़फ़्लत शिआ़री है। मुआ़शरे की बड़ी बड़ी ख़राबियां और ना क़ाबिले इ़लाज बुराइयां वालिदैन के तरबियते औलाद में तसाहुल का नतीजा हैं। वालिदैन की ज़रा सी ग़फ़्लत और कोताही आगे चल कर पूरी क़ौम के लिए मुतअ़द्दद पुर पेच मसाइल[7] का सबब बन जाती है। फिर वोही आइन्दा ज़माने में नई नस्ल की बुराइयों का रोना रोते हैं। ह़ालांकि बुन्यादी लिह़ाज़ से येह सब उन्ही की ग़फ़्लत का नतीजा है। अगर वोह इब्तिदाई उ़म्र ही से अपनी औलाद की सह़ीह़ तरबियत करते और इस फ़र्ज़ को पूरी ज़िम्मेदारी के साथ अदा करते तो ग़लत़ नताइज हरगिज़ न निकलते।

एक तल्ख़ ह़क़ीक़त :

मेरा अन्दाज़ा येह है कि इस मुआ़मले में सब से ज़ियादा कोताही और सुस्ती त़बक़ए उ़लमा से हो रही है (जिस में राक़िम भी शामिल है)[8] येह ह़ज़रात मदारिसे दीनिय्या के इन्तिज़ाम व इन्सिराम और दीनी त़लबा की तालीमो तरबियत और अ़वामो ख़वास में दीन की तब्लीग़ो इशाअ़त में मुन्हमिक हैं। क़ौम की इस्लाह़ व फ़लाह़ के लिए इन्हों ने अपनी ज़िन्दगियां वक़्फ़ कर दी हैं। लेकिन ख़ुद अपनी औलाद और लवाह़िक़ीन की दीनी तालीमो तरबियत के मुआ़मले में इन की तवज्जोह सिफ़र के बराबर है (اِلَّا ماشآءاللہ)...जिस का नतीजा येह है कि बड़े बड़े जलीलुल क़द्र उ़लमा व मशाइख़ जो अपने वक़्त में इ़ल्मो तक़्वा के आफ़्ताब व महताब बन कर चमके और जिन की तालीमो तरबियत से सैंकड़ों अफ़राद इ़ल्मो फ़ज़्ल के ज़ेवर से आरास्ता हुए। आज उन की अपनी औलाद और लवाह़िक़ीन दीनी इ़ल्म से बे बहरा और इ़ल्मो तक़्वा से कोसों दूर नज़र आती है जिन के बाप दादा उ़लूमे दीनिय्या के इमाम माने जाते थे। आज उन की औलाद इस नूर से यक्सर मह़रूम व नुफ़ूर[9] है। इस की वजह सिवाए इस के और कुछ नहीं कि येह उ़लमा व मशाइख़ दूसरों की तालीमो तरबियत में तो सरगर्मी के साथ ह़िस्सा लेते रहे और ख़ुद अपनी औलाद और ख़ानदान की इस्लाह़ व तरबियत की त़रफ़ मुत़लक़ तवज्जोह न दे सके। मक़्सद इस गुज़ारिश का सिर्फ़ इस क़दर है कि त़बक़ए उ़लमा को अपनी इस कोताही व ग़फ़्लत का नोटिस लेना चाहिए और दीनी व इ़ल्मी ख़ानदानों में ख़ुसूसन इ़ल्मे दीन से मुतअ़ल्लिक़ जो ख़ला पैदा हो रहा है उस के तदारुक के लिए ख़ुसूसी तवज्जोह करनी चाहिए।[10]

---

(1) यानी बिगाड़ या सुधार (2) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं। (پ۲۸، التحریم:۶) (3) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ मह़बूब अपने क़रीब तर रिश्तेदारों को डराओ। (پ۱۹، الشعرآء:۲۱۴) (4) नुक़्सान (5) यानी मिज़ाजे फ़ित़रत (6) بخاری،۱۵۹/۲، حدیث:۲۵۵۴ (7) बहुत से उलझे हुए मसाइल (8) औलाद की तरबियत से ग़ाफ़िल रहने वालों में ह़ज़रते मौसूफ़ का ख़ुद को शामिल करना यक़ीनन इन्तिहा दर्जे की आ़जिज़ी है। (9) यानी औलाद इ़ल्मे दीन से मह़रूम और बेज़ार है। (10) बसीरत, स. 109 ता 111

इस्लाम और अ़द्ल

दुन्या के निज़ाम को अह़सन व ख़ूब अन्दाज़ के साथ चलाने और हुस्ने मुआ़शरत क़ाइम रखने के लिए इस्लाम के दिए गए निज़ाम का एक बहुत ही अहम हि़स्सा अ़द्लो इन्साफ़ भी है।

अ़द्ल और अन्साफ़ मुआ़शरे को अम्नो अमान फ़राहम करने और लोगों को एक दूसरे के साथ ज़ुल्मो ज़ियादती करने से रोकने का बेहतरीन ज़रीआ़ है जिस की बदौलत कोई भी शख़्स किसी दूसरे पर ज़ुल्मो ज़ियादती करने और उस की मालो जान को नुक़्सान पहुंचाने से गुरेज़ करता है दुन्या में कई अ़द्लो इन्साफ़ के दावेदार आए और इन्हों ने अपनी त़रफ़ से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के उसूलो ज़वाबित़ क़ाइम किए उन से फ़ाएदा तो ज़रूर हुवा लेकिन मुकम्मल त़ौर पर इन जराइम पर कन्ट्रोल पाने में नाकाम रहे बाज़ तो अपने उसूलों की कमज़ोरी और बाज़ किसी दूसरे ख़ारिजी पहलू सिफ़ारिश या फिर किसी दबाव और लालच में आ कर उन में नाकाम दिखाई दिए लेकिन जब हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام की तशरीफ़ आवरी हुई तो आप ने उन तमाम ज़ालिमाना निज़ाम का ख़ातिमा किया और उन के मद्दे मुक़ाबिल ऐसा बेहतरीन और ज़बरदस्त क़िस्म का निज़ाम मुतआ़रिफ़ करवाया कि बड़े बड़े मुजरिम और जराइम पेशा अफ़राद भी इस के सामने सरनिगूं होने पर मजबूर हो गए और लोग इस आफ़ाक़ी निज़ाम और इस की मज़बूत़ दीवारों को तस्लीम किए बिग़ैर न रह सके और आज भी अगर दुन्या में कोई मज़बूत़ अ़द्लो इन्साफ़ का निज़ाम है तो ह़क़ीक़ी त़ौर पर येही इस्लामी निज़ाम है।

अ़द्लो इन्साफ़ के इस्लामी निज़ाम को समझने के लिए पहले येह समझना ज़रूरी है कि इस्लाम ने अ़द्लो इन्साफ़ के क़ियाम व फ़रोग़ के लिए क्या क्या इक़्दामात किए हैं ? अगर क़ुरआने करीम, अह़ादीसे करीमा और तारीख़े इस्लाम का मुत़ालआ़ करें तो इस्लाम के निज़ामे अ़द्लो इन्साफ़ के जो मुख़्तलिफ़ पहलू सामने आते हैं उन में से चन्द येह हैं।

- अल्लाह करीम के अह़कामे अ़द्ल को बयान करना
- अ़द्लो इन्साफ़ के फ़ज़ाइल बयान करना
- अ़द्लो इन्साफ़ के फ़ुक़्दान पर तम्बीह
- आ़दिल क़ाज़ी के औसाफ़ बयान करना

➢ ओहदए क़ज़ा की अहमिय्यत व नज़ाकत बयान करना

➢ अद्‌ले इस्लामी की मिसालें

➢ अद्‌लो इन्साफ़ के समरात

अद्‌लो इन्साफ़ करने का हुक्मे खुदावन्दी

अल्लाह पाक ने अद्‌लो इन्साफ़ क़ाइम करने की ताकीद फ़रमाई है, जिस के मुतअ़ल्लिक़ कुरआने मजीद में मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर इरशाद फ़रमाया :

1 ﴿اِنَّ اللّٰهَ یَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰۤى اَهْلِهَا ۙ وَ اِذَا حَكَمْتُمْ بَیْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ ؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें जिन की हैं उन्हें सिपुर्द करो और येह कि जब तुम लोगों में फ़ैसला करो तो इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करो ।(1)

2 ﴿وَ اِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَیْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الْمُقْسِطِیْنَ(۴۲)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर उन में फ़ैसला फ़रमाओ तो इन्साफ़ से फ़ैसला करो बेशक इन्साफ़ वाले अल्लाह को पसन्द हैं ।(2)

3 ﴿وَ لَا یَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰۤى اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ اِعْدِلُوْا ۟ هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम को किसी क़ौम की अ़दावत (दुश्मनी) इस पर न उभारे कि इन्साफ़ न करो इन्साफ़ करो वोह परहेज़गारी से ज़ियादा क़रीब है ।(3)

4 ﴿وَ اُمِرْتُ لِاَعْدِلَ بَیْنَكُمْ ؕ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मुझे हुक्म है कि मैं तुम में इन्साफ़ करूं ।(4)

5 ﴿قُلْ اَمَرَ رَبِّیْ بِالْقِسْطِ ۫﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ मेरे रब ने इन्साफ़ का हुक्म दिया है ।(5)

अद्‌लो इन्साफ़ करने के फ़ज़ाइल

1 आ़दिल बादशाह की दुआ़ क़बूल होती है ।(6)

2 लोगों के दरमियान इन्साफ़ करना भी सदक़ा है ।(7)

3 सुल्तान अद्‌ल करे तो उस के लिए अज्र है ।(8)

4 क़ियामत के दिन लोगों में से अल्लाह पाक को ज़ियादा प्यारा और उस के ज़ियादा क़रीब वोह होगा जो इन्साफ़ करने वाला हुक्मरान होगा ।(9)

5 इन्साफ़ करने वाले बादशाह बरोज़े क़ियामत अल्लाह पाक के कुर्ब में अ़र्श के दाईं जानिब नूर के मिम्बरों पर होंगे और येह वोह होंगे जो अपनी रिआ़या और अहलो अ़याल के दरमियान फ़ैसला करते वक़्त अद्‌लो इन्साफ़ से काम लेते थे ।(10)

अद्‌लो इन्साफ़ के फ़ुक़्दान पर वईद

1 जिस क़ौम में हक़ के साथ फ़ैसला नहीं किया जाता और कमज़ोर शख़्स ताक़तवर से बे तकल्लुफ़ अपना हक़ वुसूल नहीं कर सकता अल्लाह पाक उस क़ौम को इ़ज़्ज़त नहीं देता ।(11) 2 हज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं तुम्हारे दरमियान दो चीज़ें छोड़े जा रहा हूं जब तक तुम इन को ख़ुद पर लाज़िम न कर लो हरगिज़ भलाई न पाओगे 1 फ़ैसला करने में अद्‌लो इन्साफ़ से काम लेना 2 तक़्सीम करने में अद्‌लो इन्साफ़ से काम लेना और बेशक मैं तुम्हें एक वाज़ेह़ और सीधे रास्ते पर छोड़ कर जा रहा हूं मगर येह कि क़ौम टेढ़ी हुई तो वोह रास्ता भी उन के सबब टेढ़ा हो जाएगा ।(12)

आ़दिल क़ाज़ी के औसाफ़ बयान करना

क़ाज़ी को कैसा होना चाहिए ?

हज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : क़ाज़ी में पांच ख़स्लतें होनी चाहिएं : 1 साबिक़ा ह़ालात व अदवार से वाक़िफ़ हो 2 ह़िल्म वाला हो 3 ख़ुद्दार हो 4 परहेज़गार हो 5 मश्वरा करने वाला हो । जब येह पांच चीज़ें क़ाज़ी में पाई जाएं तो वोह क़ाज़ी है वरना इन्साफ़ के नाम पर धब्बा है ।(13)

एक रिवायत में है कि क़ाज़ी उसे मुक़र्रर किया जाए जिस में चार ख़ूबियां हों : 1 नर्मी हो लेकिन ऐसी

नर्मी भी नहीं जो कमज़ोरी पर मुश्तमिल हो 2 सख़्ती हो मगर ऐसी नहीं कि जिस में शिद्दत हो 3 किफ़ायत शिआ़र हो लेकिन ऐसा नहीं कि उस में बुख़्ल हो 4 लिहाज़ करने वाला हो लेकिन ऐसा नहीं कि ह़द से तजावुज़ कर जाए क्यूंकि इन में से एक भी सिफ़त ख़त्म होगी तो बक़िय्या तीनों ख़ुद ब ख़ुद ख़त्म हो जाएंगी ।(14)

उ़लमा ने फ़रमाया कि ह़ाकिम को चाहिए कि पांच बातों में फ़रीक़ैन के साथ बराबर सुलूक करे 1 अपने पास आने में जैसे एक को मौक़अ़ दे, दूसरे को भी दे 2 निशस्त दोनों को एक जैसी दे 3 दोनों की त़रफ़ बराबर मुतवज्जेह रहे 4 कलाम सुनने में हर एक के साथ एक ही त़रीक़ा रखे 5 फ़ैसला देने में ह़क़ की रिआ़यत करे जिस का दूसरे पर ह़क़ हो पूरा पूरा दिलाए ।(15)

त़लब करने वाले को ओ़हदए क़ज़ा सिपुर्द नहीं किया :

ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री और उन की क़ौम के दो शख़्स हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام के पास ह़ाज़िर हुए एक ने कहा : या रसूलल्लाह ! मुझे क़ाज़ी बना दीजिए और दूसरे ने भी ऐसा ही कहा, आप ने इरशाद फ़रमाया : हम उस को क़ाज़ी नहीं बनाते जो इस का सुवाल करे और न उस को जो इस की ह़िर्स रखे ।(16)

ओ़हदए क़ज़ा की अहमिय्यत व नज़ाकत बयान करना

क़ाज़ियों की अक़्साम :

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़ाज़ी तीन क़िस्म के होते हैं : दो जहन्नमी, और एक जन्नती, एक वोह जो जान बूझ कर ना ह़क़ फ़ैसले करे वोह जहन्नमी है, दूसरा जो न जानता हो और लोगों के ह़ुक़ूक़ बरबाद कर दे वोह भी जहन्नमी है और तीसरा वोह क़ाज़ी है जो ह़क़ के साथ फ़ैसले करे वोह जन्नती है ।(17)

क़ाज़ी का मन्सब बड़ा नाज़ुक :

1 क़ाज़ी आ़दिल क़ियामत के दिन तमन्ना करेगा कि उस ने दो शख़्सों के दरमियान एक फल के मुतअ़ल्लिक़ भी फ़ैसला न किया होता ।(18)

2 हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते मिक़्दाम बिन मादी कर्ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के कन्धे पर हाथ मार कर फ़रमाया : ऐ कुदैम ! तुम कामयाब हो जाओगे अगर ऐसे मरो कि न ह़ाकिम हो न ह़ाकिम के कातिब और न सरदार ।(19)

क़ाज़ी बनने से इज्तिनाब :

ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से फ़रमाया : जाओ क़ाज़ी बन कर लोगों के दरमियान फ़ैसले करो उन्हों ने कहा : अमीरुल मोमिनीन ! क्या आप मुझे मुआ़फ़ रखेंगे ? आप ने फ़रमाया : तुम इसे क्यूं बुरा समझते हो तुम्हारे बाप तो फ़ैसले किया करते थे ? इस पर उन्हों ने कहा : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है : जो क़ाज़ी बना और उस ने अ़द्लो इन्साफ़ के साथ फ़ैसले किए तो लाइक़ है कि वोह उस से बराबर बराबर छूट जाए । तो अब इस के बाद मैं क्या उम्मीद रखूं ?(20) यानी आ़दिल व मन्सफ़े क़ाज़ी के लिए येह ही ग़नीमत है कि कल क़ियामत में उस का छुटकारा हो जाए कि न पकड़ हो न सवाब मिले ।(21)

नोट : अ़द्ले इस्लामी की मिसालें और अ़द्लो इन्साफ़ के समरात पर मज़्मून अगले माह के शुमारे में शामिल किया जाएगा ।

---

(1) پ5، النسآء:58 (2) پ6، المآئدۃ:42 (3) پارہ6، المآئدۃ:8 (4) پ25، الشوریٰ:15 (5) پ8، الاعراف:29 (6) ابن ماجہ، 2/349، حدیث:1752 (7) بخاری، 2/215، حدیث:2707 (8) الکامل فی ضعفاء الرجال، 4/402 (9) ترمذی، 3/63، حدیث:1334 (10) مسلم، ص783، حدیث:4721 (11) معجم کبیر، 24/248، حدیث:635 (12) مصنف ابن ابی شیبہ، 16/95، حدیث:31251 (13) سیرت ابن جوزی، ص275 (14) مصنف عبد الرزاق، 8/232، حدیث:15367 (15) صراط الجنان، 2/227 (16) بخاری، 4/456، حدیث:7149 (17) ترمذی، 3/60، حدیث:1327 (18) مسند احمد، 9/351، حدیث:24518 (19) ابو داؤد، 3/183، حدیث:2933 (20) ترمذی، 3/60، حدیث:1326 (21) مراٰۃ المناجیح، 5/384۔

अफ़्ज़ल सदक़ा

कौन सा सदक़ा अफ़्ज़ल है ? इस ह़वाले से ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : यूं तो हर सदक़ा बहर ह़ाल अच्छा है मगर कभी बाज़ आ़रिज़ी ह़ालात में बहुत अच्छा हो जाता है ख़्वाह ख़ैरात देने वाले की हो या लेने वाले की हो या माल की जैसे तन्दुरुस्ती की ख़ैरात मरते वक़्त की ख़ैरात से बेहतर है यूंही मुत्तक़ी परहेज़गार अ़यालदार को ख़ैरात देना फ़ासिक़ को देने से बेहतर, इसी त़रह़ जिस चीज़ की उस वक़्त तंगी हो उस का सदक़ा अफ़्ज़ल है जहां पानी की तंगी हो वहां कुंवा खुदवाना बहुत बाइ़से सवाब है।[1]

इस मज़्मून में उन आमाल का तज़्किरा किया जा रहा है कि जिन को दीने इस्लाम में अफ़्ज़ल सदक़ा क़रार दिया गया है, आइए ! मालूमात में इज़ाफ़े और अ़मल करने की निय्यत के साथ 12 अह़ादीसे मुबारका पढ़िए :

1 ज़िन्दगी में अपने लिए सदक़ा

एक शख़्स ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अफ़्ज़ल सदक़े के बारे में पूछा तो इरशाद फ़रमाया : अफ़्ज़ल सदक़ा येह है कि तुम इस ह़ाल में सदक़ा करो कि तन्दुरुस्त हो, माल की ज़रूरत हो, तंगदस्ती का डर हो और मालदारी का इश्तियाक़ हो येह न हो कि जब दम गले में अटके उस वक़्त कहे कि फ़ुलां को इतना फ़ुलां को इतना, कि अब तो फ़ुलां के लिए हो ही चुका।[2]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! दुन्या से रुख़्सत होते वक़्त तो पता ही है कि येह माल अब मेरे काम आने वाला नहीं तो बजाए उस वक़्त का इन्तिज़ार करने के हमें चाहिए कि अफ़्ज़ल पर अ़मल करें और ज़िन्दगी के उस मरह़ले में सदक़ा करें कि जिस में माल की त़लब और तंगदस्ती का ख़ौफ़ भी और सेह़त व सलामती भी हो।

2 ज़बान का सदक़ा

ह़ज़रते समुरह बिन जुन्दुब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सब से अफ़्ज़ल सदक़ा ज़बान का सदक़ा है। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! ज़बान का सदक़ा क्या है ? फ़रमाया :

वोह सिफ़ारिश जिस से किसी क़ैदी को रिहाई दे दी जाए, किसी का ख़ून गिरने से बचा लिया जाए और कोई भलाई अपने भाई की त़रफ़ बढ़ा दी जाए और उस से कोई मुसीबत दूर कर दी जाए।[3]

तो अगर हमें अल्लाह पाक ने कोई मक़ाम अ़त़ा किया है, कहीं हमारा कुछ असरो रुसूख़ (Influence) है तो हमें इस को मुस्बत और नेकी के कामों में इस्तिमाल करना चाहिए, अपनी ज़बान से मख़्लूक़े ख़ुदा की मदद करना चाहिए ऐसा न हो कि हमारे मन्सब और हमारी सिफ़ारिशें ज़ालिम व मुजरिम को बचाने में लग जाएं।

3 इल्म सीखना और सिखाना

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि सब से अफ़्ज़ल सदक़ा येह है कि मुसलमान इल्म सीखे, फिर अपने इस्लामी भाई को सिखाए।[4]

4 पेट भर कर खिलाना

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सब से अफ़्ज़ल सदक़ा भूकी जान को शिकम सैर करना है।[5]

महंगाई के इस दौर में अपने रिश्तेदारों, दोस्तों पड़ोसियों वग़ैरा का ख़ास ख़याल रखें ! हमारी येह कोशिश होनी चाहिए कि अगर इस्तित़ाअ़त है तो हमारे होते हुए हमारे इर्द गिर्द कोई भूका न सोए।

5 रमज़ान में सदक़ा करना

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल किया गया कि रमज़ान के बाद कौन सा रोज़ा अफ़्ज़ल है ? फ़रमाया : रमज़ान की ताज़ीम के लिए शाबान का रोज़ा रखना। फिर पूछा गया : सब से अफ़्ज़ल सदक़ा कौनसा है ? फ़रमाया : रमज़ान में सदक़ा करना।[6]

रमज़ान तो महीना ही सवाब इकठ्ठा करने का है तो प्यारे इस्लामी भाई इस माहे मुबारक में नमाज़ रोज़ों की कसरत के साथ साथ सदक़ा व ख़ैरात में भी इज़ाफ़ा करना चाहिए।

6 कीने वाले रिश्तेदार को सदक़ा देना

ह़दीसे पाक में है : सब से अफ़्ज़ल सदक़ा वोह है जो कीना परवर (दिल में दुश्मनी रखने वाले) रिश्तेदार को दिया जाए।[7]

रिश्तेदारों से बात चीत ख़त्म करने और तअ़ल्लुक़ात तोड़ने की इस्लाम में कोई जगह नहीं, इस्लाम हमें लड़ाई झगड़े नाचाक़ियों से दूर रहने का दर्स देता है। लिहाज़ा उन रिश्तेदारों के साथ बिल ख़ुसूस ख़ैर ख़्वाही का मुआ़मला फ़रमाएं जो आप के लिए अपने दिलों में नाराज़ियां और दुश्मनियां लिए बैठे हैं, अगर आप बुरे वक़्त में उन के साथ कन्धा मिलाएंगे तो बहुत मुम्किन है उन का दिल मोम हो जाए और नफ़रतें महब्बतों में बदल जाएं।

7 रूठे हुए लोगों में सुल्ह़ करवाना

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सब से अफ़्ज़ल सदक़ा रूठे हुए लोगों में सुल्ह़ करा देना है।[8]

मोह़तरम क़ारेईन ! एक मुसलमान को ज़ेब नहीं देता कि वोह लोगों के दरमियान बिगड़ते हुए तअ़ल्लुक़ात पर ख़ुश हो या जलती पर तेल छिड़के, हमें सिर्फ़ और सिर्फ़ महब्बतें बढ़ाने में अपना हिस्सा मिलाना चाहिए।

8 दिरहम या सुवारी पेश करना

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या तुम जानते हो कि कौन सा सदक़ा अफ़्ज़ल है ? सह़ाबा ने अ़र्ज़ की : अल्लाह और उस का रसूल बेहतर जानते हैं। तो आप ने इरशाद फ़रमाया : अफ़्ज़ल सदक़ा दिरहम देना या सुवारी पेश करना है।[9]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मह़ल्ले या दफ़्तर वग़ैरा में जिन के साथ हमारे शबो रोज़ गुज़र रहे हैं, कभी उन को

पैसे या गाड़ी वग़ैरा की ज़रूरत पड़े तो ऐसे में हमें बहाने बनाने के बजाए उन की मदद करनी चाहिए।

9,10 पानी पिलाना

हज़रते सअ़द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! कौन सा सदक़ा अफ़्ज़ल है ? तो आप ने इरशाद फ़रमाया : पानी पिलाना।(10)

एक रिवायत में है : हज़रते सअ़द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरी वालिदए मोहतरमा फ़ौत हो गई हैं लिहाज़ा कौन सा सदक़ा अफ़्ज़ल है ? तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "पानी।" तो उन्हों ने एक कुंवां खुदवाया और कहा : هٰذِهٖ لِاُمِّ سَعْدٍ यानी येह कुंवां सअ़द की वालिदए माजिदा (के ईसाले सवाब) के लिए है।(11) मालूम हुवा कि ज़िन्दों के आमाल से मुर्दों को सवाब मिलता और फ़ाएदा पहुंचता है।(12)

11 बेवा या मुत़ल्लक़ा बेटी पर सदक़ा करना

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या मैं तुम को येह न बता दूं कि अफ़्ज़ल सदक़ा क्या है, वोह अपनी उस लड़की पर सदक़ा करना है, जो तुम्हारी त़रफ़ वापस हुई (यानी उस का शौहर मर गया या उस को त़लाक़ दे दी और बाप के यहां चली आई) तुम्हारे सिवा उस का कमाने वाला कोई नहीं है।(13)

मोहतरम क़ारेईन ! त़लाक़ या बेवा होने वाली ख़वातीन के साथ घर वालों के बरताव की दर्दनाक सूरते हाल कभी न कभी आप ने भी अपने इर्द गिर्द देखी होगी, अल्लाह पाक हमारी बहन बेटियों को इस आज़माइश से बचाए, लेकिन अगर कभी हमारे साथ इस त़रह़ का मुआ़मला हो भी जाए तो हमें प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तालीमात पर अ़मल करते हुए उन के साथ ख़ैर ख़्वाही वाला मुआ़मला ही करना है।

12 ग़रीब की मशक़्क़त की कमाई का सदक़ा

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, इन्हों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कौन सा सदक़ा ज़ियादा बेहतर है ? फ़रमाया : ग़रीब आदमी की मशक़्क़त और (देने में) उन से शुरूअ़ करो जिन की परवरिश करते हो।(14)

इस फ़रमाने आ़ली के दो मत़लब हो सकते हैं : एक येह कि ग़रीब आदमी मशक़्क़त से पैसा कमाए फिर उस में से ख़ैरात करे। दूसरे येह कि फ़क़ीर को ख़ुद भी ज़रूरत हो ख़ुद मशक़्क़त व तक्लीफ़ में हो इस के बा वुजूद अपनी ज़रूरत रोक कर ख़ैरात करे दूसरे की ज़रूरत को मुक़द्दम रखे, मगर येह दूसरे माना उस फ़क़ीर के लिए होंगे जो ख़ुद साबिर हो और अकेला हो बाल बच्चे न रखता हो वरना आज ख़ैरात कर के कल ख़ुद भीक मांगना यूं ही बाल बच्चों के हुक़ूक़ मार कर ख़ैरात करना किसी त़रह़ जाइज़ नहीं। हां अगर किसी के बाल बच्चे भी ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ के घर वालों की त़रह़ साबिर हों फिर वोह जनाबे सिद्दीक़ी की त़रह़ ख़ैरात कर दे तो येह उस की ख़ुसूसिय्यत है, सुल्त़ाने इश्क़ के फ़ैसले अ़क़्ल से वरा हैं।(15)

---

(1)مراٰۃ المناجیح،3/155(2)بخاری،2/234،حدیث:2748(3)شعب الایمان،6/124، حدیث:7682(4)ابن ماجہ،1/158، حدیث:243 (5)شعب الایمان،3/217،حدیث:3367(6)الترغیب والترہیب،2/72، حدیث:3-ترمذی،2/146، حدیث:663(7)مستدرک،2/27، حدیث:1515(8)الترغیب والترہیب،3/321، حدیث:6(9)معجم کبیر،10/84، حدیث:10029(10) صحیح ابن حبان،5/145، حدیث:3337(11)ابو داؤد، 2/180، حدیث:1681 (12)بہار شریعت،3/642 (13)ابن ماجہ، 4/188، حدیث: 3667-مراٰۃ المناجیح،6/584 (14)ابو داؤد، 2/179،حدیث:1677(15)مراٰۃ المناجیح،5/440۔

अह़कामे तिजारत

1 ह़रमैने त़य्यिबैन में ज़ियारतें करवाने वाले शख़्स का दुकानदार से कमीशन लेना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि हम अ़रब शरीफ़ में ज़ाइरीन को मुक़द्दस मक़ामात की ज़ियारत करवाते हैं, रास्ते में बाज़ मक़ामात पर कुछ दुकान वालों के पास गाड़ी रुकवाते हैं और दुकानदारों से पहले ही त़ै होता है कि हर मरतबा गाड़ी रोकने पर वोह हमें 200 रियाल देंगे, अब चाहे ज़ाइरीन उन दुकानों से शॉपिंग कम करें या ज़ियादा या बिल्कुल शॉपिंग न करें, हमें इस का कमीशन 200 रियाल मिलेगा, क्या हमारा इस त़रह़ कमीशन लेना, जाइज़ है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : सुवाल में मौजूद तरीक़एकार इख़्तियार कर के दुकानदार से ब्रोकरी लेना नाजाइज़ व गुनाह है।

मज़कूरा हुक्म की तफ़्सील येह है कि उ़र्फ़ के मुत़ाबिक़ यहां ब्रोकरी में ब्रोकर का बुन्यादी काम दो पार्टियों के दरमियान अ़क़्द करवाना है, जब कि सुवाल में मौजूद सूरत के मुत़ाबिक़ दो पार्टियों के दरमियान अ़क़्द करवाना मक़्सूद ही नहीं, येही वजह है कि अगर कोई भी ज़ाइर मुसाफ़िर दुकान से कुछ न ख़रीदे तो भी गाड़ी वाले को अपने रियाल मिलेंगे, सुवाल में दर्ज तफ़्सील के मुत़ाबिक़ तो येह वाज़ेह़ है कि यहां ब्रोकरी दो पार्टियों में अ़क़्द के बिग़ैर सिर्फ़ अफ़राद लाने पर त़ै हुई है जो कि ब्रोकरी में उ़र्फ़न क़ाबिले मुआ़वज़ा मन्फ़अ़त नहीं और उ़र्फ़न ना क़ाबिले मुआ़वज़ा मन्फ़अ़त पर इजारा बात़िल होता है, लिहाज़ा मज़कूरा इजारा बात़िल है।

अगर सूरते मस्ऊला की फ़िक़्ही तौज़ीह़ करते हुए ब्रोकरी को साबित न माना जाए बल्कि येह कहा जाए कि गाड़ी वाले का सिर्फ़ अफ़राद लाने पर ही इजारा है तो भी येह इजारा बात़िल है क्यूंकि हर त़रह़ के अफ़राद चाहे वोह ख़रीदारी में दिलचस्पी रखते हों या न रखते हों, उन के लाने पर इजारा भी मारूफ़ नहीं। नीज़ अगर येह गाड़ी वाला या गाईड ज़ाइरीन का अजीरे ख़ास है कि उस का वक़्त के तअ़य्युन के साथ इजारा किया गया हो तो बिके हुए वक़्त (Contracted Time) में येह दुकानदारों का काम करने वाला होगा और बिला इजाज़ते ज़ाइरीन येह भी जाइज़ नहीं, ख़ास ह़रमैने त़य्यिबैन में ज़ाइरीन, आसारे मुक़द्दसा की ज़ियारत के लिए गाड़ी या गाईड बुक करते हैं, ज़ाइरीन का मक़्सद किसी दुकान पर जाना उ़मूमन नहीं होता बल्कि येह एक ग़ैर एलानिय्या रूट होता है और दुकान पर पहुंच कर ज़ाइरीन को पता चलता है कि यहां भी आना था।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 मुराबह़ा, सूद से बचने का एक बेहतरीन ह़ल है

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले में कि ज़ैद मेरे पास आता है उसे फ़्रीज़र या मोटर साईकल लेनी है वोह मुझ से इस के लिए क़र्ज़ मांगता है, मैं ज़ैद से कहता हूं कि मैं आप को मार्केट से फ़्रीज़र नक़्द ले कर देता हूं, आप को जो क़िस्तें (Installments) और नफ़्अ़ (Profit) मार्केट में देना है वोह मुझे दे देना, वोह इस पर राज़ी हो कर मेरे साथ मार्केट जाता है, मैं उसे नक़्द में फ़्रीज़र या मोटर साईकल

ख़रीद कर दे देता हूं, इस सूरत में शरई हुक्म क्या होगा ? और जो क़ब्ज़ा करने का कहा जाता है तो उस क़ब्ज़ा करने से क्या मुराद है ? क्या मुझे वोह मोटर साईकल एक दो दिन के लिए घर ले जा कर फिर ज़ैद को देनी होगी ? या येह मुराद है कि मुझे अपने ही नाम की रसीद बनानी चाहिए।

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : पूछी गई सूरत में आप का ज़ैद के साथ खुद मार्केट जा कर नक़्द फ़्रीज़र या मोटर साईकल ख़रीदना, और उस पर क़ब्ज़ा करने के बाद नफ़्अ रख कर ज़ैद को बेचना जाइज़ है इस्तिलाह में येह मुआमला "अक़्दे मुराबहा" कहलाता है। पूछी गई सूरत में क़ब्ज़ा करने के लिए मोटर साईकल एक दो दिन के लिए घर ले जाना ज़रूरी नहीं है बल्कि इतना भी काफ़ी है कि फ़्रीज़र या बाईक सामने मौजूद हो और दुकानदार फ़्रीज़र या बाईक पर क़ब्ज़ा करने का इख़्तियार दे दे यानी यूं कहे : अपना माल ले जाओ और कैफ़िय्यत येह हो कि आप ले जाने पर क़ादिर हों और क़ब्ज़ा करने में किसी क़िस्म की कोई रुकावट न हो, इस तरह क़ब्ज़ा करने को फ़िक़्ही इस्तिलाह में "तख़्लिया" कहते हैं। जब आप का क़ब्ज़ा साबित हो गया ख़्वाह तख़्लिया के ज़रीए हुवा हो या फ़िज़ीकली उस चीज़ को अपने क़ब्ज़े में लेने से हुवा हो, तो इस के बाद ज़ैद को आप येही चीज़ बेचेंगे तो अपने माल पर क़ब्ज़ा करने के बाद बेचने का तक़ाज़ा पूरा हो जाएगा और आप का वोह चीज़ आगे बेचना जाइज़ होगा। फ़क़त अपने नाम की रसीद बनवाने से शरई क़ब्ज़ा शुमार नहीं होगा। जब कोई शख़्स सामने वाले को अपने माल की लागत बता कर फ़रोख़्त करने का पाबन्द हो तो ऐसी ख़रीदो फ़रोख़्त को बैए मुराबहा कहते हैं, आप ने सुवाल में जो तफ़्सील ज़िक्र की है, येह ऐसा ही मुआमला है और येह तरीक़ा सूद से बचने का एक बेहतरीन हल है। अलबत्ता येह ज़रूरी है कि जब भी ख़रीदो फ़रोख़्त हो उस के बुन्यादी तक़ाज़े और शराइते जवाज़ पूरी करना ज़रूरी है।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 रिश्वत में ली गई रक़म का क्या हुक्म है ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि किसी ने नफ़्सो शैतान के बहकावे में आ कर कुछ रक़म बतौरे रिश्वत ले ली हो, अब वोह उस गुनाह से ख़लासी हासिल करना चाहता है तो क्या वोह रिश्वत में ली गई रक़म किसी शरई फ़क़ीर को सदक़ा कर सकता है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : रिश्वत लेना हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है और रिश्वत लेने वाला उस माल का मालिक भी नहीं बनता। लिहाज़ा रिश्वत लेने वाले पर सब से पहले तो येह लाज़िम है कि वोह इस गुनाह से सच्ची तौबा करे और फिर जिस जिस से रिश्वत का माल लिया है उन को वापस करे और अगर वोह न रहे हों तो उन के वुरसा को वापस करे, अस्ल मालिक की मौजूदगी के बा वुजूद उसे उस का माल लौटाने की बजाए शरई फ़क़ीर को सदक़ा कर दिया तो बरिउज़्ज़िम्मा न होगा। हां अगर अस्ल मालिक और उस के वुरसा का पता न चले, न आइन्दा मिलने की उम्मीद हो और येह उन्हें तलाश करने की हत्तल इम्कान पूरी कोशिश कर चुका हो तो अब उन की तरफ़ से शरई फ़क़ीर को बतौरे सदक़ा दे सकता है। अलबत्ता अगर बाद में मालिक या उस के वुरसा मिल गए और वोह उस सदक़ा करने पर राज़ी न हों तो उन्हें उन की रक़म वापस करना होगी।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

4 मुख़्तलिफ़ टीमों का क्रिकेट टूर्नामेन्ट में रक़म लगा कर खेलना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि हमारे अलाक़े में इस तरह क्रिकेट टूर्नामेन्ट मुन्अक़िद किया जाता है कि सब टीमें तीन तीन हज़ार रुपिये मैनेजमेन्ट को जम्अ करवाती हैं और जो टीम टूर्नामेन्ट जीत जाती है उसे मैनेजमेन्ट की जानिब से मुक़र्रर कर्दा इन्आम मसलन बीस हज़ार रुपिये दिए जाते हैं जो कि तमाम टीमों से ली गई रक़म से दिए जाते हैं और बाक़ी टीमों को कुछ भी नहीं मिलता, ऐसा टूर्नामेन्ट खेलना और जीतने की सूरत में इन्आमी रक़म लेना जाइज़ है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : पूछी गई सूरत में जो तफ़्सील बयान हुई उस के मुताबिक़ ऐसा टूर्नामेन्ट खेलना क़िमार (जुवा) है जो कि गुनाहे कबीरा और नाजाइज़ व ह़राम है, और जीतने वाली टीम का दूसरी टीमों की रक़म लेना भी नाजाइज़ो ह़राम है।

इस मस्अले की तफ़्सील येह है कि टूर्नामेन्ट में हर टीम इस उम्मीद पर पैसा लगाती और अपनी क़िस्मत आज़माती है कि जीत गई तो अपने पैसों के साथ साथ दूसरी टीमों का पैसा भी ह़ासिल कर लेगी और अगर हार गई तो अपनी रक़म से भी हाथ धो बैठेगी येह क़िमार यानी जूए की सूरत है, क्यूंकि क़िमार में येही होता है कि जूए बाज़ इस उम्मीदे मौहूम पर अपना माल लगाते हैं कि या तो वोह अपने साथी का माल भी ह़ासिल कर लेंगे या अपना माल भी गंवा देंगे।

जूए के बारे में अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَ الْمَيْسِرُ وَ الْاَنْصَابُ وَ الْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ(۹۰)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! शराब और जुवा और बुत और पांसे नापाक ही हैं, शैत़ानी काम, तो इन से बचते रहना कि तुम फ़लाह़ पाओ।

(پ7، المآئدۃ: 90)

क़िमार (जूए) की तारीफ़ बयान करते हुए सय्यिदी आला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : **''उम्मीदे मौहूम पर पांसा डालना...क़िमार है।''** (फ़तावा रज़विय्या, 17 / 330) जूए से ह़ासिल किया गया माल ह़राम है, चुनान्चे इस के मुतअ़ल्लिक़ फ़तावा रज़विय्या में है : ''सूद और चोरी और ग़स्ब और **जूए का रुपिया क़त़ई ह़राम है।**'' (फ़तावा रज़विय्या, 19 / 646)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّى الله عليه واٰله وسلَّم

हज़रते इमरान बिन हसीन رضی اللہ عنہما

एक मरतबा किसी ने मश्हूर सहाबी ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन ह़सीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से एक शरई मस्अला पूछा : एक आदमी ने अपनी बीवी को एक ही मजलिस में तीन त़लाक़ें दे दीं, इस सूरत में औ़रत उस पर ह़राम हो गई या नहीं ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : एक मजलिस में तीन त़लाक़ें देने वाला गुनाहगार है और औ़रत उस पर ह़राम हो गई है, अब उसी शख़्स ने जलीलुल क़द्र सहाबी ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमते अक़्दस में येही मस्अला बता कर ह़ज़रते इमरान बिन ह़सीन की ऐ़ब जोई करना चाही तो ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने (न सिर्फ़ ह़ज़रते इमरान के जवाब की तस्दीक़ फ़रमाई बल्कि) आप के लिए दुआ़ की : इलाही ! हमारे अन्दर अबू नुजैद (ह़ज़रते इमरान बिन ह़सीन) जैसे बहुत से आदमी पैदा फ़रमा दे।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते अबू नुजैद इमरान बिन ह़सीन 7 हिजरी में इस्लाम लाए[2] सह़ीह़ क़ौल के मुत़ाबिक़ आप के वालिद साहिब भी मुसलमान हो गए थे आप ने कई ग़ज़्वात में शिर्कत की,[3] फ़त्ह़े मक्का के मौक़अ़ पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस शान से मक्का की ह़ुदूद में दाख़िल हुए कि क़बीलए ख़ुज़ाआ़ का झंडा आप के हाथ में था।[4] ह़ुनैन और त़ाइफ़ के मारिकों में भी आप प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ साथ रहे।[5] आप ने अपनी रिहाइश अपने क़बीले में रखी लेकिन ब कसरत मदीने आते रहते[6] और प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवालात पूछते रहते एक मरतबा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बैठ कर नमाज़ पढ़ने वाले शख़्स के बारे में सुवाल किया तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने खड़े हो कर नमाज़ पढ़ी वोह अफ़्ज़ल है, जिस ने बैठ कर नमाज़ पढ़ी उस के लिए खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने वाले के सवाब का आधा है, और जो लेट कर नमाज़ पढ़े उस के लिए बैठने वाले के सवाब का आधा है।[7]

इल्मी मक़ाम इल्मो फ़ज़्ल के एतिबार से ह़ज़रते इमरान बिन ह़सीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का शुमार फ़ुक़हा सहाबा में होता है।[8] फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बसरा वालों को फ़िक़्ही मसाइल की तालीम देने के लिए आप का इन्तिख़ाब किया और आप को बसरा भेजा[9] मश्हूर ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : बसरा में हमारे पास आने वालों में सब से बेहतर आ़लिम फ़ाज़िल शख़्सय्यत ह़ज़रते इमरान बिन ह़सीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की थी।[10]

जज़्बए इल्मे दीन ह़ज़रते इमरान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सर और दाढ़ी के बाल सफ़ेद हो चुके थे मगर इल्मे दीन सिखाने का जज़्बा उ़रूज पर था लिहाज़ा इस ह़ालत में भी एक सुतून से टेक लगा कर इर्द गिर्द बैठे इल्म के त़लबगारों को फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बयान करते।[11]

ह़दीस की अहमिय्यत एक मरतबा आप ने ह़दीस

बयान करना शुरूअ़ की तो एक शख़्स ने कहा : हमें किताबुल्लाह से कुछ बयान कीजिए, येह सुन कर आप नाराज़ हो गए और फ़रमाया : तुम बे वुक़ूफ़ हो, अल्लाह पाक ने किताबुल्लाह में ज़कात को तो बयान किया है मगर येह कहां फ़रमाया है कि दो सौ (दिरहम) में से पांच (दिरहम) होंगे, अल्लाह करीम ने अपनी किताब में नमाज़ का तो ज़िक्र किया है मगर येह कहां फ़रमाया है कि ज़ोहर, अ़सर और इ़शा की चार, मग़रिब की तीन और फ़ज्र की दो रक्अ़तें फ़र्ज़ हैं, अल्लाह रहीम ने क़ुरआने मजीद में त़वाफ़ का तो ज़िक्र फ़रमाया है लेकिन येह कहां बयान किया है कि त़वाफ़ और सफ़ा मर्वा के चक्कर सात हैं, हम अह़ादीस में यहां येही अह़काम बयान करते हैं अह़ादीसे मुस्त़फ़ा क़ुरआन की तफ़्सीर हैं।[12] एक मरतबा आप ने ह़दीस बयान की, कि रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ह़या भलाई ही लाती है, किसी ने कहा : किसी किताब में लिखा है कि बाज़ दफ़्आ ह़या से वक़ार और इत़मीनान मिलता है और बाज़ दफ़्आ इस से कमज़ोरी। आप ने फ़रमाया : मैं तुम्हें रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़दीस बता रहा हूं और तुम मुझ से किसी किताब की बात कर रहे हो मैं अब तुम्हें ह़दीस बयान नहीं करूंगा।[13]

फ़रमाने मुबारक ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन ह़सीन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : खाना खिलाने वाले चले गए और खाना मांगने वाले रह गए, वाज़ो नसीह़त करने वाले चले गए और ग़ाफ़िल लोग पीछे रह गए।[14]

जज का ओ़हदा छोड़ दिया एक मरतबा आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को गवर्नर बसरा की जानिब से बसरा का क़ाज़ी (यानी जज) मुक़र्रर किया गया, दो आदमी अपना झगड़ा ले कर आए, आप ने एक के ह़क़ में फ़ैसला दिया तो दूसरा कहने लगा : आप ने मेरे ख़िलाफ़ फ़ैसला दिया है, अल्लाह की क़सम ! येह ग़लत़ फ़ैसला है, येह सुन कर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه गवर्नर के पास चले आए और अपना इस्तिफ़ा पेश कर दिया, गवर्नर ने कहा : आप कुछ अ़र्सा इस ओ़हदे पर बर क़रार तो रहिए, मगर आप ने फ़रमाया : नहीं ! जब तक मैं अल्लाह का इ़बादत गुज़ार और इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी करने वाला हूं दो बन्दों के दरमियान कभी फ़ैसला नहीं करूंगा।[15]

एक मरतबा एक शख़्स ने आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के सामने सूरए यूसुफ़ पढ़ी आप ने सूरत तवज्जोह से सुनी, फिर वोह शख़्स आप से कुछ मांगने लगा, आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा : اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْن प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया है : तुम क़ुरआन पढ़ो फिर अल्लाह से सुवाल करो, अ़नक़रीब एक क़ौम आएगी जो क़ुरआन पढ़ेगी और लोगों से मांगेगी।[16]

सब्रो शुक्र और बीमारी ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन ह़सीन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا बड़े साबिरो शाकिर थे। 30 साल के त़वील अ़र्से तक पेट की बीमारी में मुब्तला रहे इस बीमारी में आप न तो खड़े होते न बैठते बस पीठ के बल लेटे रहते।[17]

फ़रिश्तों के सलाम की आवाज़ सुनाई देती ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन ह़सीन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا को फ़रिश्ते सलाम किया करते थे जिस की आवाज़ आप ख़ुद सुनते थे। फ़रमाते हैं : फ़रिश्ते मुझे सलाम किया करते थे, किसी ने पूछा : सलाम की आवाज़ आप के सर की जानिब से आती थी या पांव की त़रफ़ से ? फ़रमाया : सर की जानिब से।[18]

विसाल ह़ज़रते इमरान बिन ह़सीन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने सिने 52 हिजरी में विसाल फ़रमाया, कुतुबे अह़ादीस में आप की 130 रिवायात मिलती हैं।[19]

---

(1)مستدرک4/595، رقم:6050(2)الاعلام للزرکلی،5/70(3)معجم کبیر،18/103 (4)الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، 4/585(5)السنن الکبری للبیہقی، 3/193، حدیث: 5387(6)معجم کبیر،18/103(7)بخاری،1/379، حدیث:1116(8)الاستیعاب، 3/284(9)طبقات ابن سعد،7/7(10)الاستیعاب،3/285(11)طبقات ابن سعد،4/218(12)الزہد لابن المبارک، جز4،ص23 حدیث:92(13)مسلم،ص46، حدیث:157-شعب الایمان،6/132، حدیث:7705(14)الزہد لاحمد، ص321، رقم:1856(15)طبقات ابن سعد،4/215(16)شعب الایمان،2/533، حدیث: 2627(17)احیاء العلوم،5/70 (18)احیاء العلوم،4/353(19)الاعلام للزرکلی، 5/70۔

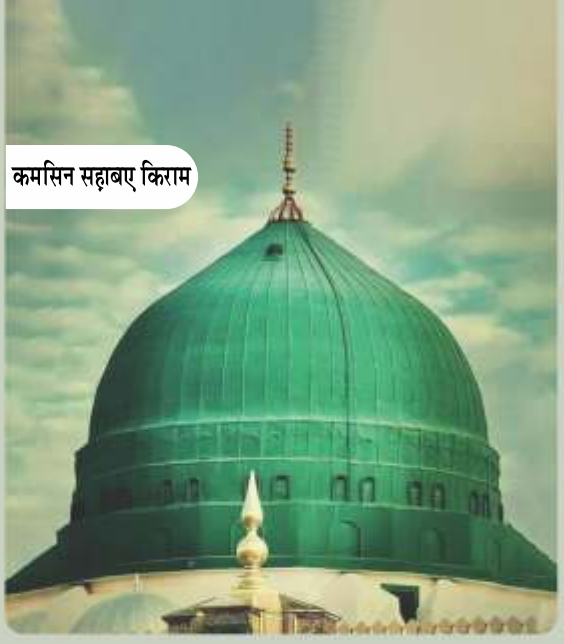

रसूले करीम ﷺ से घुट्टी का शरफ़ पाने वाले

क़ारेईने किराम ! तह़नीक यानी घुट्टी देना मुस्तह़ब है, इमाम यह़या बिन शरफ़ नववी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : बच्चा पैदा होने के बाद खजूर (या किसी भी मीठी चीज़) से घुट्टी देना मुस्तह़ब है।

घुट्टी देने का त़रीक़ा इस का त़रीक़ा येह है कि घुट्टी देने वाला खजूर को अपने मुंह में ख़ूब चबा कर नर्म करे कि उसे निगला जा सके फिर वोह बच्चे का मुंह खोल कर उस में रख दे।

घुट्टी कौन दे ? मुस्तह़ब येह है कि घुट्टी देने वाला नेक और मुत्तक़ी व परहेज़गार हो, ख़्वाह वोह मर्द हो या औरत। अगर ऐसा कोई शख़्स पास मौजूद न हो तो नौ मौलूद बच्चे को तह़नीक की ख़ातिर किसी नेक शख़्स के पास ले जाया जा सकता है।[1] जैसा कि उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि लोग अपने पैदा हुए बच्चों को रसूले करीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में लाया करते थे, आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन के लिए ख़ैरो बरकत की दुआ फ़रमाते और तह़नीक (यानी घुट्टी दिया) करते थे।[2]

घुट्टी दिलवाना सह़ाबा का अ़मल है ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़राते सह़ाबा अपने नौ मौलूद बच्चे को हुज़ूर की ख़िदमत में लाते थे हुज़ूर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खजूर चबा कर अपनी ज़बान शरीफ़ से बच्चे के तालू में लगा देते थे ताकि बच्चे के मुंह में सबसे पहले हुज़ूर का लुआ़ब शरीफ़ पहुंचे, इस अ़मल का नाम तह़नीक है।[3] नीज़ एक और मक़ाम पर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : बच्चे में पहली घुट्टी देने वाले का असर आता है और इस की सी आ़दात पैदा होती हैं।[4]

उ़लमा व मशाइख़ से घुट्टी दिलवाना शारेह़ बुख़ारी ह़ज़रते मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब बच्चा पैदा हो उ़लमा, मशाइख़, सालिह़ीन में से किसी की ख़िदमत में पेश किया जाए और वोह खजूर या कोई मीठी चीज़ चबा कर उस के मुंह में डाल दें।[5]

आइए ! रसूले करीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जिन बच्चों ने घुट्टी लेने का शरफ़ ह़ासिल किया उन के मह़ब्बत भरे चन्द वाक़िआ़त पढ़ते हैं।

इमामे ह़सन और इमामे ह़ुसैन को घुट्टी दी ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : जब ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه पैदा हुए तो मैं ने उन का नाम "ह़र्ब" रखा और मैं येह पसन्द करता था कि मुझे "अबू ह़र्ब" कुन्यत से पुकारा जाए। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (मेरे घर) तशरीफ़ लाए, ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को घुट्टी दी और मुझ से फ़रमाया कि तुम ने मेरे बेटे का नाम क्या रखा है ? तो मैं ने अ़र्ज़ की : ह़र्ब। रसूले करीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वोह ह़सन है। फिर जब ह़ज़रते हुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की विलादत हुई तो मैं ने उन का नाम भी "ह़र्ब" रखा। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए, ह़ज़रते हुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को घुट्टी दी और मुझ से पूछा कि तुम ने मेरे बेटे का नाम क्या रखा है ? तो मैं ने अ़र्ज़ की : ह़र्ब। नबिय्ये करीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वोह हुसैन है।[6]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास को घुट्टी दी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं :

(जब मैं पैदा हुवा तो) मुझे रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक कपड़े में लपेट कर लाया गया, हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने लुआ़ब मुबारक (यानी बा बरकत थूक) से मुझे घुट्टी दी ।[7]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर को घुट्टी दी

ह़ज़रते अस्मा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाती हैं कि मैं मक्का से मदीने की त़रफ़ हिजरत कर रही थी, जब मैं क़ुबा के मक़ाम पर पहुंची तो मेरे यहां बच्चे (ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) की विलादत हो गई, मैं बच्चे को ले कर रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुई और मैं ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक गोद में उस बच्चे को रख दिया, हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खजूर मंगवाई और उसे चबाया, फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना लुआ़बे दहन उस बच्चे के मुंह में डाल दिया, सब से पहले उस बच्चे के पेट में जो चीज़ दाख़िल हुई वोह रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक लुआ़ब था, फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे खजूर से घुट्टी दी और उस के लिए दुआए ख़ैरो बरकत फ़रमाई ।[8]

ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री के बेटे को घुट्टी दी

ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मेरे यहां बेटे की विलादत हुई तो मैं उसे रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ले गया, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस का नाम "इब्राहीम" रखा, उसे खजूर से घुट्टी दी और उस के लिए बरकत की दुआ फ़रमाई ।[9]

ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा अन्सारी के बेटे को घुट्टी दी

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि जब ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा अन्सारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के बेटे अ़ब्दुल्लाह पैदा हुए तो मैं उसे ले कर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तुम्हारे पास खजूरें हैं ? मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां । फिर मैं ने कुछ खजूरें निकाल कर रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश कीं, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह खजूरें अपने मुबारक मुंह में डाल कर चबाईं, फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बच्चे का मुंह खोल कर उसे बच्चे के मुंह में डाल दिया और बच्चा उसे चूसने लगा । हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अन्सार को खजूरों के साथ महब्बत है और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस बच्चे का नाम "**अ़ब्दुल्लाह**" रखा ।[10]

ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद को घुट्टी दी

ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ जब पैदा हुए तो उन के नानाजान ह़ज़रते अबू लुबाबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उन्हें एक कपड़े में लपेट कर रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश किया और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने आज तक इतने छोटे जिस्म वाला बच्चा नहीं देखा । मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बच्चे को घुट्टी दी, सर पर हाथ मुबारक फेरा और दुआए बरकत से नवाज़ा । (दुआए मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकत येह ज़ाहिर हुई कि) ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ जब किसी क़ौम (Nation) में होते तो क़द में सब से ऊंचे (Tall) नज़र आते ।[11]

ह़ज़रते नोमान बिन बशीर को घुट्टी दी

जब ह़ज़रते नोमान बिन बशीर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की विलादत हुई तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ की वालिदए मोह़तरमा ह़ज़रते अ़मरह बिन्ते रवाह़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا आप को ले कर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुईं, रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खजूर मंगवा कर चबाई, फिर उसे आप के मुंह में डाल कर उस के ज़रीए आप को घुट्टी दी ।[12]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुत़ीअ़ को घुट्टी दी

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुत़ीअ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते मुत़ीअ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ख़्वाब में देखा कि उन्हें ख़्वाब में किसी ने खजूरों की थैली दी है, उन्हों ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अपना ख़्वाब बयान किया, रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तुम्हारी कोई बीवी उम्मीद से है ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : जी हां ! बनू लैस (क़बीले) से तअ़ल्लुक़ रखने वाली बीवी उम्मीद से है । हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अ़न क़रीब इस के यहां तुम्हारा बेटा पैदा होगा । जब उस के यहां बच्चा पैदा हुवा तो वोह उसे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में लाए, प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे खजूर से घुट्टी दी, उस का नाम "अ़ब्दुल्लाह" रखा और उस के लिए बरकत की दुआ फ़रमाई ।[13]

ह़ज़रते सिनान बिन सलमा को घुट्टी दी

ह़ज़रते सिनान बिन सलमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ग़ज़वए

हुनैन के मौक़अ़ पर पैदा हुवा, मेरे वालिद को मेरी विलादत की ख़ुश ख़बरी सुनाई गई तो उन्हों ने कहा : नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दिफ़ाअ़ में तीर चलाना मुझे बेटे की ख़ुश ख़बरी से ज़ियादा महबूब है ।(14) फिर मेरे वालिद मुझे हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में लाए तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे घुट्टी दी, मेरे मुंह में लुआ़बे दहन डाला, मेरे लिए दुआ़ की और मेरा नाम ''सिनान'' रखा ।(15)

ह़ज़रते यह़या बिन ख़ल्लाद को घुट्टी दी

ह़ज़रते यह़या बिन ख़ल्लाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादत रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में हुई, उन्हें नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में लाया गया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को खजूर चबा कर घुट्टी दी और फ़रमाया : मैं उस का वोह नाम रखूंगा जो ह़ज़रते यह़या बिन ज़करिय्या علیہما السّلام के बाद किसी का नहीं रखा गया, फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन का नाम ''यह़या'' रखा ।(16)

ह़ज़रते अबू उमामा अस्अ़द बिन सहल को घुट्टी दी

ह़ज़रते अबू उमामा अस्अ़द बिन सहल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी से दो साल पहले पैदा हुए, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में लाया गया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें घुट्टी दी और उन का नाम उन के नाना ह़ज़रते अस्अ़द बिन ज़ुरारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नाम पर ''अस्अ़द'' रखा ।(17)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिस बिन नौफ़ल को घुट्टी दी

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिस बिन नौफ़ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में पैदा हुए, विलादत के बाद आप की वालिदा हिन्द बिन्ते अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا उन्हें ले कर अपनी बहन उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर आईं, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم घर में दाख़िल हुए तो ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा कि येह कौन है ? ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : येह आप के चचा ह़ारिस बिन नौफ़ल बिन्ते ह़ारिस बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब और मेरी बहन हिन्द बिन्ते अबू सुफ़्यान के बेटे हैं, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के मुंह में लुआ़बे दहन डाल कर उन्हें घुट्टी दी और उन के लिए दुआ़ फ़रमाई ।(18)

ह़ज़रते मुह़म्मद बिन साबित बिन क़ैस को घुट्टी दी

ह़ज़रते मुह़म्मद बिन साबित बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا जब पैदा हुए तो आप के वालिद साबित बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप को ले कर रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप के मुंह में लुआ़बे दहन डाल कर आप को घुट्टी दी और आप का नाम ''मुह़म्मद'' रखा ।(19)

ह़ज़रते मुह़म्मद बिन नबीत़ बिन जाबिर को घुट्टी दी

ह़ज़रते मुह़म्मद बिन नबीत़ बिन जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में पैदा हुए, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को घुट्टी दी और आप का नाम ''मुह़म्मद'' रखा ।(20)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिस बिन अ़म्र को घुट्टी दी

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिस बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में पैदा हुए और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को घुट्टी दी ।(21)

क़ारेईने किराम ! सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के येह चन्द वाक़िआ़त पढ़ कर हमें भी इन के नक़्शे क़दम पर चलते हुए अपने बच्चों को घुट्टी दिलवाने, नाम रखवाने और दुआ़ए बरकत ह़ासिल करने के लिए मशाइख़े किराम, बुज़ुर्गाने दीन और उ़लमाए कामिलीन की बारगाह में ह़ाज़िरी देनी चाहिए ताकि पैदा होते ही हमारे बच्चों को नेक लोगों की बरकतें मिलें ।

अल्लाह पाक हमें इन बातों पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए । اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)شرح مسلم للنووی، 14/122(2)مسلم، ص913، حدیث:5619(3)مراۃ المناجیح، 5/647(4)اسلامی زندگی، ص20(5)نزہۃ القاری، 5/430(6)مسند بزار، 2/315، حدیث:743(7)معجم کبیر، 10/233، رقم:10566(8)بخاری، 3/546، حدیث:5469(9)بخاری، 3/546، حدیث:5467(10)مسلم، ص912، حدیث:5612(11)الاصابۃ فی تمییز الصحابہ، 5/29(12)الاستیعاب، 4/441(13)الاصابۃ فی تمییز الصحابہ، 5/21(14)مسند امام احمد، 7/246، حدیث: 20093(15)الاستیعاب، 2/217(16)اسد الغابہ، 5/486(17)الاصابۃ فی تمییز الصحابہ، 1/326(18)طبقاتِ ابن سعد، 5/17-الاستیعاب، 3/21(19)الاصابۃ فی تمییز الصحابہ، 6/194، 195(20)اسد الغابہ، 5/118(21)الاصابۃ فی تمییز الصحابہ، 5/8۔

ग़ौसे आज़म رحمۃ اللہ علیہ और तफ़्सीरे कुरआने करीम

हुज़ूर ग़ौसे आज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने वाज़ो नसीह़त और इ़ल्म की तदरीस के ज़रीए़ कुरआनो ह़दीस की बड़ी ख़िदमत की और इस में बुलन्दियों तक पहुंचे । हुज़ूर ग़ौसे आज़म رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने तदरीस का आग़ाज़ शैख़े ह़नाबिला ह़ज़रते अबू सअ़्द मुख़र्रमी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ के क़ाइम कर्दा मद्रसे से किया । आप رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की शोहरत इतनी बढ़ी कि लोगों की बड़ी तादाद आप से इ़ल्म ह़ासिल करने लगी यहां तक कि मद्रसे में तौसीअ़ करना पड़ी ।[1] फिर येह अ़ज़ीमुश्शान मद्रसा आप के इस्मे गिरामी की निस्बत से मद्रसए क़ादिरिय्या के नाम से मश्हूर हो गया जो अभी तक इसी नाम से मौजूद है ।[2]

हुज़ूरे ग़ौसे आज़म رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने 528 हिजरी से 561 हिजरी तक 35 साल अपने मद्रसे में तदरीस व इफ़्ता का काम सर अन्जाम दिया । आप जो कुछ मजलिस में फ़रमाते वोह चार सौ आ़लिम वग़ैरा की दवातों से लिखा जाता था ।[3] शैख़ इमाम मुवफ़्फ़क़ुद्दीन बिन क़ुदामा رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं : हम 561 हिजरी में बग़दाद शरीफ़ गए तो हम ने देखा कि शैख़ सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ उन में से हैं कि जिन को वहां पर इ़ल्मो अ़मल और फ़तवा नवेसी की बादशाहत दी गई है ।[4] आप की इ़ल्मी महारत का येह आ़लम था कि अगर आप से इन्तिहाई मुश्किल मसाइल भी पूछे जाते तो आप उन मसाइल का निहायत आसान और उ़म्दा जवाब देते, आप ने दर्सो तदरीस और फ़तवा नवेसी में तीन दहाइयों से ज़ियादा दीने मतीन की ख़िदमत सर अन्जाम दी ।[5]

तेरह उ़लूम में तदरीस हुज़ूर ग़ौसे आज़म رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ फ़िक़्ह, ह़दीस, तफ़्सीर, नह़्व जैसे 13 मज़ामीन (Subjects) की तदरीस फ़रमाते । बादे नमाज़े ज़ोहर क़िराअते कुरआन जैसा अहम मज़्मून पढ़ाते ।[6] आप رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ से इक्तिसाबे फ़ैज़ करने वाले त़लबा की तादाद बहुत ज़ियादा है जिन में फ़ुक़हा और मुह़द्दिसीन की बड़ी तादाद शामिल है ।[7] अ़ल्लामा शारानी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं : हुज़ूर ग़ौसे आज़म رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ के मद्रसए आ़लिया में लोग आप से तफ़्सीर, ह़दीस, फ़िक़्ह और इ़ल्मुल कलाम पढ़ते थे, सुब्ह़ो शाम दोनों वक़्त लोगों को तफ़्सीर, ह़दीस, फ़िक़्ह, कलाम, उसूल और नह़्व पढ़ाते थे और ज़ोहर के बाद क़िराअतों के साथ कुरआने मजीद पढ़ाते थे ।[8]

हुज़ूर ग़ौसे आज़म رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ कुरआनो ह़दीस पर अ़मल करने की तरग़ीब दिलाया करते थे । चुनान्चे हुज़ूर ग़ौसे आज़म رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने एक दिन मद्रसए क़ादिरिय्या में तक़रीर करते हुए फ़रमाया : ऐ अल्लाह के बन्दे ! तू कुरआन पर अ़मल कर येह तुझे उस के नाज़िल करने वाले के पास ले जा कर खड़ा कर देगा और तू सुन्नते मुबारका पर अ़मल कर क्यूंकि येह तुझे सरकारे दो आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم के पास ले जा कर खड़ा करेगी ।[9]

बहजतुल असरार में है : ह़ाफ़िज़े ह़दीस ह़ज़रते अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन अह़मद बग़दादी बन्दलुजी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने इमाम इब्ने जौज़ी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ के साहिबज़ादे से फ़रमाया : मैं और तुम्हारे वालिद एक दिन ह़ज़रते शैख़ सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की मजलिस में ह़ाज़िर हुए आप رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने एक आयत की तफ़्सीर में एक माना बयान फ़रमाया तो मैं ने तुम्हारे वालिद से कहा : येह माना आप जानते हैं ? आप

ने फ़रमाया : हां । फिर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दूसरा माना बयान फ़रमाया तो मैं ने दोबारा तुम्हारे वालिद से पूछा कि क्या आप इस माना को जानते हैं ? तो उन्हों ने फ़रमाया : हां । फिर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक और माना बयान फ़रमाया तो मैं ने तुम्हारे वालिद से फिर पूछा कि आप इस का माना जानते हैं । उन्हों ने फ़रमाया : हां ! आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कुल ग्यारह मआ़नी बयान किए और मैं हर बार तुम्हारे वालिद से पूछता था कि क्या आप उन मआ़नी से वाक़िफ़ हैं ? तो वोह येही कहते कि मैं इन मानों से वाक़िफ़ हूं । फिर ग़ौसे आज़म رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मज़ीद माना बयान करना शुरूअ़ किए यहां तक कि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने पूरे चालीस मआ़नी बयान कर दिए जो निहायत उ़म्दा और बेहतरीन थे और इस का हर माना उस के क़ाइल की त़रफ़ मन्सूब करते थे । ग्यारह के बाद हर माना के बारे में तुम्हारे वालिद कहते थे : मैं इस से वाक़िफ़ नहीं हूं यहां तक कि शैख़ की वुस्अ़ते इ़ल्म से उन का तअ़ज्जुब बढ़ गया ।[10]

कुरआने पाक को पढ़ने का अस्ल मक़्सद

हुज़ूर ग़ौसे आज़म رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : कुरआने पाक की ताज़ीमो तक़्दीस के पेशे नज़र इस को गाने वालों की त़रह़ गा कर पढ़ना मकरूह है, इस की कराहत की वजह येह है कि गा कर पढ़ने से कलाम अपनी अस्ली ह़ालत से तजावुज़ कर जाता है यानी मद और हम्ज़ा साक़ित़ हो जाते हैं । जिन ह़ुरूफ़ को लम्बा कर के पढ़ना होता है गाने की त़र्ज़ में वोह मुख़्तसर हो जाते हैं और जिन्हें मुख़्तसर करना होता है वोह त़वील हो जाते हैं और अक्सर ह़ुरूफ़ मुदग़म हो जाते हैं । कराहत की एक वजह येह भी है कि कुरआने पाक पढ़ने का अस्ल मक़्सद तो येह है कि उस से ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा हो, नसीह़त की बातें सुन कर सुनने वाले को ना फ़रमानी से डर लगे और कुरआनी दलाइल व बराहीन, क़सस और अम्साल सुन कर इ़बरत ह़ासिल हो । अल्लाह पाक के उन वादों का जो कुरआन में किए गए उम्मीदवार बने । येह तमाम फ़वाइद गा कर पढ़ने में ख़त्म हो जाते हैं ।[11]

लफ़्ज "त़ारिक़" की त़फ़्सीर

हुज़ूर ग़ौसे आज़म رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ﴿وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ﴾ (तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : आस्मान की क़सम और रात को आने वाले की ।[12]) की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : अल्लाह पाक ने आस्मान और इस में चलने वाले की क़सम याद फ़रमाई है । आस्मान पर जो चले वोह ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुक़द्दस है । पहले आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हिम्मते उ़ल्या ने आस्मान पर तरक़्क़ी की फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस्मे मुबारक ने । यानी हमारे आक़ा व मौला ह़ज़रत मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सातवें आस्मान तक उ़रूज किया और अल्लाह पाक से कलाम किया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने सर मुबारक की आंखों से अल्लाह पाक का दीदार किया और आप के क़ल्बे अत़हर की आंखों ने भी दीदार किया । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के वोह ख़ास बन्दे हैं जो रात को आस्मानों की सैर को तशरीफ़ ले गए । ज़मीन पर अल्लाह पाक का दीदार क़ल्बे अत़हर से किया और अस्मान में अल्लाह पाक का दीदार सर की आंखों से किया ।[13]

अल्लाह और ग़ैर की मह़ब्बत एक दिल में जम्अ़ नहीं हो सकती

हुज़ूर ग़ौसे आज़म رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने जुमुआ़ के दिन मद्रसए क़ादिरिय्या में ख़ित़ाब करते हुए फ़रमाया : अल्लाह पाक की मह़ब्बत और उस के ग़ैर की मह़ब्बत दोनों एक दिल में जम्अ़ नहीं हो सकतीं । अल्लाह पाक का इरशाद है :

﴿مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ﴾

(तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह ने किसी आदमी के अन्दर दो दिल न रखे ।[14]) चुनान्चे दुन्या और आख़िरत दोनों एक दिल में जम्अ़ नहीं हो सकते और न ही ख़ालिक़ व मख़्लूक़ दोनों एक दिल में जम्अ़ हो सकते हैं तो तू तमाम फ़ना होने वाली चीज़ों को छोड़ दे ताकि तुझे ऐसी चीज़ ह़ासिल हो जाए कि जिस के लिए फ़ना ही नहीं है और तू अपने नफ़्स और माल को ख़र्च कर ताकि तुझे जन्नत ह़ासिल हो जाए ।[15]

अल्लाह करीम हमें हुज़ूर ग़ौसे आज़म رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के सदक़े कुरआने करीम की मह़ब्बत और तिलावते कुरआने करीम का ज़ौक़ अ़त़ा फ़रमाए ।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(1) المنتظم، 18/173 (2) سیرت غوث اعظم، ص60 (3) کلیات نور بخش توکلی، ص402 (4) بہجۃ الاسرار، ص225 (5) دیکھئے: بہجۃ الاسرار، ص225 (6) قلائد الجواھر، ص38 (7) مراٰۃ الجنان، 3/267 (8) بہجۃ الاسرار، ص225-غوثِ پاک کے حالات، ص27 (9) الفتح الربانی، ص67 (10) بہجۃ الاسرار، ص224 (11) غنیۃ الطالبین، ص84 (12) پ30، الطارق:1 (13) الفتح الربانی، ص243 (14) پ21، الاحزاب:4 (15) الفتح الربانی، ص94۔

अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए

मज़ार हज़रते ख़्वाजा अ़ब्दुर्रह़मान नक़्शबन्दी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

रबीउ़ल आख़िर इस्लामी साल का चौथा महीना है। इस में जिन औलियाए किराम और उ़लमाए इस्लाम का विसाल हुवा, उन में से 12 का तआ़रुफ़ मुलाहज़ा फ़रमाइए :

औलियाए किराम رحمهم الله السّلام

1 क़ुत़्बुल मिल्लते वद्दीन ह़ज़रते शैख़ अबुल ह़सन अ़ली बिन अ़ब्दुर्रह़मान ह़द्दाद ज़ुबैदी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मौज़अ़ शज़्हब (नज्द क़ह़मा पहाड़, ज़ुबैद, यमन) के रहने वाले थे, आप की पैदाइश 21 रजब 525 हिजरी को हुई, आप साह़िबे करामात, कसीरुल फ़ैज़, मर्जए ख़ासो आ़म और अकाबिरे मशाइख़ से थे, आप ने 27 रबीउ़ल आख़िर 677 हिजरी को विसाल फ़रमाया।[1]

2 ह़ज़रते ख़्वाजा अ़ब्दुर्रह़मान नक़्शबन्दी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की पैदाइश आस्तानए आ़लिया बिघार शरीफ़ तह़सील कहूटा में 1292 हिजरी में हुई और यहीं 17 रबीउ़ल आख़िर 1362 हिजरी को विसाल फ़रमाया, आप ने अपने वालिदे गिरामी से इल्म ह़ासिल करने के बाद मूसा ज़ई शरीफ़ में इल्म ह़ासिल किया और फ़ारिग़ुत्तह़सील हुए, वालिद और ख़्वाजा सिराजुद्दीन नक़्शबन्दी से ख़िलाफ़त ह़ासिल की और सारी ज़िन्दगी रुश्दो हिदायत में मसरूफ़ रहे।[2]

3 पीरे त़रीक़त ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद अ़ब्दुल उ़ला मुस्तालवी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की पैदाइश आस्तानए आ़लिया मुस्ताल शरीफ़, एच टन में हुई और 25 रबीउ़ल आख़िर 1323 हिजरी को यहीं विसाल फ़रमाया। आप आ़लिमे बा अ़मल, फ़क़ीहे वक़्त, वसीउ़ल मुत़ालआ़ और सज्जादा नशीन आस्तानए आ़लिया मुस्ताल शरीफ़ थे। फ़तावा मुस्तालिया ग़ैर मत़्बूआ़ यादगार है।[3]

4 सूफ़िए बा सफ़ा ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद अ़ज़ीम फ़ीरोज़पुरी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की पैदाइश 1293 हिजरी में रजी वाला, ज़िल्अ़ फ़ीरोज़पुर, पंजाब, हिन्द में हुई और 29 रबीउ़ल आख़िर 1381 हिजरी को विसाल फ़रमाया, तदफ़ीन मियानी साह़िब क़ब्रिस्तान में की गई। आप पेशे के एतिबार से स्कूल टीचर, मुदीरे आला माहनामा अन्वारे सूफ़िया, ख़त़ीबे बेगम शाही मस्जिद, पाबन्दे शरीअ़त ख़लीफ़ए अमीरे मिल्लत और शैख़े त़रीक़त थे।[4]

5 मह़बूबुल ह़क़ ह़ज़रत पीर सय्यिद शाह अ़ब्दुश्शकूर अ़लीमी रशीदी क़ादिरी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की पैदाइश 1312 हिजरी को सादातपुर, यूपी हिन्द में हुई और 7 रबीउ़ल आख़िर 1404 हिजरी को देहली में विसाल फ़रमाया, मज़ार जाए पैदाइश में है, आप अपने वालिद पीर सय्यिद शाह अमीर ह़सन रशीदी और अ़ल्लामा अ़ब्दुल अ़लीम आसी के तरबियत याफ़्ता, आस्तानए रशीदिया क़ादिरिय्या (जौनपूर) के ख़लीफ़ा और यादगारे अस्लाफ़ थे।[5]

6 हाफ़िज़ुल ह़दीस इमाम अबू ग़स्सान मालिक बिन इस्माईल नहदी कूफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ सिक़ह मोह़द्दिस, आ़बिदो ज़ाहिद और अइम्मए मोह़द्दिसीन से थे, आप से रिवायत करने वालों में इमाम इब्ने शैबा, इमाम बुख़ारी, इमाम अबू ह़ातिम जैसे मुह़द्दिसीन शामिल हैं। आप का विसाल माहे रबीउ़ल आख़िर के इब्तिदाई अय्याम में सिन 219 हिजरी में हुवा।(6)

7 मुह़द्दिसे ज़माना ह़ज़रते शैख़ अबू ज़ुरआ़ त़ाहिर बिन अल हाफ़िज़ मुह़म्मद अश्शैबानी मुक़द्दसी राज़ी हमदानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत 480 हिजरी को ईरान के शहर रेशुमाली ईरान में हुई और विसाल 86 साल की उ़म्र में रबीउ़ल आख़िर 566 हिजरी को हमदान ईरान में हुवा। आप जय्यिद आ़लिमे दीन, सुदूक़े राविए ह़दीस और बा अ़मल थे, आप ने 20 ह़ज किए, बग़दाद में भी दर्से ह़दीस में मसरूफ़ रहे, ख़ल्क़े कसीर ने फ़ैज़ पाया।(7)

8 क़ारिए अल हिदाया, ह़ज़रते इमाम सिराजुद्दीन अबू ह़फ़्स अ़म्र बिन अ़ली ख़य्यात़ किनानी ह़नफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत मह़ल्ला ह़ुसैनिया क़ाहिरा मिस्र में हुई और 12 रबीउ़ल आख़िर 829 हिजरी को विसाल फ़रमाया, तदफ़ीन ह़ौशुल अशरफ़ बर्रे सबाई नज्द जामिआ़ बरक़ूक़िया क़ाहिरा मिस्र में हुई। आप हाफ़िज़ुल क़ुरआन, जामए़ मन्क़ूलो माक़ूल, उस्ताज़ुल उ़लमा वल फ़ुक़हा, फ़क़ीहे ह़नफ़ी, शैख़े त़रीक़त, मर्जए़ ख़ासो आ़म और अबू ह़नीफ़ए ज़माना थे। फ़तावा क़ारिए अल हिदाया आप के फ़तावा का मज्मूआ़ है।(8)

9 ह़ज़रते इमाम ज़ैनुद्दीन अह़मद बिन अह़मद ज़ुबैदी ह़नफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की पैदाइश 812 हिजरी को ज़ुबैद, यमन में हुई और यहीं 9 रबीउ़ल आख़िर 893 हिजरी को विसाल फ़रमाया। आप जय्यिद आ़लिमे दीन, मोह़द्दिसे वक़्त, अदीब व शाइ़र और शैख़ुल ह़दीस मद्रसए रह़मानिया ज़ुबैद हैं, आप की सात कुतुब में से तजरीदे बुख़ारी
اَلتَّجْرِيدُ الصَّرِيحُ لِاَحَادِيثِ الْجَامِعِ الصَّحِيح आप की पहचान है।(9)

10 मुफ़्ती हाफ़िज़ क़ियामुद्दीन चिश्ती رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ 1244 हिजरी को पैदा हुए और 21 रबीउ़ल आख़िर 1331 हिजरी को विसाल फ़रमाया। आप अ़ल्लामा फ़ज़्लुर्रसूल बदायूनी, अ़ल्लामा फ़ज़्लुर्रह़मान गंज मुरादाबादी, अ़ल्लामा अ़ब्दुल ह़क़ रामपुरी और अ़ल्लामा अह़मद ह़सन कानपुरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم के शागिर्द हैं, आप ख़्वाजा अल्लाह बख़्श तूनुसवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मुरीद थे, आप हाफ़िज़े क़ुरआन, मुम्ताज़ आ़लिमे दीन, बेहतरीन मुदर्रिस, ख़ुश नवसि और कातिब थे।(10)

11 मौलाना हाफ़िज़ सय्यिद मुह़म्मद अमीन इन्दिराबी क़ादिरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ख़ानदाने सादात के चश्मो चराग़ थे, उर्दू, फ़ारसी और अ़रबी के फ़ाज़िल थे, पेशे के एतिबार से आप वकील (Advocate) थे मगर ख़िदमते दीन के जज़्बे से सरशार, तसव्वुफ़ से गहरा लगाव रखने वाले और मुतह़र्रिक शख़्सिय्यत के मालिक थे, ज़िन्दगी भर अन्जुमने नोमानिया से वाबस्ता रहे, आप की वफ़ात 11 रबीउ़ल आख़िर 1382 हिजरी में हुई, तदफ़ीन क़ब्रिस्तान सादात इन्दिराब, इस्लामिय्या स्ट्रीट नम्बर 139 में हुई, आप की तसानीफ़ में अनीसुल मुश्ताक़ीन, अल क़ौलुल मक़्बूल और जज़्बुल अस्फ़िया फ़ी हुक़ूक़िल मुस्त़फ़ा हैं।

12 मह़बूबे मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा पीर सय्यिद मुनव्वर ह़ुसैन शाह गुर्देज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की पैदाइश कश्मीर के इ़ल्मी व रूह़ानी ख़ानदान में 1353 हिजरी को हुई और यहीं 6 रबीउ़ल आख़िर 1442 हिजरी को विसाल फ़रमाया। आप फ़ाज़िले दारुल उ़लूम ह़िज़्बुल अह़नाफ़, तल्मीज़े ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत, इमामो ख़त़ीब जामेअ़ मस्जिद चिश्तिया, सरपरस्ते मद्रसए फ़ाज़िलिया ज़ियाइया और नेक व मुत्तक़ी हस्ती थे।

---

(1)الصوفیۃ والفقہاء فی الیمن، ص34-تواریخ آئینہ تصوف، ص85(2)انسائیکلوپیڈیا اولیائے کرام،2/385تا393(3)تذکرہ اولیائے پوٹھوار، ص 109 (4)تذکرہ خلفائے امیر ملت، ص 242تا246(5)تذکرہ شکوری، ص59تا64، 193، 194 (6)تاریخِ اوسط للبخاری،2/339-اسامی شیوخ البخاری للصغانی، ص218-سیر اعلام النبلاء، 9/145(7)سیر اعلام النبلاء، 15/223(8)حدائق الحنفیہ، ص341-فتاویٰ قاریٔ الہدایہ، ص13تا38(9)الضوء اللامع للسخاوی، 1/214-قلادۃ النحر،6/480- الاعلام للزرکلی، 1/91(10)تذکرہ علماء اہل سنت ایبٹ آباد، ص377تا 387

ज़ैतून
OLIVE

"**ज़ैतून**" भी उन ख़ुश क़िस्मत ग़िज़ाओं में शामिल है जिन का ज़िक्र क़ुरआने पाक के साथ साथ मुस्तफ़ा करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़बान से हुवा है। ज़ैतून का दरख़्त तारीख़ के क़दीम तरीन दरख़्तों में से एक है। इस फल से तेल हासिल किया जाता है, इस तेल को "**रौग़ने ज़ैतून**" कहते हैं, येह तेल जलते हुए साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ रौशनी फ़राहम करता है, सर में भी लगाया जाता है, बतौरे चिक्नाई सालन पकाने के भी काम आता है, बतौरे दवा भी इस्तिमाल होता है और सालन की जगह रोटी से भी खाया जाता है। इतने मसारिफ़ में इस्तिमाल ज़ैतून के तेल का ही ख़ास्सा है।

क़ुरआने करीम में ज़ैतून का ज़िक्र

1 अल्लाह पाक ने क़ुरआने हकीम में ज़ैतून के दरख़्त को मुबारक यानी बरकत वाला कहा है। चुनान्चे क़ुरआने करीम में इरशाद होता है :

﴿اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّیٌّ یُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ زَیْتُوْنَةٍ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह फ़ानूस गोया एक सितारा है मोती सा चमकता रौशन होता है बरकत वाले पेड़ ज़ैतून से।[1]

तफ़्सीर के निकात : ❁ ज़ैतून के दरख़्त के पत्ते नहीं गिरते ❁ येह दरख़्त न सर्द मुल्क में होता है न गर्म मुल्क में ताकि न उसे गर्मी से नुक़्सान पहुंचे न सर्दी से ❁ येह निहायत उ़म्दा व आला होता है और इस के फल इन्तिहाई मोतदिल होते हैं।[2]

2 ज़ैतून वोह बा बरकत फल है जिस की क़सम अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने क़ुरआने करीम में इरशाद फ़रमाई है चुनान्चे इरशाद होता है : ﴿وَالتِّیْنِ وَالزَّیْتُوْنِ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : इन्जीर की क़सम और ज़ैतून की।[3]

तफ़्सीर के निकात : ❁ इस का दरख़्त ख़ुश्क पहाड़ों में पैदा होता है जिन में चिक्नाई का नमो निशान नहीं होता ❁ इस का दरख़्त बिग़ैर ख़िदमत के परवरिश पाता है और हज़ारों बरस बाक़ी रहता है।[4] ❁ ज़ैतून तेल और खाने वालों के लिए सालन ले कर उगता है[5] ❁ येह इस में अ़जीब सिफ़त है कि वोह तेल भी है कि मनाफ़ेअ़ और फ़वाइद तेल के इस से हासिल किए जाते हैं, जलाया भी जाता है, दवा के तरीक़े पर भी काम में लाया जाता है और सालन का भी काम देता है कि तन्हा इस से रोटी खाई जा सकती है।[6]

ज़ैतून से मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीस

1 ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ज़ैतून खाओ और इस से मालिश करो, बेशक येह बा बरकत दरख़्त से है।[7]

2 हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ज़ैतून से सालन बनाओ और इस से मालिश करो, बेशक येह बा बरकत दरख़्त से है ।[8]

3 हज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एहराम की हालत में अपने सर पर ज़ैतून का तेल लगाते थे ।[9]

4 हज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, आप ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुए सुना कि बरकत वाले दरख़्त ज़ैतून की मिस्वाक बहुत अच्छी है क्यूंकि येह मुंह को ख़ुश्बूदार करती और इस की बदबू ज़ाइल करती है, येह मेरी और मुझ से पहले के नबियों की मिस्वाक है ।[10]

5 नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ज़ैतून का तेल खाओ इसे लगाओ कि येह मुबारक दरख़्त से है और इस में सत्तर बीमारियों की शिफ़ा है जिन में जुज़ाम भी है इस में बवासीर को भी शिफ़ा है ।[11]

ज़ैतून के फ़वाइद

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ज़ैतून के कसीर फ़वाइद बयान फ़रमाए हैं, आज तिब्बी माहिरीन कसीर तह़क़ीक़ात के बाद इन्ही फ़वाइद को साबित कर रहे हैं । आइए ! उन में से चन्द फ़वाइद मुलाह़ज़ा कीजिए :

ज़ैतून का तेल बिग़ैर पकाए खाना ज़ियादा फ़ाइदेमन्द होता है और येह कोलेस्ट्रोल को भी कम करता है । लिहाज़ा ज़ैतून का तेल कच्चा इस्तिमाल किया जाए । कच्चा खाने में किसी क़िस्म की बदमज़गी नहीं होती, खाना खाते वक़्त अपनी रकाबी में चावल, सालन वग़ैरा निकाल कर चम्मच से ज़ैतून शरीफ़ का तेल डाल कर शौक़ से तनावुल फ़रमाइए रोज़ाना ज़ैत (यानी ज़ैतून शरीफ़ का तेल) सर में डाल कर गंज की ख़ूब मालिश करने से बन्द शुदा मसाम खुल जाएंगे और बाल उगने लगेंगे दाढ़ी या सर के बाल झड़ते हों या गंज हो तो आठ चम्मच ज़ैतून के गर्म किए हुए तेल में एक चम्चा अस्ली शहद और एक चम्चा बारीक पिसी हुई दार चीनी मिला लें फिर जहां के बाल झड़ते हों वहां ख़ूब मस्लें फिर अन्दाज़न पांच मिनट के बाद धो लें या नहा लें ।[12] ज़ैतून के तेल में फ़ेटी एसिड्ज़, विटामिन्ज़ और दीगर अज्ज़ा शामिल होने की वजह से येह सेह़त के लिए बहुत मुफ़ीद है ज़ैतून का तेल मोटापे को कम करने में मदद देता है ख़ाली पेट ज़ैतून के तेल का एक चम्मच पीना इन ख़ल्यात को नुक़्सान से बचाता है जो कैन्सर का बाइस बन सकते हैं ज़ैतून का तेल आंतों के निज़ाम को ठीक कर के क़ब्ज़ से नजात दिलाने में मददगार साबित होता है ज़ैतून का तेल जिल्द, नाख़ुनों और बालों के लिए भी फ़ाएदेमन्द है, येह उन की मुलाइमत वापस लाने के साथ नुक़्सानात की मरम्मत करता है, इन की नमी बह़ाल करता और बालों की नश्वो नुमा को भी बढ़ाता है ज़ैतून का तेल जिस्म से ज़हरीले मवाद की सफ़ाई करता है इस में मौजूद फ़ेटी एसिड्ज़ जिस्मानी दिफ़ाई निज़ाम के अफ़्आ़ल को बेहतर बनाने में मदद देते हैं, जिस के नतीजे में मुख़्तलिफ़ मौसमी अमराज़ से बचना आसान हो जाता है कोलेस्ट्रोल की दो अक़्साम होती हैं, एक एल डी एल (नुक़्सान देह) और दूसरी एच डी एल (फ़ाइदेमन्द), अमराज़ क़ल्ब से बचने के लिए एल डी एल की सत्ह़ को कम रखना ज़रूरी होता है जब कि दूसरी की सत्ह़ बढ़ाना होती है, इस का एक ज़रीआ़ ज़ैतून के तेल का इस्तिमाल है ज़ैतून का तेल जिस्मानी वरम में कमी के लिए दर्द कश अदवियात की त़रह़ ही काम करता है । ज़ैतून का तेल दिमाग़ के लिए भी फ़ाएदेमन्द है ।[13]

---

(1)پ18، النور:35 (2)خازن، النور، تحت الآیۃ: 35، 3/353-354ملخصًا (3)پ30، التین:1 (4)خازن، والتین، تحت الآیۃ: 1، 4/390، روح البیان، التین، تحت الآیۃ: 1، 10/467-466، ملتقطاً وملخصًا (5)پ18، المؤمنون:20 (6)تفسیر خزائن العرفان، المؤمنون، تحت الآیۃ:20(7)ترمذی، 3/336، حدیث: 1858 (8)ابن ماجہ، 4/34، حدیث:3319 (9)ابن ماجہ، 3/506، حدیث: 3083 (10)معجم اوسط، 1/201، حدیث:678 (11)مراٰۃ المناجیح، 6/226-مرقاۃ المفاتیح، 8/308، تحت الحدیث: 4535 (12)گھریلو علاج، ص53، 94، 95 (13)مختلف ویب سائٹس۔

नए लिखारी

(New Writers)

हज़रते सालेह عَلَيْهِ السَّلَام की कुरआनी नसीहतें

मुहम्मद उ़स्मान सईद
(दर्जए साबिआ़ जामिअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने ग़रीब नवाज़)

अल्लाह पाक ने हज़रते सालेह عَلَيْهِ السَّلَام को क़ौमे समूद की त़रफ़ रसूल बना कर भेजा। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उन्हें सिर्फ़ अल्लाह पाक की इबादत करने और बुतों की पूजा छोड़ने की दावत दी तो चन्द लोग ईमान लाए और अक्सरिय्यत कुफ़्रो शिर्क पर ही क़ाइम रही। क़ौम के मुत़ालबे पर आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उन्हें ऊंटनी का मोजिज़ा भी दिखाया और उस के मुतअ़ल्लिक़ चन्द अह़कामात दिए। थोड़े अ़र्से बाद क़ौम ने अह़कामात से रू गर्दानी की और ऊंटनी को भी क़त्ल कर दिया। फिर एक गिरोह ने आप عَلَيْهِ السَّلَام के घर पर ह़म्ला कर के शहीद करने की साज़िश की तो नतीजे में वोह साज़िशी गिरोह अ़ज़ाबे इलाही से हलाक हो गया और बक़िय्या मुन्किरीन तीन दिन बाद अ़ज़ाबे इलाही के शिकार हुए।

आइए ! हज़रते सालेह عَلَيْهِ السَّلَام की कुरआने करीम में मज़कूर नसीह़तों में से 5 नसीह़तें पढ़िए :

1 अ़ज़ाबे इलाही से डराने की नसीह़त

क़ौमे समूद को हज़रते सालेह عَلَيْهِ السَّلَام ने तक्ज़ीब व इन्कार करने पर अ़ज़ाबे इलाही से डराया। चुनान्चे इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ الْمُرْسَلِیْنَ(۱۴۱) اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ صٰلِحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ(۱۴۲) اِنِّیْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِیْنٌ(۱۴۳) فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِیْعُوْنِ(۱۴۴)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : समूद ने रसूलों को झुटलाया जब कि उन से उन के हम क़ौम सालेह ने फ़रमाया क्या डरते नहीं बेशक मैं तुम्हारे लिए अल्लाह का अमानतदार रसूल हूं तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो।

(پ19، الشعرآء:141تا144)

2 बख़्शिश मांगने की नसीह़त करना

अ़ज़ाबे इलाही की बात सुन कर क़ौम ने कहा : ऐ सालेह عَلَيْهِ السَّلَام अगर तुम वाक़ेई रसूल हो तो अ़ज़ाब ले आओ जिस से तुम हमें डराते हो। तो आप ने क़ौम को अल्लाह से बख़्शिश मांगने की नसीह़त की जैसा कि कुरआने पाक में है : ﴿قَالَ یٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّیِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِۚ لَوْ لَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ(۴۶)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : सालेह ने फ़रमाया ऐ मेरी क़ौम क्यूं बुराई की जल्दी करते हो भलाई से पहले अल्लाह से बख़्शिश क्यूं नहीं मांगते शायद तुम पर रह़म हो।

(پ19، النمل:46)

3 ग़फ़्लत पर नसीह़त

नेमतों की फ़रावानी से क़ौमे समूद ग़फ़्लत की शिकार हो गई थी जिस पर आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उन्हें झंझोड़ते हुए फ़रमाया : ﴿اَتُتْرَكُوْنَ فِیْ مَا هٰهُنَاۤ اٰمِنِیْنَ(۱۴۶)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या तुम यहां की नेमतों में चैन से छोड़ दिए जाओगे।

(پ19، الشعرآء:146)

4 अल्लाह पाक पर ईमान लाने और उसी की इबादत करने की नसीहत

आप عَلَیْہِ السَّلَام ने क़ौम को वहदानिय्यते बारी तआ़ला पर ईमान लाने और सिर्फ़ उसी की इबादत करने की नसीहत की और फ़रमाया :

﴿قَالَ یٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَیْرُهٗ ؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। (پ12، ھود:61)

5 मुआ़फ़ी चाहने और रुजूअ़ करने की नसीहत

आप عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम अल्लाह पाक से मुआ़फ़ी चाहो और उसी की त़रफ़ रुजूअ़ करो बेशक वोह दुआ़ सुनता है, जैसा कि क़ुरआने पाक में है :

﴿فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَیْهِ ؕ اِنَّ رَبِّیْ قَرِیْبٌ مُّجِیْبٌ(۶۱)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो उस से मुआ़फ़ी चाहो फिर उस की त़रफ़ रुजूअ़ लाओ बेशक मेरा रब क़रीब है दुआ़ सुनने वाला। (پ12، ھود:61)

अल्लाह पाक हमें अम्बियाए किराम की सीरत पढ़ने समझने और इस पर अ़मल पैरा होने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का 4 चीज़ों के बयान से तरबियत फ़रमाना

अ़ब्दुल ह़न्नान
(दर्जए सादिसा जामिअ़तुल मदीना गुल्ज़ारे ह़बीब)

मुआ़शरे के अफ़राद की इस्लाह़ व तरबियत एक बहुत ज़रूरी अम्र है और मुआ़शरे के अफ़राद का हुस्ने अख़्लाक़ और त़र्ज़े ज़िन्दगी तब ही सह़ीह़ होगा कि जब उन की तरबियत व इस्लाह़ सह़ीह़ अन्दाज़ में हुई हो इसी तरबियत व इस्लाह़ के लिए अल्लाह पाक ने पिछली उम्मतों में अम्बियाए किराम को मबऊ़स फ़रमाया और इस उम्मत के लिए नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मबऊ़स फ़रमाया ताकि इस उम्मत की भी तरबियत व इस्लाह़ हो सके। ज़िन्दगी का कोई ऐसा पहलू नहीं कि जिस पर नबिय्ये करीम عَلَیْہِ السَّلَام ने तरबियत व इस्लाह़ न फ़रमाई हो।

क़ारेईने किराम ! काइनात के सब से कामयाब तरीन मुअ़ल्लिम व मुरब्बी की तरबियत का त़रीक़ा मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में होता था उन्ही त़रीक़ों में से एक त़रीक़ा येह भी था कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم चार चीज़ों का ज़िक्र कर के मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त पर मुआ़शरे की तरबियत फ़रमाते :

आइए ! चन्द ऐसे इरशादात मुलाह़ज़ा फ़रमाएं जिन में चार चीज़ों को बयान कर के तरबियत फ़रमाई :

1 मुनाफ़िक़ की चार ख़स्लतें

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : चार ख़स्लतें ऐसी हैं कि जिस शख़्स में भी वोह होंगी वोह पक्का मुनाफ़िक़ होगा। या इन चार में से अगर एक ख़स्लत भी उस में है तो उस में निफ़ाक़ की एक ख़स्लत है। यहां तक कि वोह उसे छोड़ दे। 1 जब अमानत दी जाए तो ख़ियानत करे 2 जब बात करे तो झूट बोले 3 जब वादा करे तो वादा ख़िलाफ़ी करे 4 जब लड़े तो गालियां बके। (بخاری، 1/25، حدیث:34)

2 चार अश्ख़ास अल्लाह की नाराज़ी में

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : चार क़िस्म के लोग सुब्ह़ो शाम अल्लाह पाक की नाराज़ी और ग़ज़ब में रहते हैं : पूछा गया वोह कौन हैं ? आप عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : 1 वोह मर्द हैं जो औ़रतों की शक्ल इख़्तियार करते हैं 2 वोह औ़रतें जो मर्दों की शक्ल इख़्तियार करती हैं 3 वोह शख़्स जो जानवरों से जिमाअ़ करता है और 4 वोह जो मर्दों से जिमाअ़ करता है।

(شعب الایمان، 4/365، حدیث:5285)

3 चार अश्ख़ास पर अल्लाह का ग़ज़ब

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : चार अश्ख़ास ऐसे हैं जिन पर अल्लाह पाक का ग़ज़ब है : 1 क़स्में उठा उठा कर सौदा बेचने वाला 2 तकब्बुर करने वाला फ़क़ीर 3 बूढ़ा ज़ानी 4 ज़ालिम हुक्मरान।

(شعب الایمان، 4/220، حدیث:4853)

4 हुर्मत वाले महीने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : साल बारह महीनों का होता है, चार महीने इस में से हुर्मत के हैं तीन तो पै दरपै हैं ज़ुल क़ादा, ज़ुल हिज्जा, मोहर्रम और (चौथा) रजब जो जुमादल उख़रा और शाबान के बीच में आता है।

(دیکھئے:بخاری،4/235،حدیث:4662)

अल्लाह पाक हमें नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रामीन पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

वालिदैन के हुक़ूक़

मुह़म्मद मुजाहिद रज़ा क़ादिरी
(दर्जए राबिआ जामिअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आज़म)

क़ुरआने करीम की तालीम जहां अल्लाह पाक की इबादत का हुक्म देती है वहीं इन्सान को वालिदैन की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी और उन के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आने की ताकीद भी फ़रमाती है। क़ुरआने पाक में 4 से ज़ाइद मक़ामात पर वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक और उन की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी का मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में बयान है, लिहाज़ा वालिदैन की इत़ाअ़त ज़रूरी है और इस में कोताही की कोई गुंजाइश नहीं है।

आइए ! वालिदैन के हुक़ूक़ के मुतअ़ल्लिक़ पांच अह़ादीसे मुबारका मुलाह़ज़ा कीजिए :

1 वालिदैन की ख़िदमत करना एक शख़्स ने हुज़ूर عَلَیْہِ السَّلَام की बारगाह में हाज़िर हो कर जंग में जाने की इजाज़त मांगी तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : तेरे वालिदैन ज़िन्दा हैं ? अ़र्ज़ की : जी हां, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : उन दोनों की ख़िदमत कर येही तेरा जिहाद है।(بخاری،2/310،حدیث:3004)

2 वालिदैन को नाराज़ न करना ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मां-बाप का औलाद पर क्या ह़क़ है ? फ़रमाया : वोह दोनों तेरी जन्नत और दोज़ख़ (ابن ماجہ،4/186،حدیث:3662) हैं। यानी तेरे मां-बाप तेरे लिए जन्नत दोज़ख़ में दाख़िले का सबब हैं कि उन्हें ख़ुश रख कर तू जन्नती बनेगा उन्हें नाराज़ कर के दोज़ख़ी, येह फ़रमाने आ़ली वादा वई़द दोनों का मज्मूआ़ है अगर्चे यहां ख़िताब ब ज़ाहिर ख़ास है मगर हुक्म ता क़ियामत आ़म है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/540)

3 मां-बाप को गाली न देना रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह बात कबीरा गुनाहों में से है कि आदमी अपने मां-बाप को गाली दे। अ़र्ज़ किया गया। या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! कोई अपने मां-बाप को कैसे गाली दे सकता है ? फ़रमाया : उस की सूरत येह है कि येह दूसरे के बाप को गाली देता है तो वोह उस के मां-बाप को गाली देता है। (بخاری،4/94،حدیث:5973)

4 वालिदैन की क़ब्र पर जाना वालिदैन की वफ़ात के बाद भी औलाद पर वालिदैन का ह़क़ लाज़िम है वोह येह कि उन की क़ब्र पर जाए ईसाले सवाब करे तो येह उस शख़्स के लिए भी बाइ़से सवाब है जैसा कि ह़दीसे पाक में है : नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो मां-बाप दोनों या उन में से किसी एक की क़ब्र पर हर जुमुआ़ को ज़ियारत के लिए ह़ाज़िर हो तो अल्लाह पाक उस के गुनाह बख़्श देगा और वोह मां-बाप के साथ अच्छा बरताव करने वाला लिखा जाएगा।

(معجم اوسط للطبرانی،4/321،حدیث:6114)

5 बुढ़ापे में वालिदैन की ख़िदमत करना अल्लाह पाक के आख़िरी नबी ह़ज़रत मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : उस की नाक ख़ाक आलूद हो, उस की नाक ख़ाक आलूद हो, उस की नाक ख़ाक आलूद हो (यानी ज़लीलो रुस्वा हो) किसी ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वोह कौन है ? हुज़ूर عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : जिस ने मां-बाप दोनों या एक को बुढ़ापे के वक़्त में पाया फिर उन की ख़िदमत कर के जन्नत में दाख़िल न हुवा। (مسلم،ص1060،حدیث:6510)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त हमें अच्छे त़रीक़े से वालिदैन के हुक़ूक़ अदा करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और उन की नाराज़ी से मह़फ़ूज़ फ़रमाए और जन्नत का ह़क़दार बनाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

आओ बच्चो ! ह़दीसे रसूल सुनते हैं

झगड़ालू

हमारे प्यारे और आख़िरी नबी ह़ज़रत मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اَبْغَضُ الرِّجَالِ اِلَى اللّٰهِ الْاَلَدُّ الْخَصِمُ यानी अल्लाह पाक के नज़्दीक सब से ना पसन्दीदा शख़्स वोह है जो बहुत ज़ियादा झगड़ालू हो। (بخاری، 4/469، حدیث:7188)

प्यारे बच्चो ! येह ह़दीस जवामिउ़ल कलिम में से है यानी वोह ह़दीस जिस के अल्फ़ाज़ कम और माना व मफ़्हूम ज़ियादा हों ऐसी ह़दीस को जवामिउ़ल कलिम कहा जाता है।

इस ह़दीसे पाक में झगड़ा करने वालों की मज़म्मत बयान की गई है और बताया गया है कि ऐसे लोगों को अल्लाह पाक पसन्द नहीं फ़रमाता।

लड़ाई झगड़ा करना अच्छी आ़दत नहीं है, बात बात पर झगड़ा करने वाले बच्चों को लोग पसन्द नहीं करते, अच्छे बच्चे उन से दोस्ती नहीं करते, ऐसे बच्चे अपनी पढ़ाई भी अच्छे त़रीक़े से नहीं कर पाते।

अच्छे बच्चो ! आप को भी चाहिए कि शुरूअ़ में लिखी हुई ह़दीसे पाक में बयान की गई वईद से बचते हुए बात बात पर लड़ाई झगड़ा न करें, नर्मी, शफ़्क़त और मेहरबानी से पेश आएं, मुआ़फ़ी और दर गुज़र से काम लें और अल्लाह के पसन्दीदा बन्दे बन कर जन्नत के ह़क़दार बनें। ऐसे काम करें जिन से अल्लाह पाक ख़ुश हो और सवाब जम्अ़ हो जैसे दुरूद शरीफ़ पढ़ते रहें, वालिदैन की ख़िदमत करें, बड़ों की बात मानें, हमेशा सच्ची बात करें वग़ैरा। और ऐसे कामों से बचें जिन से अल्लाह पाक नाराज़ होता है मसलन नमाज़ न पढ़ना, फ़िल्में ड्रामे देखना और गाली गलोच करना। अल्लाह पाक हमें अपना पसन्दीदा बन्दा बनने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

हुरूफ़ मिलाइए !

م	ز	ہ	ع	ن	ی	ز	و	ر
ب	ا	و	ث	ل	ا	ص	ی	ا
ج	ز	د	ن	ج	ق	ع	ب	ع
د	ح	ی	ز	ا	م	ن	ر	ب
ہ	چ	ب	ا	و	ث	ل	ا	ح
د	ج	س	م	غ	ف	ن	ت	ش
د	ر	ی	ع	ف	د	م	ح	ف
ع	ل	ی	ر	ب	ن	ا	ر	ق
ا	ک	ذ	س	ر	م	و	ع	ج

इस्लामी साल का चौथा महीना रबीउ़ल आख़िर है। इस महीने का नाम सुनते ही जिस हस्ती का तसव्वुर ज़ेहन में आता है वोह ह़ुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ात है। इस महीने में औलियाउल्लाह से मह़ब्बत रखने वाले मुसलमान ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ईसाले सवाब के लिए मुख़्तलिफ़ नेक काम करते हैं। फ़ौत शुदा मुसलमानों के ईसाले सवाब के लिए नेक काम करने की तरग़ीब ह़दीस में मौजूद है : नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सअ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को वालिदा के ईसाले सवाब के लिए पानी का कुंवां खुदवाने की तरग़ीब दिलाई। (دیکھئے: ابوداؤد، 2/180، حدیث:1681) लिहाज़ा हमें चाहिए कि इस माह में आ़म मुसलमानों के साथ साथ ह़ुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ईसाले सवाब का ख़ुसूसी एहतिमाम करें اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बहुत सारी बरकतें हमें नसीब होंगी।

प्यारे बच्चो ! आप ने ऊपर से नीचे, दाएं से बाएं हुरूफ़ मिला कर पांच अल्फ़ाज़ तलाश करने हैं जैसे टेबल में लफ़्ज़ ''**सवाब**'' तलाश कर के बताया गया है। तलाश किए जाने वाले 5 अल्फ़ाज़ येह हैं : 1 नमाज़ 2 मस्जिद 3 क़ुरआन 4 ایصالِ ثواب 5 दुआ

ख़ाली मश्कीज़ा दोबारा भर गया

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मोजिज़ात का बिला वासिता जिन लोगों से तअ़ल्लुक़ होता जब तक उन की तवज्जोह ज़ाहिरी अस्बाब व वसाइल पर रहती वोह इस मोजिज़े की वजह से एक बे यक़ीनी की सी कैफ़िय्यत से गुज़रते मगर जब तवज्जोह ज़ाहिरी अस्बाब से हट कर मोजिज़ए रसूल की जानिब मब्ज़ूल होती तब उन्हें बे पनाह इत्मीनान व यक़ीन हो जाता। हुज़ूर का ऐसा ही एक मोजिज़ा ह़ज़रते बीबी उम्मे सुलैम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के साथ पेश आया जब उन्हों ने बकरी के दूध से घी बना कर एक मश्कीज़े में जम्अ़ किया और मश्कीज़ा भर के अपनी ख़ादिमा से कहा : इसे ले जा कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पेश कर दो कि इस से सालन बना लिया करें। ख़ादिमा वोह मश्कीज़ा ले कर बारगाहे रिसालत में पहुंचीं और अ़र्ज़ की : येह घी उम्मे सुलैम ने आप के लिए भेजा है। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मश्कीज़ा ख़ाली कर के उन्हें वापस लौटा दो। ख़ाली मश्कीज़ा उन्हें लौटा दिया गया जिसे वोह वापस ले आईं, घर पहुंच कर ह़ज़रते उम्मे सुलैम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने मश्कीज़ा भरा हुवा और उस से घी टपकता हुवा देखा तो ख़ादिमा से कहा कि मैं ने तुझे येह घी बारगाहे रिसालत में ले जाने को कहा था, वोह बोली : मैं ने ऐसा ही किया, यक़ीन नहीं तो चलें पूछ लें। ह़ज़रते उम्मे सुलैम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ख़ादिमा को साथ ले कर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुईं और अ़र्ज़ की : मैं ने इस के साथ आप की ख़िदमत में घी का मश्कीज़ा भेजा था। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह ले आई थी। उन्हों ने अ़र्ज़ की : उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को हिदायत व ह़क़ के साथ भेजा ! वोह मश्कीज़ा तो भरा हुवा है और उस से घी टपक रहा है। प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हैरानी कैसी ! अल्लाह पाक ने तुम्हारे खाने का इन्तिज़ाम किया जैसे तुम ने उस के नबी के लिए किया, खाओ और (दूसरों को) खिलाओ। उम्मे सुलैम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا कहती हैं : मैं ने घर आ कर घी को मुख़्तलिफ़ प्यालों में तक़्सीम कर दिया और कुछ उस मश्कीज़े में रहने दिया जिस से हम ने एक या दो महीने तक सालन बनाया। (دیکھئے: مسند ابی یعلی، 3/430، حدیث:4198۔ معجم کبیر للطبرانی، 25/120، حدیث:293۔ الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، 8/165) घी का ख़ाली मश्कीज़ा ख़ुद ब ख़ुद किनारे तक भर जाना हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एक अ़ज़ीम मोजिज़ा है।

इस मोजिज़े की रौशनी में चन्द बातें सीखने को मिलती हैं :

बुज़ुर्गों की ख़िदमत में बे ग़रज़ नज़राने (तोह़फ़े) पेश करना बाइ़से सआ़दत व ख़ैरो बरकत है।

अगर किसी का भेजा हुवा नज़राना या कोई चीज़ किसी के पास पहुंचाएं तो वाज़ेह़ तौ़र पर बता देना चाहिए कि येह फ़ुलां ने आप के लिए भेजा है ताकि वोह येह न समझे कि येह अपनी त़रफ़ से पेश कर रहा है।

किसी बात की जांच पड़ताल और तह़क़ीक़े ह़ाल के लिए डाइरेक्ट उस से राब्ता करना चाहिए जो हमारे शुकूको शुब्हात दूर कर दे।

किसी के पास कोई चीज़ भेजी जाए तो कुछ ऐसी वज़ाह़त कर दी जाए कि सामने वाले को मालूम हो जाए कि येह अमानत है या हदिय्या (तोह़फ़ा)।

अगर कोई हमें खाने पीने की चीज़ भिजवाए तो बरतन, रोटियों का रूमाल, ख़्वान पोश (खाने की ट्रे ढकने का कपड़ा) और कपड़े का थैला या कोई स्पेशयल शोपर वग़ैरा जिस में वोह खाना भेजा गया हो वोह वापस कर देना चाहिए सिवाए येह कि उस के रख लेने का रिवाज हो।

भलाई के फ़वाइद और बुराई के नताइज बसा औक़ात अल्लाह पाक दुन्या में भी दिखा देता है।

बच्चों को दीन की जानिबा कैसो माइल करें

वालिदैन अपनी औलाद की तालीमो तरबियत के लिए अपनी मेहनत सर्फ़ करते हैं कि हमारी औलाद नेक, परहेज़गार, इबादत गुज़ार बने। औलाद के अन्दर इबादत करने की उमंग, शौक़ और जज़्बा पैदा करने के लिए उन्हें तरग़ीब दिलाने या सिर्फ़ नसीहत करने पर इक्तिफ़ा न करें बल्कि हमें खुद अपने अमल में तब्दीली लानी होगी और ऐसे तरीक़े अपनाने होंगे जिन्हें देख कर बच्चों में इबादत का जज़्बा पैदा हो, क्यूंकि वालिदैन जो कहते हैं बच्चा उस पर अमल नहीं करता बल्कि जो वोह करते हैं बच्चा उन्हें देख कर वोह काम करता है। इस हवाले से कुछ मश्वरे तहरीर किए जा रहे हैं जो आप के ख़्वाबों को शर्मिन्दए ताबीर करने में Helpful साबित होंगे।

वालिदैन मुस्तक़िल मिज़ाजी अपनाएं !

वालिदैन अपनी औलाद के लिए रोल मॉडल होते हैं और बच्चे उन के मामूलात को देख कर उन्हें कॉपी करते हैं। अगर आप अपने रोज़ाना के मामूलात में नमाज़ और दीगर इबादात को शामिल रखेंगे तो बच्चे भी आप की देखा देखी उन नेक कामों को करना शुरूअ कर देंगे।

नमाज़ के लिए चुस्ती का इज़हार करें

जब भी नमाज़ का वक़्त हो जाए तो वालिद को चाहिए कि सब काम छोड़ कर खुशी खुशी मस्जिद को जाए और वालिदा भी वुज़ू कर के नमाज़ के लिए खड़ी हो जाए इस तरह बच्चों को नमाज़ की अहमिय्यत मालूम होगी और वोह भी उसी जोश और जज़्बे से नमाज़ पढ़ेंगे, अगर उन के सामने तबीअत की ख़राबी या महज़ सुस्ती का इज़हार करेंगे उन की भी ऐसी आदत बन जाएगी।

इबादत का माहौल बनाएं

बच्चों में इबादत की रग़बत पैदा करने के लिए घर में एक ऐसी जगह ख़ास कर लें जहां आप रोज़ाना नमाज़, तिलावते कुरआन और ज़िक्रो दुरूद वग़ैरा का मामूल बनाएं और बच्चों को भी अपने साथ बिठाएं इस तरह भी बच्चों के अन्दर इबादत का शौक़ पैदा होगा। घर में वक़्तन फ़ वक़्तन खुद नात व तिलावत पढ़ने या अच्छी आवाज़ में सुनने का माहौल बनाएं कि इस से भी बच्चों में मज़हबी रुज्हान पैदा होगा।

किताबें, बयानात और नेक लोगों के वाक़िआत

इबादत का शौक़ दिलाने के लिए बच्चों की उम्र के मुताबिक़ उन्हें इबादत की फ़ज़ीलत और अहमिय्यत पर किताबें पढ़ने को दें और सहीहुल अक़ीदा आलिमे दीन के बयानात और इस्लामिक वीडियोज़ दिखाएं।

बच्चे कहानियां बड़े शौक़ और दिलचस्पी से सुनते हैं, उन्हें उन के ज़ेहन के मुताबिक़ बुज़ुर्गों की इबादत व रियाज़त के वाक़िआत सुनाएं और उन इबादात पर मिलने वाले

इन्आ़मात बताएं इस से भी उन के अन्दर ज़ौक़े इबादत पैदा होगा।

तफ़रीह़ के लिए दीनी सर गर्मियां

बच्चों के साथ खेल खेल में ड्रोइंग या ऐसी दस्तकारी बनाएं जिस का तअ़ल्लुक़ इबादत से हो जैसे मस्जिद, क़ुरआने पाक, किताब, तस्बीह़ वग़ैरा चीज़ों की तस्वीर बनाएं।

नमाज़ों की मालूमात

इबादात को रोज़ मर्रा के मामूलात में भी शामिल करें, बच्चों में नमाज़ की अहमिय्यत पैदा करने के लिए नमाज़ों के नाम और उन के औक़ात बताएं कि किस वक़्त में कौन सी नमाज़ पढ़ी जाती है, रक्अ़तों की तादाद बताएं और येह भी बताएं कि किस नमाज़ में कितनी रक्अ़त फ़र्ज़ हैं, कितनी वाजिब और सुन्नतें और नवाफ़िल कितने हैं।

खाने के वक़्त की आ़दात

खाने से पहले ख़ुद भी हाथ धोएं और बच्चों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं और जब खाना खाने बैठें तो सुन्नत के मुताबिक़ बैठें, बिस्मिल्लाह और खाने की दुआ़ पढ़ें, खाने से फ़ारिग़ हो कर अल्लाह पाक का शुक्र अदा करें ताकि आप को देख कर बच्चों में भी येह शुऊ़र पैदा हो।

बच्चों के साथ मज़हबी तक़रीबात में शिर्कत करें

बच्चों को मज़हबी महाफ़िल, इज्तिमाआ़त और तक़रीबात में अपने साथ ले कर जाएं ताकि वोह उन दीनी तक़रीबात का अपनी आंखों से मुशाहदा कर सकें और इस के असर को समझ कर क़बूल भी कर सकें।

इसी त़रह़ जब भी बच्चों की मज़हबी तात़ीलात हों मसलन ईदैन, 12 रबीउ़ल अव्वल, मोह़र्रमुल ह़राम वग़ैरा की मुनासिबत से बच्चों को उन दिनों की मालूमात फ़राहम करें और उन दिनों को मनाने के त़रीक़े बताएं और उन में होने वाले ख़िलाफ़े शरीअ़त कामों की निशानदही कर के उस की मज़म्मत बयान करें ताकि बच्चों के ज़ेहनों में इस्लाम की सह़ीह़ मालूमात रासिख़ हो सके।

ह़ौसला अफ़ज़ाई करें

आप का बच्चा या बच्ची किसी दिन अपनी किसी इबादत का ज़िक्र करे मसलन मैं ने आज इतनी बार दुरूद शरीफ़ पढ़ा। मैं ने छींक आने पार اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहा, घर में दाख़िल हुवा तो सब को सलाम किया, सीढ़ियों पर चढ़ते हुए اَللّٰهُ اَكْبَر और उतरते वक़्त سُبْحٰنَ اللّٰه कहा तो आप इन कामों पर उन की ह़ौसला अफ़ज़ाई करें, शाबाशी दें अगर हो सके तो कोई तोह़फ़ा भी दे दें, आप के इस अ़मल से बच्चे को ख़ुशी होगी और वोह आहिस्ता आहिस्ता उन कामों को अपनी आ़दत में शामिल कर लेगा।

नीज़ बच्चों के ज़ेहन में सैंकड़ों सुवालात भी पैदा होते हैं चाहे वोह मुआ़शरती मस्अला हो या मज़हबी, वालिदैन को चाहिए कि पूरी तवज्जोह के साथ उन का सुवाल सुनें और उन के ज़ेहन के मुताबिक़ ह़िक्मत के साथ उन्हें तशफ़्फ़ी बख़्श जवाब भी दें।

बच्चों के सामने भी शुक्र अदा करें

अच्छा खाने, अच्छा कपड़ा पहनने या कोई भी ख़ुशी या नेमत मिलने पर बच्चों के सामने अल्लाह पाक का शुक्र अदा करने की आ़दत बनाएं और उन्हें येह भी बताएं कि हम जिस क़दर अल्लाह पाक की नेमतों का शुक्र अदा करेंगे नेमतों में उतना ही इज़ाफ़ा होता रहेगा इस त़रह़ उन्हें भी शुक्र की तरग़ीब मिलेगी।

बच्चों के दोस्तों पर नज़र रखें

सोह़बत अच्छी हो या बुरी अपना असर छोड़ती है लिहाज़ा बच्चों की सोह़बत किस त़रह़ के बच्चों के साथ है उस का जाइज़ा लें और उन्हें अच्छे और मज़हबी माह़ौल वाले बच्चों के साथ उठने बैठने के मवाक़ेअ़ फ़राहम करें और ऐसी सोह़बत के फ़ाइदे भी बताएं।

नर्म रहनुमाई Gentle Guidance

बच्चों का एक मस्अला येह होता है कि वोह किसी चीज़ से जल्दी मुतअस्सिर हो जाते हैं और अपने बड़ों से ज़िद कर के उसे ह़ासिल भी कर लेते हैं मगर कुछ ही वक़्त बाद वोह उसी चीज़ से उक्ता भी जाते हैं, तो ऐसे मौक़अ़ पर वालिदैन को ह़िक्मते अ़मली और बरदाश्त से काम लेना चाहिए और अगर वोह चीज़ बच्चों के फ़ाइदे की है और वोह उसे ख़रीदने की इस्तित़ाअ़त भी रखते हैं तो उन्हें ले दें वरना अगर कोई नुक़्सान वाली चीज़ है तो प्यार मह़ब्बत से उस के नुक़्सान बता कर बच्चों की ज़ेहन साज़ी कर दें।

क़ारेईन ! हम ने कोशिश की है कि बच्चों को एक अच्छा दीनदार इन्सान बनाने के ह़वाले से वालिदैन किस किस अन्दाज़ में उन की तरबियत कर सकते हैं। अल्लाह पाक हमें अपनी औलाद की दीनी और दुन्यावी एतिबार से अच्छे अन्दाज़ में तरबियत करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और हमारे बच्चों को नेक नमाज़ी आ़शिक़े रसूल बनाए। आमीन

दरिया के पार

सर बिलाल आज का सबक़ व्हाइट बोर्ड के ज़रीए बच्चों को अच्छे से समझा चुके थे अब बस रीडिंग बाक़ी थी तो सर ने बच्चों की तरफ़ देखते हुए पूछा : आज कौन रीडिंग करेगा ? काफ़ी सारे बच्चों ने हाथ खड़े कर दिए फिर सर ने दूसरी क़तार में बैठे एक बच्चे की तरफ़ देखते हुए कहा : कामरान बेटा चलें आप रीडिंग करें, काफ़ी दिन हो गए आप से नहीं सुनी। इतना कह कर सर किताब की तरफ़ मुतवज्जेह हो गए, काफ़ी लम्हात गुज़र गए लेकिन कामरान ने सबक़ पढ़ना शुरूअ न किया, सर ने देखा तो कामरान और उस के साथ बैठे बच्चे अ़ली रज़ा के दरमियान किसी बात पर तकरार हो रही है, क्या बात है कामरान बेटा ! आप पढ़ना नहीं चाह रहे या अ़ली रज़ा आप को पढ़ने नहीं दे रहे, सर बिलाल ने मुस्कुराते हुए कहा।

कामरान : सर अ़ली भाई मुझे किताब नहीं दे रहे।

अ़ली रज़ा : सर मेरी किताब है, कामरान अपनी किताब लाते नहीं हैं।

कामरान : सर मेरी किताब गुम हो गई है।

सर बिलाल : चलें बच्चो ! ख़त्म करें बह़स, अ़ली बेटा कामरान के साथ किताब शेर कर लें, क्या आप ने अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वोह प्यारी ह़दीस नहीं सुनी कि अल्लाह पाक बन्दे की मदद करता रहता है जब तक बन्दा अपने भाई की मदद में लगा रहता है।

(مسلم، ص 1110، حدیث: 6853)

कामरान ने सबक़ ख़त्म किया तो अभी पीरियड ख़त्म होने में कुछ वक़्त बाक़ी था, क्लास मॉनीटर मुआ़विया कहने लगे : सर जी आज कोई वाक़िआ़ ही सुना दें।

अच्छा बच्चो बताएं कि येह कौन सा इस्लामी महीना जारी है ? सर बिलाल ने कलाई पर बंधी घड़ी में टाइम देखते हुए पूछा।

दो तीन बच्चों के इ़लावा किसी ने हाथ खड़ा न किया फिर सर के इशारे पर उन में से एक बच्चे ने जवाब दिया : सर अभी रबीउ़ल आख़िर का इस्लामी महीना है।

सर बिलाल : शाबाश । बच्चो ! जिस त़रह़ हर इस्लामी महीने में हम मुसलमान किसी न किसी बुज़ुर्ग की याद मनाते हैं यूंही रबीउ़ल आख़िर को देखा जाए तो इस में हम शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को याद करते हैं।

मुआ़विया : सर वोही शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी जिन का डाकूओं के सामने बहादुरी से सच बोलने वाला वाक़िआ़ मश्हूर है।

सर बिलाल : जी जी बेटा वोही शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी, जिन्हें हम ग्यारहवीं वाले पीर भी कहते हैं और शहन्शाहे बग़्दाद भी कहते हैं। हमारे शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه में बे शुमार ख़ूबियां थीं, अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत, इबादत का ज़ौक़, इ़ल्म का शौक़ होने के साथ साथ आप की एक अहम ख़ूबी पता है क्या थी : सख़ावत यानी Generosity, आप ख़ुद फ़रमाया करते थे कि मेरे हाथ में पैसा नहीं ठहरता, अगर सुब्ह़ को मेरे पास हज़ार दीनार आएं तो शाम तक उन में से एक

भी पैसा न बचे। (قلائد الجواہر، ص8ملخصًا)

यानी शाम तक सारे पैसे ज़रूरत मन्दों की ज़रूरतें पूरी करने में ख़र्च हो जाएंगे।

कामरान : सर येह दीनार क्या होता है?

सर बिलाल : बेटा जैसे अब हमारी काग़ज़ की करन्सी होती है नां तो पहले सोने और चांदी के सिक्के लोग ख़रीदो फ़रोख़्त के लिए करन्सी के तौर पर इस्तिमाल करते थे, चांदी के सिक्कों को दिरहम और सोने के सिक्कों को दीनार कहते थे। चलें अब शैख़ की सख़ावत का अनोखा वाक़िआ सुनें : इराक़ में एक दरिया है दरियाए दजला, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के दौर में भी लोग दरिया पार करने के लिए कश्ती इस्तिमाल किया करते थे तो एक बार आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक शख़्स को कुछ परेशान और ग़मगीन (Sad) देख कर उस का हाल पूछा तो उस ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर वाला! दरियाए दजला के पार जाना (cross करना) चाहता हूं मगर मल्लाह (Sailor) ने बिग़ैर किराए के कश्ती में नहीं बिठाया और मेरे पास किराया देने कलिए कुछ भी पैसे नहीं। उसी दौरान हुज़ूर ग़ौसे पाक के किसी अ़क़ीदत मन्द ने तीस दीनार आप को तोहफ़े में दिए तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने तीस के तीस दीनार उस शख़्स को दे दिए और फ़रमाया : जाओ! येह उस मल्लाह को दे देना और कह देना कि आइन्दा वोह किसी भी ग़रीब को दरिया पार पहुंचाने से इन्कार न करे। (اخبار الاخیار، ص18) बच्चों की ख़ामोशी देख कर सर कहने लगे : लगता है आप को बात समझ नहीं आई, अरे बच्चो उस वक़्त कश्ती का किराया एक से दो दीनार होता था ऐसे में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पूरे तीस दीनार दे दिए थे उसे। येह सुन कर बच्चों के "سُبْحٰنَ اللّٰه" कहने से क्लास रूम गूंज उठा, सर ने घड़ी देखी और अपनी बात ख़त्म करते हुए कहा : बच्चो हम अपने बुज़ुर्गों की तरह नहीं तो कम अज़ कम अपनी ताक़त के मुताबिक़ ज़रूर दूसरों की मदद करें।

बच्चों और बच्चियों के 6 नाम

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आदमी सब से पहला तोहफ़ा अपने बच्चे को नाम का देता है लिहाज़ा उसे चाहिए कि उस का नाम अच्छा रखे। (جمع الجوامع، 3/285، حدیث:8875) यहां बच्चों और बच्चियों के लिए 6 नाम, उन के माना और निस्बतें पेश की जा रही हैं।

बच्चों के 3 नाम

नाम	पुकारने के लिए	माना	निस्बत
मुहम्मद	अ़ब्दुर्रहीम	रहमत वाले का बन्दा	अल्लाह पाक के सिफ़ाती नाम की तरफ़ लफ़्ज़ "अ़ब्द" की इज़ाफ़त के साथ
मुहम्मद	हनीफ़	इस्लाम पर साबित क़दम	सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सिफ़ाती नाम
मुहम्मद	सुहैल	नर्म बरताव करने वाला	सहाबिए रसूल का नाम

बच्चियों के 3 नाम

उमय्या	छोटी कनीज़	सहाबिय्या رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا का बा बरकत नाम
सुअ़दा	मुबारक, ख़ुश बख़्ती	सहाबिय्या رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا का बा बरकत नाम
बर्दह	कनीज़	ताबेई बुज़ुर्ग सय्यिदुना जाफ़र बिन बुरक़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की वालिदा का नाम

(जिन के हां बेटे या बेटी की विलादत हो वोह चाहें तो इन निस्बत वाले 6 नामों में से कोई एक नाम रख लें।)

बेटियों को सालिहात की सीरत पढ़ाएं

तारीख़ के औराक़ में हमेशा ज़िन्दा व जावेद वोही क़ौमें कहलाती हैं जिन का तअ़ल्लुक़ अपने अस्लाफ़ से मज़बूत होता है, ऐसी क़ौमें हर मुआ़मले में अपने अस्लाफ़ से राहनुमाई लेती नज़र आती हैं। प्यारी इस्लामी बहनो ! ब हैसिय्यते मुस्लिम क़ौम हमें चाहिए कि अपने बुज़ुर्गों बिल ख़ुसूस बुज़ुर्ग ख़वातीन (सहाबिय्यात व सालिहात) के दामन से वाबस्ता रहें और उन की सीरत से राहनुमाई ह़ासिल करती रहें, اَلْحَمْدُلِلّٰه ! हमारी बुज़ुर्ग ख़वातीन ने इख़्लास व लिल्लाहियत, तक़्वा व त़हारत, इस्लाम की ख़ातिर सर फ़रोशी और रिज़ाए इलाही पर रिज़ा मन्दी वग़ैरा के वाक़िआ़त पर मब्नी ऐसे अनोखे, हैरत अंगेज़ और क़ाबिले फ़ख़्र कारहाए नुमायां अन्जाम दिए हैं जो तारीख़ के सफ़ह़ात की ज़ीनत भी हैं और राहे अ़मल में मुसलमान ख़वातीन के लिए दावते अ़मल भी। अगर हम उन के नक़्शे क़दम पर चलेंगी तो हमारी ज़ात क़ाबिले मलामत नहीं बल्कि बाइ़से फ़ख़्र होगी। हमें चाहिए कि हम अपनी बेटियों को सहाबिय्यात व सालिहात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ की सीरत पढ़ाएं, रात सोते वक़्त शहज़ादियों और परियों की मन घड़त कहानियां सुनाने के बजाए इस्लाम की ह़क़ीक़ी शहज़ादियों के वाक़िआ़त सुनाएं, उन का तआ़रुफ़ करवाएं, उन्हें सिखाएं कि दीन के अह़काम पर अ़मल कैसे करना है ? इ़बादत कैसे करनी है ? रिश्तों को कैसे निभाना है ? मुसीबत पर सब्र कैसे करना है ? ज़रूरत पड़ने पर अपनी, अपने घर वालों की ह़िफ़ाज़त व कफ़ालत कैसे करनी है ? दीन, दुन्या को कैसे एक साथ ले कर चलना है ? इस के लिए हमें तय्यारी करनी पड़ेगी, अपनी बेटियों के दिलों में सहाबिय्यात व सालिहात की सीरत रासिख़ करनी है उन्हें आईडियल बनाना है, ताकि ज़िन्दगी के जिस मोड़ पर भी बेटी घबराए, डगमगाए तो सीरते सालिह़ात से मदद ह़ासिल करे। याद रखिए ! मिट्टी का खिलौना उसी वक़्त अच्छा और ख़ूबसूरत बन सकता है जब मिट्टी कच्ची हो और बनाने वाला उस काम में माहिर हो मिट्टी सूखने और पक्की हो जाने के बाद उस खिलौने में कोई तब्दीली नहीं की जाती और अगर कोशिश की जाएगी तो खिलौना टूट जाता है, बचपन भी ऐसा ही नर्म दौर है कि उस में औलाद की जैसे तरबियत की जाए और जैसी आ़दतें डाली जाएं तो औलाद बड़े हो कर वैसी

ही निकलती है लिहाज़ा तरबियत का सहीह़ वक़्त बचपन ही है अभी से बच्चियों को येह बताएं कि ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا मस्जिदे बैत (घरेलू मस्जिद) के मेह़राब में सारी सारी रात नमाज़ पढ़ती रहतीं यहां तक कि सुब्ह़ तुलूअ़ हो जाती ।[1] ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रोज़ाना बिला नाग़ा नमाज़े तहज्जुद पढ़ा करती थीं[2] बसा औक़ात इस कसरत से (लगातार) रोज़े रखने लगतीं कि कमज़ोर हो जातीं ।[3] ह़ज़रते ह़ौला बिन्ते तुवैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا सारी सारी रात नमाज़ पढ़ने में गुज़ार देती थीं ।[4] ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के मुतअ़ल्लिक़ है कि फ़राइज़ के इ़लावा भी कसरत से (नफ़्ल) नमाज़ का एहतिमाम फ़रमाया करतीं । बाज़ सह़ाबिय्यात का येह मामूल रहा कि जब उन्हें कोई ख़ुशी की बात पहुंचती शुक्राने के तौ़र पर इ़बादते इलाही बजा लातीं, जैसा कि ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से निकाह़ की ख़ुशी में सदक़ा व ख़ैरात के साथ साथ कसीर रोज़ों का एहतिमाम भी फ़रमाया।[5]

बच्चियों को येह भी सिखाएं कि सह़ाबिय्यात व सालिह़ात का सब्र भी बड़े कमाल का था ह़ज़रते ह़म्ना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने एक ही वक़्त में आपने ख़ालू, भाई और शौहर (ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर) की शहादत की ख़बर सुन कर सब्र कर लिया था, उम्मे शरीक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को अहले मक्का बांध कर धूप में डाल देते और खाने पीने को भी कुछ न देते, तीन दिन तक इस तक्लीफ़ पर वोह सब्र करती रहीं, ह़ज़रते अस्मा बिन्ते अबू बक्र को अबू जहल ने राज़े मुस्तफ़ा न बताने पर ज़ोरदार त़मांचा मारा जिस से उन के कान की बाली दूर जा गिरी, मगर उन्हों ने राज़ न बताया। ह़ज़रते सुमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا वोह पहली शेर दिल ख़ातून हैं जिन्हों ने अपने मुसलमान होने का वाज़ेह़ एलान किया और बहुत सख़्तियां झेलीं, ह़ज़रते सुमय्या को लोहे की ज़िरह पहना कर सख़्त धूप में खड़ा कर दिया जाता था यहां तक कि अबू जहल ने उन को शहीद कर दिया।

इस्लामी बहनो ! तब्लीग़े दीने इस्लाम यानी नेकी की दावत को आ़म करने के लिए सह़ाबिय्यात का किरदार अगर देखा जाए तो इस मैदान में भी सह़ाबिय्यात पीछे न रहीं, बल्कि कई जलीलुल क़द्र सह़ाबा उन्ही सह़ाबिय्यात की इन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे में इस्लाम लाए। मसलन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी बहन की इन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे में ईमान लाए, इसी त़रह़ ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की नेकी की दावत से मुतअस्सिर हो कर दामने मुस्त़फ़ा को थामा । इसी त़रह़ इ़ल्म के मैदान में भी सह़ाबिय्यात पीछे न हटीं, अपनी घरेलू मसरूफ़िय्यात को आड़ न बनाया बल्कि सह़ाबिय्यात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ के दिलों में येह ख़्वाहिश शदीद अंगड़ाइयां लेने लगी कि उन के लिए भी ऐसी मह़ाफ़िल मुन्अ़क़िद होनी चाहिएं जिन में सिर्फ़ और सिर्फ़ इन्ही की तालीमो तरबियत का एहतिमाम हो । एक सह़ाबिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर बा क़ाइदा अ़र्ज़ की कि उन के लिए भी कुछ वक़्त ख़ास होना चाहिए जिस में वोह दीन की बातें सीख सकें । चुनान्चे आप ने उन्हें मख़्सूस जगह पर मख़्सूस दिन जम्अ़ होने का हुक्म इरशाद फ़रमाया ।[6] येह इस्लाम की बेहतरीन ख़वातीन के चन्द औसाफ़ ज़िक्र किए गए हैं । अपनी बेटियों को सह़ाबिय्यात व सालिह़ात की सीरत तफ़्सील से पढ़ाने के लिए दावते इस्लामी के शोबे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की जानिब से बेहतरीन किताब बनाम **''सह़ाबिय्यात व सालिह़ात के आला औसाफ़''** शाएअ़ की गई है इस किताब को हम ख़ुद भी पढ़ें और अपनी बेटियों को भी पढ़ाएं इस का नतीजा अपनी आंखों से आप ख़ुद देखेंगी। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْن दावते इस्लामी के इस्लामी बहनों के इज्तिमाआ़त में शिर्कत कर के भी अपनी तरबियत का सामान किया जा सकता है अपने आप को गुनाहों से बचाया जा सकता है।

اِنْ شَآءَ اللّٰہ الْکَرِیْم

(1) مدارج النبوت، 2/461 (2) دیکھئے: سیرتِ مصطفٰی، ص660 (3) حلیۃ الاولیاء، 2/57، رقم:1469 (4) مسلم، ص284، حدیث:785 (5) دیکھئے: سیرتِ مصطفٰی، ص670 (6) بخاری، ص1769، حدیث:7310 مفہوماً۔

इस्लामी बहनों के शरई मसाइल

मख़्सूस अय्याम में निकाह़ और कलिमा पढ़ने का हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस बारे में कि (1) क्या हैज़ की ह़ालत में निकाह़ हो जाता है ? (2) हमारे हां दुल्हन को भी कलिमे पढ़ाए जाते हैं, तो क्या औ़रत उस ह़ालत में कलिमे पढ़ सकती है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

(1) निकाह़ दो गवाहों (यानी दो मर्द या एक मर्द और दो औ़रतों) की मौजूदगी में मर्द व औ़रत के निकाह़ के लिए ईजाबो क़बूल करने का नाम है, इस में औ़रत का निस्वानी अ़वारिज़ से पाक होना शर्त़ नहीं, लिहाज़ा (दीगर शराइत़ की मौजूदगी में) ह़ालते हैज़ में भी निकाह़ मुन्अ़क़िद हो जाएगा । लेकिन येह याद रहे कि ह़ालते हैज़ में औ़रत से जिमाअ़ करना ह़राम है, बल्कि उस ह़ालत में औ़रत की नाफ़ के नीचे से ले कर घुटनों तक के ह़िस्सए बदन को बिला ह़ाइल छूना और उस की त़रफ़ शहवत के साथ नज़र करना भी जाइज़ नहीं, हां उस ह़िस्से से ऊपर और नीचे के बदन से मुत़लक़न हर क़िस्म का इन्तिफ़ाअ़ जाइज़ है, लिहाज़ा अगर अय्यामे मख़्सूसा में निकाह़ व रुख़्सती हो तो मज़कूरा हुक्म का बत़ौरे ख़ास ख़याल रखा जाए ।

(2) औ़रत को ह़ालते हैज़ में क़ुरआने पाक की तिलावत करना ह़राम है, इस के इ़लावा ज़िक्रो अज़कार, कलिमे और दुरूद शरीफ़ वग़ैरा पढ़ना जाइज़ है, बल्कि वोह आयात भी जो ज़िक्र व सना और मुनाजात व दुआ़ पर मुश्तमिल हों उन्हें तिलावत की निय्यत किए बिग़ैर ज़िक्रो दुआ़ की निय्यत से पढ़ सकती है, कलिमों में से बाज़ अगर्चे क़ुरआनी कलिमात पर मुश्तमिल हैं, लेकिन येह बिग़ैर निय्यते तिलावत बत़ौरे ज़िक्र ही पढ़े जाते हैं, लिहाज़ा औ़रत मख़्सूस अय्याम में कलिमे पढ़ सकती है, अलबत्ता बेहतर है कि उन्हें वुज़ू या कुल्ली कर के पढ़ा जाए ।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہ اَعْلَم صلَّی اللہُ تعالٰی علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

मख़्सूस अय्याम और रोज़े का एक मस्अला

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि हमें येह मस्अला तो मालूम है कि अगर औ़रत को रोज़े की ह़ालत में हैज़ आ जाए तो उस का रोज़ा टूट जाता है और अब वोह खा, पी सकती है । अलबत्ता बेहतर येह है कि छुप कर खाए और ऐसी औ़रत पर रोज़ेदारों की त़रह़ भूका प्यासा रहना ज़रूरी नहीं । आप से मालूम येह करना था कि वोह औ़रत जो रमज़ान के किसी दिन में तुलूए़ फ़ज्र के बाद पाक हो जाए तो उस दिन का बक़िय्या ह़िस्सा उस को रोज़ेदारों की त़रह़ गुज़ारना ज़रूरी है या नहीं ? इस बारे में रहनुमाई फ़रमा दें ।

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जो औ़रत रमज़ान के किसी दिन में तुलूए़ फ़ज्र के बाद पाक हो जाए तो उस दिन का बिक़य्या ह़िस्सा उस को रोज़ेदारों की त़रह़ गुज़ारना वाजिब है क्यूंकि क़वानीने शरीअ़त की रू से हर वोह शख़्स जिस के लिए दिन के अव्वल वक़्त में रमज़ान का रोज़ा रखने में उ़ज़्र हो और फिर वोह उ़ज़्र दिन में किसी वक़्त ज़ाइल हो जाए और अब उस की ह़ालत ऐसी हो कि अव्वल वक़्त में होती तो उस पर रोज़ा रखना फ़र्ज़ होता तो ऐसे शख़्स पर रोज़ेदारों की त़रह़ रहना वाजिब होता है ।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہ اَعْلَم صلَّی اللہُ تعالٰی علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

रबीउ़ल आख़िर के चन्द अहम वाक़िआ़त

तारीख़/माह/सिन	नाम/वाक़िआ़	मज़ीद मालूमात के लिए पढ़िए
6 रबीउ़ल आख़िर 1370 हिजरी	यौमे विसाल ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत, फ़क़ीहे आज़म मुह़म्मद शरीफ़ मुह़द्दिसे कोटलवी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1439 हिजरी
11 रबीउ़ल आख़िर 561 हिजरी	यौमे उ़र्स ग़ौसे आज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1438 ता 1445 हिजरी और **"ग़ौसे पाक के ह़ालात"**
17 रबीउ़ल आख़िर 701 हिजरी	यौमे विसाल वलिए कामिल ह़ज़रते सय्यिद मुह़म्मद शाह दूल्हा सब्ज़वारी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1439 हिजरी
18 रबीउ़ल आख़िर 725 हिजरी	यौमे विसाल सुल्त़ानुल मशाइख़ ह़ज़रते ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1439 हिजरी
21 रबीउ़ल आख़िर 1252 हिजरी	यौमे विसाल ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद अमीन इब्ने आ़बिदीन शामी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1439 हिजरी
25 रबीउ़ल आख़िर 1046 हिजरी	यौमे विसाल क़ुत़्बे आ़लम ह़ज़रत सय्यिद आ़लम शाह बुख़ारी सोहरवर्दी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1441 हिजरी
29 रबीउ़ल आख़िर 627 हिजरी	यौमे विसाल सूफ़ी बुज़ुर्ग ह़ज़रते शैख़ फ़रीदुद्दीन मुह़म्मद अ़त्त़ार رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1441 हिजरी
रबीउ़ल आख़िर 4 हिजरी	विसाले मुबारका उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते बीबी ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1438, 1439 हिजरी और **"फ़ैज़ाने उम्महातुल मोमिनीन"**
रबीउ़ल आख़िर 6 हिजरी	शोहदाए सरिय्यए मुह़म्मद बिन मस्लमा रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने 10 सह़ाबए किराम को ज़ुल क़ुस्सा के क़बाइल की सरकोबी के लिए भेजा उस सरिय्यए में अक्सर सह़ाबा शहीद हुए।	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1442 हिजरी

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

इस महीने की मुनासिबत से इन रसाइल का मुत़ालआ़ कीजिए :

दो झूट

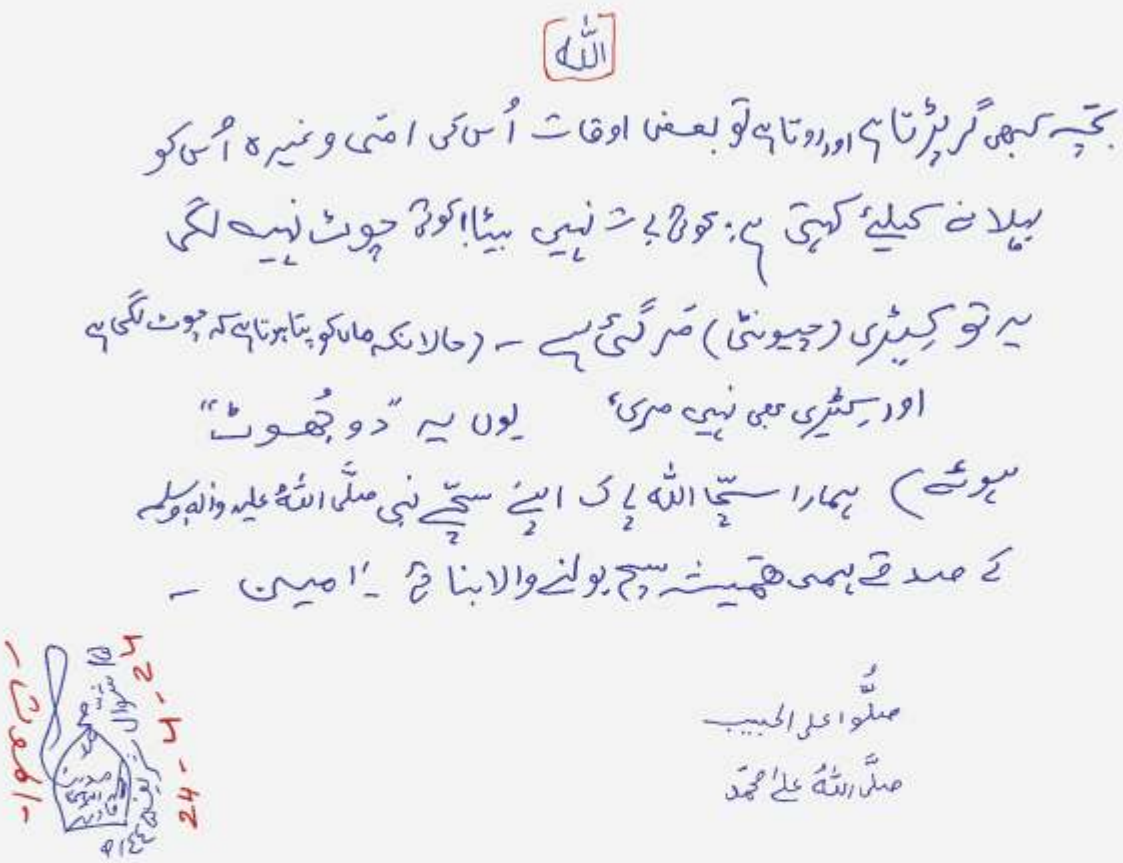

बच्चा कभी गिर पड़ता है और रोता है तो बाज़ औक़ात उस की अम्मी वग़ैरा उस को बहलाने के लिए कहती है : कोई बात नहीं बेटा ! कोई चोट नहीं लगी येह तो कीड़ी (च्यूंटी) मर गई है। (ह़ालांकि मां को पता होता है कि चोट लगी है और कीड़ी भी नहीं मरी, यूं येह "दो झूट" हुए) हमारा सच्चा अल्लाह पाक अपने सच्चे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े हमें हमेशा सच बोलने वाला बनाए। आमीन

मक्तबतुल मदीना की क़िताबें घर बैठे ह़ासिल करने के लिए इस नम्बर
9978626025 पर Call SMS WhatsApp करें

दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी इन्डिया का साथ दीजिए और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर मदनी अ़त़िय्यात (Donation) के ज़रीए माली तआ़वुन कीजिए !

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाही (Reformatory), फ़लाही (Welfare) ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है

PRINTER, PUBLISHER, EDITOR AND OWNER
HAMJANI SHABBIRBHAI RAJAKBHAI - BUTVALA'S CHAWL, NR. CENTRAL WARE HOUSE, DANILIMDA, AHMEDABAD - 380028. (GUJARAT)
PLACE OF PRINTING : MODERN ART PRINTERS - OPP : PATEL TEA STALL, DABGARWAD NAKA, DARIYAPUR, AHMEDABAD - 380001.
PLACE OF PUBLICATION : BUTVALA'S CHAWL, NR. CENTRAL WARE HOUSE, DANILIMDA, AHMEDABAD-380028. (GUJARAT) INDIA.